वदासः भोदुबारेत्राचः भागेन बाध्यसः गंगा-पुरनकमासा-कार्यासयः साम्यस्यः

केट्रीट्रिके मृतक भीदुकारेकाक मार्गक बाध्यक्त संगा-ताइनकार्ट-प्रेस साध्यक्त संगा-ताइनकार्ट-प्रेस

भृमिका 'साहित्य' .

चेंगरेजी-भाषा में वक प्रसिद्ध बहावस है 'Necessity is the mother of invention', सर्वात् सावस्थकता सावित्कार की कार्ती है। विसी भी सुनंबटित इतिहास-प्रसिद्ध सभ्य समाज के भाष्यात्मिक जीवन को सरस बनाए रखने के जिये उचकोटि के साहित्य की कावश्यकता होती है। हमारे प्रशतन और समस्त माधुनिक शासकारों को इस सारगणित शब्द 'साहिता' के निपष में किसी प्रकार का संदेह नहीं था, बीर न है। असपूत इसकी परिमापा (Definition) की सीमा में बाँच देने का बच्चोंने बभी प्रपत्न तक नहीं किया और राज्यार्थ से समष्टि, एकत्रता, सद्वापता का आव इत्यादि का बोध होने पर भी साहित्य शब्द के पर्याय में भाज तक, काव्य, विचा, शास, शास-समूह, पुश्तक-समूह, द्रस्वादि व्यापक क्षणीं का निरसंक्षीण प्रयोग होता शाया है।

चैंगरेती-भाषा में हम देखते हैं कि इस शब्द की माय-व्यासि की प्रयक् प्रयक् विज्ञानों ने प्रथक्-पृथक् वरिभाषाओं में सीमानद्ध करने की चेष्टाएँ की हैं, परंतु पथे। सफलताजन्य एकमत मात्र तक नहीं हो सदा है। कई कहते हैं, Literature is criticism of life (Arnold) कर्यांत् साहित्य मानव-जीवन की आसीचना है, और बास्तव में यह बाल भी कई कंशों में शत्य है । मानव-विचारी का एक पर्म अपने जीवन के मार्वों की बास्तोचना करना भी है। बास्तव में साहित्य में सत्य श्रीर शहमनीव प्रवायंता (Sincerity)

का जिसको कि कारबाइक महोदय ने सक्ते माहित्य का सबसे सचा और खरा गुथ माना है, धब तक मन्द्रक समावेश नहीं हो सक्ता, जब तक मानव-विचार-रहनियों का बाने जावन-कृषी के साथ घनिए संबंध स्थापित नहीं हो जाना। जब तक वे विचार-स्फ्रांतियाँ भएने भीवन पर शासाधक की दृष्टि से भाव मध्य कर करनी उनारेयता नहीं सिद्ध कर देती. तब तक उनकी स्पिति का कोई श्वामी प्रमाण नहीं माना जा सकता । चतरत वास्तविकता की इप्ति से साहित्य की व्यारवा व समीचा वो अवस्थ की जा सकती है, वरंत वह चप्ती है। देवस ''जीवन की प्राञ्जाचना'' से हा साहित्य-शास्त्र की स्थापि निर्दाशित नहीं की जा सकता । शब्द का चेत्र बीर भी विश्तृत है। एक दूसरे वाश्वाध्य विद्वान ने भाहित्य की स्थावया धीर ज्यादा बिल्लुन, परतु ता भी अपूर्ण रूपेया का है। बधा-Literature consists of the best thoughts of best persons reduced to writing," अपीत् सर्वेश्वेड पुरुषों के सर्वेश्वेड विकारों का खिविबद सहति की साहित्य कहते हैं । यह व्याक्या पुत्रपिकाहत कात्रय प्रपादा स्थापक है, परंतु वदि हम हमे एक बार मान भा स ता भा यह नहीं जान सकते कि साहित्यांतरीत 'सर्वे में ह विचारों' की विशेषना क्या है, और उनके उत्पादन के इस क्या है। सारोग, यह क्यान्या केनच मस्तिष्कापयोगी है, हृदयमाहियो नहीं। इसी तरह चन्यान्य विद्वानों ने भी इस गृहत् शब्द की स्याल्या करने की-नागर में मागर भर देने की-चेंश का है, परन सफबता कहाँ है

साहित्य-साध्य की क्यांति और असका विस्थानर

सामार्थिकार में जा स्थारिक को कारण पर उनका पर नेकर इमारे विचार में जा सारिक को सोमा उसी वकार निर्मारिक कहीं को साम इनो, नित्र मान मानक-विचार को संश्वास परमाप्या के मिलाव की। साहित्य मानक्वीवन के जाकूटना विचारों का समुग्रमंत्र, शिद्धां, सुरमाजिस्स्य, दिष्पर प्रकल, साहर्यं नाव है। वर्गोन जास के सिवी- सामसार भादर्श की क्यांसि निरसीम है ; यह मध्येक चया गमनशीज, उस्तिशील है : जब स्थवित नहीं । यह बादर्श स्ट्रिके बादिन्साल से मानव-विचारों का साथी रहा है। इसीबिवे 'साहित्य' कहजाता है शीर प्रविधीपांत भी उस चितशकि के साथ रहेगा. जिसका वर्षन भन्दरि ने इस चादितीय श्लोक में किया है---

> दिकालायनवस्तिषाऽनन्तांबन्भात्रमृतेये । स्थानुभूग्यैकमानाय नमः शान्ताय तेजस ।

हमारी तो यह भी दर चारवा है कि तहप तदगवानिवत होने के कारण सादित्व का सृष्टि-कर्ता की विभृतियों के लाग अभिनत्त का संबंध है। चलएव भन् देरि का बज्ज रक्षोक परमात्मन् शीर साहि-स्वारमन जगदीरवर दोनों की बाराधना के वर्ध में समान भाव से मञ्जूक ही सबता है।

साहित्य-यदि की कठिनाइयाँ

हमें यह प्रकट करते हुए करवंत हुये होता है कि हमारे हिंथी-साहित्य के व्यापक रूप को वार्तकृत चौर सुन्धाटित करने के खिये मालुभाषा-सेवकों थे प्रवत करना प्रारंभ कर दिया है, और दिन-प्रति-वित्र वे इस देव मंदिर को सर्वागसंबद्ध करने की भरतक खेला कर रहे हैं । देश सेवा, समाज सेवा, चीर ईश सेवा का इससे लेवतर कोई चन्य मार्ग नहीं हो सकता । परंतु जहाँ कई सदिचारप्रेशित मानु-भाषा के सबे सेवक शत-दिन अपनी आदर्श-सिद्धि के श्रमकार्थ में बने हुए हैं, नहीं कई एक दूसरे, शुद्धिश्चन, प्रतिनिविष्ठ थी. मिष्पायराजिप्सु और प्रतिशा-स्रोधी पुरुष श्रयनी बाक-स्वतंत्रता का दुरुपयोग कर ऐसे सक्त्री से श्राम-नार्यसंपादन में विकेष और बिग डाकने के किये भी उदात रहते हैं । पाय: देखा गया है कि इस प्रकार के विश्वेषकारी प्रकृप या तो हैवां-करा भारते भारते जन्म-प्रतिष्ठ सहित्य-सेवियों की उत्कृष्ट कृतियों का सारा सनुक्ष कर वेश गाँही की बेश कार है है, जिसमें है जिसे शादिक्य-गेरियों के कार्य के बाग पहली है, स्वयान दे जिस्साधिकारों होगा जन-सातान की समकता के हेनु वेचारे वार्य करोंदों के सूच्या-तिराप्ता पित्रों को सर्वकार के स्वयाधीरता कर निर्माण करना के समय प्रकार करते हैं, तथा सेशक की च्या-शोराताहियों, बागरे गृत-हरियों विशेषताओं को जिलाए कार्य है , जिसमें कि वर्षों हो बेचारे साहित्य-वेशों समया कवि की साता को दुरूब होता है, बीर कें च्याने कार्य में चक्कि चीर विशित्त होने सातानी है। चारवर्ष तो पढ़ है कि कश्वित चीर चयते दिवाहित को वस्त्रों म दिवाह सक्तेवाड़ा समाज पेने पति कार्यों को भी पताओं चक्के दे उस, गीरवर्षों वह चक्का कर रेगा है।

साहित्य अनुकरण का बांदानाय चाहरी

हमारे उपर्युक्त क्यान का यह आराण नहीं हैं कि स्तुक्त्य करना साहित्य को रहि से कोई गए है, अध्येष साहित्यक पाड़ोक्या करना कोई सो बात है। इसके विपरांत कानुकरण को हम माहित्य का एक काकुत साधन मानते हैं और साबोधना को साहित्य का एक अध्येष मार्ग भाँ तो हैका जाय, तो वित्य में माहित्य की वियति सानुक्याम आहित-वीद्य कीर मान्य-अहातिहीद्य का एक आभास-आज है। सांग, स्युक्त्यण एक पतिज्ञ कीर उपादेव स्तामा-तिक हृत्यि है। परीत साथनी-साथ वह माँ देवना है कि स्तुक्त्य का सानुष्योग करना ही हमारा कर्त्यण है। उत्तर हुएयोग करना नहीं। सीर, इसे तो क्षेत्रक मानुक्त्यण के दुक्तवीग के तित सादित है। स्त्री यह बात कि सदुश्युक्त अनुक्त्यण के परिशोधन करनेशां के सदुक्त बचा संतर है, यह तो साहित्य के परिशोधन करनेशां के सदुक्त स्वाक्तरण में बचा संतर है, यह तो साहित्य के परिशोधन करनेशां के सदुक्त स्वाक्तरण है के साध है। इसके जिये किसी प्रकार के नियम प्रयवा सूत्र न तो यते हैं, और न यन ही सकते हैं।

साहित्यिक भावायहरमा का दोपायहरमा

कुल्तित चनकरण के चवर्गत मानापहरण (Plagiarism) का शोध भी देशा जाता है। इससे भी साहित्य का बहुत शहित हो रहा है। साहित्य की चौरा वर्तमान हिंदी की सदस्था में एक साधारण व्यापार हो रहा है। उसके शवरोध के लिये हिंदी-साहित्य-शासक-संदर्श में चव तक कोई उपयुक्त न्यायालय भी व्यवश्थित नहीं हो जुका है। सलपुत क्षपहरश्यकराँकों का भी शसाह, इम श्रापेर को देखबर, बढ चला है सीर वे दिन-दहाड़े सामापहरता कर सालामाज हो रहे हैं । यही नहीं, बर्रामान हिंदी-जात में उन्हें अवती इस अवहरण दचता के लिये प्रतिहा-पुरस्कार की भी प्राप्ति होते देशी गई है। इस बुध्यवस्था को मिटाने के लिये सब्बे समालोक्सों की एक परिषद् (Academy of Literary Critics) की शावस्वकता है, जो निव्यक्त भाव से न्याय करती हुई यह निर्याय कर गर्क कि कामुक कानुकाया तो साहित्य के जिये कहितकर है, जो यथायें में किसी प्रतिष्ठित कवि की ईपाँवश चोरी कही जा सबती है। और बाहक चालकाश सहययक चनएव साहित्यक दित-संबर्भक है। इसी प्रकार वडी परिषद् भाशापहरक के दीप भी। गुर्की को भी पहचान कर यह शोपित कर सके कि चारक भावापहरण लो. केवज कवियों के सावों का अक्रमान साईजन्मना है धीर समझ भावापहरसा चोरी है। परंतु अब तक इस मकार की किसी मतिष्ठित कीर सम्मान्य परिवद का हिंदी-जरात में ब्राविधांत नहीं होता. तथ शक साहित्यात्वादनकार्य को सचा उत्साह नहीं मिल सकता और म त्रव तक हिंदी-साहित्य में किसी प्रकार की व्यवस्था ही स्थादित हो S fraux



का रवस्य है, कौर इसे उसकी इसी प्रकार प्रतिष्ठा कानी चाहिए।

शब्दे समाक्षीचकका दिव्य रूप इस उपर दिला युके। धन इम समास्रीचक द्वारा प्रवृक्त कारे प्रयोजनीय कई वृक्त साहित्य-सधनों की क्व बरेंगे । इसे बह प्रथम ही सत्यंत रोट के साथ कहना पहता है कि बाबी तक दिशी-साहित्य में बादमी समाखीयक का नितात चमान है। परिकासतः समाधीचना के विविध साधनों का विद्याद रूप में प्रयोग भी इस समय रहियोश्वर नहीं होता । जी नुषु बाजी-चना होती भी है या तो वह बाखंड कठीर वाम्याक-प्रहारों के रूप में की काती है, कल्यथा कतिशय प्रशंसा और चाटुकारिता से अरी होती है। बचार्य प्रशंका किया कवार्य जिला का तब कोर स्रोप-सर को गया जान वहता है।

कालीयमा के प्रकार

बादर्र समाक्षेत्रम के, भारतीय और शहकाय साहित्यकारों के मतानुमार, दो मोडे भेद किए का सकते हैं । युक्त को बारवार्य समा-कोचना, जिसके द्वारा किसी साहित्यकृति के मुख-सवयुक्षों का विवे-चन, यमार्थ और मांधे-सादे दंश से श्रष्ट बरांसा कथना निराकृति के रूप में दिया जाय । दूशरी कश्या-मूखक व्यंग्य-समाबोधना ६ पहची रपुर, रनष्ट, कक, सीधा-सादी, यथार्थ-मन्त्रीक ब्राव्हीचना है। बह सरझतवा चुदि गम्य है चादरम: शेषकता का उमने निर्वात समाप होता है। सर्थ **इ** मारे व और सदय

क्षवश दशer falle sares . रे) । शास्तव में

क्रोसीमून वर्षे

(11) हो सहता। समाबोधना भी रोचह वंग से की ना सहती है। भी रसात्मक बनाई जा सकती हैं। ऐसी समाजीवना इयादा द्वपना त्रपादा सनोरंजक, चलपुत विशेष कारव-गुरा-संपत्र होने के का साहित्य की प्रतेषाकृत क्वादा बहुमूचन, स्वाबी संपत्ति समा वा सकती है और पारवाण याहियों में घद भी समझी वाती है परंतु हिंदी-माहित्य में बाती तक इस साहित्यांन की रोपक काच्यायसंवत चीर हृदय-माडी बनाने के कोई पूर्विच्छ भी दिला

नहीं देने लागे हैं, इसका हमें लेह है। भागा है, समय-परिवर्णन के साथ यह कमी भी शीघ पूर्ण हो जायवी। रोवक धालीवना-शास

प्रकार-मेद मे दूसरी समाबोचना भी कई प्रकार की डोली है। हिंदी में इनका निर्मात बसाव होते के कारण इस विस्तृत सँगरेनी तथा सन्हतन्साहिए से बेन्द १४हे ध्यांत और शीति उद्गत करेंगे। चैंगरेती-लाहित्य में रोषद धाजीवना के चंतर्गन कहें भेड़ हैं। प्रया-(१) Faroo धर्यात् (महमन कथवा दुर्मोक्कित्र), (१') Burlosque (मांडं सपना माण), (३) Redioule (देवा), (४) Salire (बार्षेप), (१) Parody (धनुकासम् धापना अनुकार कारम्)। च्यान रहना चाहिए कि साम्रोचनर के इन रोवक साधन को वपने समय के सर्वधेष्ट बँगरेज्ञ-साडिधिक महारथियों ने चप नावा था, चौर हनके द्वारा ग्रहने साहित्य की बड़ी भेगा कर बसे परि-कृत शीर देवीप्यमान् बनाया या । सँगरेही-पश्च-श्रेसक-धिशीमणि बॉररर जानसन, चाएेप-काम के सर्वसंत्र खेलक कवित्रर योग, भारोगी-उपन्यास-साहित्य के जन्म-दाता फीविंडम महोदय, घाली-चक्-संष्ठ कृतकन तथा सबैश्रेष्ठ प्रकृतनकार विवन्द्र तथा अवस्टेवर (फ़्रेंच) बीर बाजुनिक समय के बाक्रोचनामक बनुकरण के मुक्त

चेत्रक दिवरन, श्रीकरम, श्रीकार चौंकर कृत्यादि सदानुसामों से

मादिश्व में सबीतमा का प्रवाह कीर कराके कवरीय

महिन में नाम के अपने प्राप्त होता है कि विद्यामित में में महिन महिना मह

विवस्तानियह कारण के ल होते हुए देवल वी हो नदीनना की चुरा बनाना, कारने अन्य में नैशि हुई खनामार्थ और समाय देवाँ के भागी का वरिवय-मात्र देश है। हमारी सम्बद्ध है, प्रविधा है मध्य गृहस्थात है, कई एक बुक्क का अहीत अधिन साहित्य चारती को हर्य में को हुए बाहिन्य बंध में चरतीर्य होपर नर वयु मादित्यांनी की पूर्ण बाने के क्षिते नथी बच्च हो प्रार्थने, प्रा दमकी क्षेत्रक (Sensitive) चार्याचार्यों और उच बारगें। ब विशेषः वरनेवाले मरिक-पृद्धि चीर सप-स्ट्य दशकीयक माना हि भी बच्द समया स्थानक करने करेंगे ३ वया बर्ज नए मानून नहीं है हि इमी प्रचार की कोमझ अहरवाडीविका शुश वनिवामों के निरस्कर-क्रम्य बुरा कृत में बमारे दिशी-माहित्व की चाल बढ़ चर्चाति हो ही 🖁 । बचा हमें अब भी, 'तापत्र्य कृती:वर्तित मुशासा वार्र अर्थ बायुरुपाः विवन्ति'-वासी जांच को क्षत्रव से रमकर क्षत्री पूर्व इस धनुराताधीं भीर नागी का शावश्चिम नहीं कर बाह्यताचा दिए। संसार के और-धीर साहित्यों की चोर देशकर भी इसकी वाणी चारमधातिमी भीति को बदक देना बादरबंद प्रतीत होता है। स्व

बायुरमा विश्विणि-नाश्ची जील को हुएव से श्लब्स धारणे क्षेत्र कर सहना व्यापि क्षेत्र स्वाप्त क्षेत्र स्वाप्त व्याप्त क्षेत्र स्वाप्त क्षेत्र स्वाप्त व्याप्त क्षेत्र स्वाप्त क्षेत्र स्वाप्त क्षेत्र स्वाप्त क्षेत्र स्वाप्त क्षेत्र स्वाप्त क्षेत्र स्वाप्त स्वाप्त क्षेत्र स्वाप्त स्वाप्त क्षेत्र स्वाप्त स्वाप्त क्षेत्र स्वाप्त स्वाप्त क्षेत्र स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त क्षेत्र स्वाप्त स्

तिरविधिष्यका च युव्यो" वह गर्वप् । वर्षास इसरे सन के सीह को मही मिटा सकती है यदि हमारी अपर जिल्ली हुई सपीज में हुत भी तत्यांस है, तो जिनके कंधों पर साहित्य का भार भीर उपान्नातित्व है, उनको खन्नो बहेमान अंकुषित गीति से, माहित्य की हित-पिष्ट से, उदासता कर समावेद्य खन्य करना बोग्य है। इसे विस्तान है कि प्राप्त जब चारों को रहेग-देशों मानुवानारों का देशो-रातान के हेनु मान्यक्य से मचल हो रहा है, उस सुख चालामार्थित काल में साहित्यिक दिग्गानों को भी उपनिचन् के हुत साहब की निस्तानीकान्वरेण पोष्णा कर होंगी उच्छित है—''क्यानपर्य साहतार्थ

रितरानीं का साहित्य में स्वान

प्रकृत-प्रवास के उपक्रच में विनय करने हुए तथा रतिरानी की भेंट करते हुए इस पाटकों के प्रति सापने संतत्व को संस्थेप में प्रकट कर देना शपना क्लंडय समझले हैं। 'रशिरानी' के खेळकों ने उसे जिसने मैं और माहित्य-चेश में उपस्थित करने में बाखोचनात्मक दृष्टि को ही मचानता दी है। इसे अँट कश्ते हुए, कवि होने का अववा निर्दिष्ट चादरी के चनुसार समास्रोधक होने चा बुधा वर्ष वे नहीं करते। दन्होंने तो देवल इस रोजक बाक्षोणना के नवीन मार्ग का उद्या-दम कर प्रतिपार्शक कवियों कीर कालोकडों के प्रति प्रयोगायक (Practical) रूप में यह निवेदन करना चाहा है, शिमले कि वर्षमान भौ। भविष्य के उठाउन्न प्रयन्पदर्शक, साहित्य-सेवक इस झारी को भादर्श सक पहुँकने का चेश करें । वों तो हमारे हिंदी-साहित्य में चभी बहै बंग रिक्त हैं, जिनको बेबज बधार्थ प्रवास चीर सची चेच्या के यस दमारे अस्मादी विद्वान् पविचूर्य कर सकते हैं। इस कहाँ तक गिनाएँ, अपने विविध अंगों और अभेनों के सहित शटक साहित्य, गम्प-साहित्य, तिबध, बास्रोधना, पत्र-साहित्य, जीवन-चरित्र (पर चीर स्त्रविक्ति) इत्यादि समी साहित्यांगों की परिपूर्ण करना हमारा धर्म है। इस सामाजिक युग में, जब कि इम समस्त संसार की उत्हार

विवडानियद बारख के न होते हुए केवल याँ ही नवीनता (15) हैरा बताना, चपने हृदय में पैठी हुई समामध्ये चीर तमन्य है के मार्थों का परिचय-मात्र देना है। हमारी समय में, प्रतिमा मयम रुपुरयाकाळ में, कहूँ एक पुषक भी नवीम-नवीन साहित्यि धादरों को हृदय में भरे हुए साहित्य खेत्र में सवतीय हो हर तर नए साहित्यांमा को पूर्ण करने के जिने नभी जयत ही जारेंगे, जब दनकी कोमज (Sensitive) बाबांगको चौर उच वारता वा विशेष बरनेवाले अस्तिनुद्धि भीर सक् बद्दय दुशाबोचक स्वयना हर घोषपर जनवा स्वामत काने खर्मेंगे। श्या वर्में वह मालून नहीं है हि इसी प्रकार की कोमल सहस्वाकांडियो युवा शतिभामों के तिस्कार बान्य हुराशिष् से हमारे हिंदी-साहित्य की बाज वह अधीगति हो रहें है ? च्या हमें यह भी, 'वातस्य क्योडवीसित वृशया चार तह कापुरुषाः विवश्तिः वासी उक्ति को हृदय में स्वकर काशा पूर्व इत बातुसाताचीं चीर वार्णे का मायरिक्त नहीं कर दाखना काहिए। संसार के चीर-चीर साहित्यों की चीर देखकर भी इसकी बचनी चारमपातिनी भीति को वयुक्त देना चावरपक मतीत होता है। स्वा बर्ने संसार का इतिहास प्रथम प्रमाणिल गडी कर बसाता है कि चएते. चपने सर्वेश्वेष्ट कवि कीर साहित्य-सेवियों के प्रति इस प्रचार का व्यायाचार करने के जिमे काम भी चाँगरेत्री-साहित्य, , माँच-माहित्य, संहत, बीब और बीटन-साहित्य, यही वर्षों, दूरवी-संदस के माया समात साहित्य खना के मारे मतमातक हो गरे हैं। वया हमें, बाँदे, श्रेक्सिपर, बहुंसक्ष्यें, श्रीक्षां, कोट्स, चैदारम, सक्सीत कीर माश्र इत्यादि कविवरों के दर्शत शिका देने को वर्गतानवाँ है ? क्या हरहाचि सबसूनि की, "उरासकते सम कोडचि समावचार्यां, कान्नोद्वर्यं रावधिवितुक्षा च वृथ्यींग वह गर्वतु है चरील हमाहै सब के मीह मही तिरा राजनी है बाद हमारी करत विक्री हुई वारीक से

की हित-हिंछ से, अदारता का समावेश खतरब करना बोग्य है। हमें विश्वाम है कि चात्र अब चारों बीर देश-सेवी महानुमार्वी का देशी-त्थान के हेतु प्राक्षपण से प्रयक्ष हो रहा है, उस शुभ आशागित

कुछ भी सध्यांश है, सो जिनके कंथों पर साहित्य का मार भौर उत्तादायित है, उनको भावनी वर्तमान संकृतित गीति में, साहित्य

काज में साहित्यिक दिग्याजों को भी उपनिषद् के इस वाश्य की निस्मंकोचरूपेया घोषशा कर देनी वचित है- "उत्थानस्यं जामतस्यं प्राप्य सराविश्वीपतनः १३ रितरानों का साहित्य में स्थान

प्रकृत-प्रयास के दशक्षच ≣ विवय करते हुए तथा रतिरानी की भेंद्र करते हुए इस पाठकों के प्रति चापने शंतन्त्र की संचेप में प्रकट कर देना चपना कर्तुंडच समयते हैं । 'रतिराजी' के क्षेत्रकों ने उसे बिकने मैं चौर माहित्य-चेच में उपस्थित करते में बाओचताराज एवं की दी प्रधानता वी है । इसे घेंट करते हुए, विव दोने का अथवा निर्दिष्ट चादरी के चनुसार समाबोचक होने का बूबा वर्व वे नहीं करते। दरहोंने तो देवस इस शेयद चाकोचना के क्वीन आर्थ का उत्ता-दम कर प्रतिप्रार्मण कवियों और कामोचकों के प्रतिप्रयोगात्मक (Practical) रूप में बड निवेदन करना चाडा है, जिससे कि वर्तमान भीर मदिया के उठाइक पथ-प्रदर्शक, साहित्य-पेशक बार साहै को बादर्श तक पहुँचने का चेश वरें । वों तो हमारे दियो-साहित्य में सभी कई संग रिक है, जिनको केवल बधार्य प्रवास और सन्ती बेस्टा में बज हमारे उत्ताही निहान् परिपूर्ण कर सकते हैं । इस कहाँ तक

. गिनाएँ, अपने विविध कंबों श्रीर प्रश्नेशों के सहित नाटक साहित्य, गरप-साहित्य, निक्य, भाजोधना, पत्र-साहित्य, जीवन-चरित्र (शा भीर स्वतिक्रित) इ:यादि सभी साहित्यांगों को परिपूर्व करना हमारा . धर्म है। इस सामाजिक तुग में, जब कि इस समस्त संसार की उतकर

मितमाची का मिस्रम चा-बैडे निष्वर्गन पुरुषकों द्वारा कर सक (.. , यहि हम बालान में कैंद्रे हहें, तो बहरण हो हमें पीने वस्ताना वहें हिंदी को राष्ट्र-भाषा बनाने है किये भीर भारत का साथ राष्ट्री मेरतो में मुख ब्रमारक कार्य के जिलेवह बामारसक है कि हम का से राजार की। सर्वेष्ट हो जायें। कर्मवीम में हाना है माप प्रमुण होन हमारा धर्म है, फल जगबियना के सर्वात है।

वह 'श्रीतरानी' रोचड बाखोचना के बंतिम प्रकारानांत एड बातुः बाव-बाव (Parody) है। यनुष्य बाव बिने बहते हैं, इयका चारते केवड़ों ने कड़ों से बिया है। इयड़ी क्यायिता के क्या प्रवास हैं। हमारे पुराने संरक्त माहिष्यह रीतिकार हम तकार के माहिष बी रकता काले के किये चलुमाल होते हैं चयका नहीं। चलुकाया

बारम के युनं रहात भी बमारे मादित्व में बची विश्वने हैं घरणा नहीं। महत पुरतक के विकान के क्या कारक है, तथा वह साहित्य की दिए हिल प्रति की रोचक वालाचना है—हन मन प्रत्में का वाति लंके में इस वाहकों के समक विवेधन काने का सब प्रवत करेंगे। वाहक वर्ग प्रस्तव को जीवकों का बाद्यांचामां के मनुष्टन संपादित पानेगा व्यवका नहीं, इस विषय में सदस्य पावक की ममाया है, इस कुछ

नहीं कह सकते । दिशी-साहित्व के जिले चतुकाता-काश्व (Parody) एक निज-कुछ मधीन काव्यांग है। न तो इस साहित्यांग का यही नामोप्रवेत ी, चौर न इसका यही रून ही संस्कृत साहित्यकारों के विचारांतारं गया है। वेना कहने से हमारा भारतय यह नहीं है कि इस दस है

चक थांबोचनातमक साहित्य का बमारे विस्तृत संस्कृत-माहित्य से िताल है, भीर न हम यह कह सकते हैं कि इस दंग के साहित्य शर्तों का ही समाव है। इसके विषरीत, हम यह समावित करने

की चेटा बरंगे कि इस बाध्यांत-विशेष को संगादित काने में इसारे साविष्यमां की पाष्ट्रीय ब्युतित प्रवास की यह मस्त्री है। रिल्ट्स संस्कृत-मारिश्य में से खेलर इस कई एक गितियों लोडाइसरण धरने खेल के तथार भाग में दबून वर्गेंगे, जिसके धायार वह सावित्य में पामी-पुर कोटि के रोष्ट्र साधीच्यात्मक करण, यथा प्रस्तात, मास्त्र इन्धीर्त मार्य प्रमुक्त काल्यकाल किए आ पुरे हैं।

नारंद्यम इस निर्मंशेक मान से मीर नगट-राट यह कह देना माहते हैं कि इस न्यून होन के कार के बाने के बिसे इस पाइने सीरीनीनीनित्र के कार के बाने के बिसे इस पाइने सीरीनीनीनित्र के करने हो कार्यों है, तिनते कि इसारे प्राप्तन नंतरृष्ट सारियों के स्वाप्त कर हार्य इसारे क्रांति होने सीरीनीनित्र के स्वाप्त कर सारियों के सार्थ कर सारियों के सार्थ हम सार्थ के सार्थ कर सार्थ कर सार्थ कर सार्थ कर सार्थ के सार्थ कर सार्थ कर सार्थ के सार्थ कर सार्थ के सार्थ के सार्थ के सार्थ कर सार्थ के सार्थ के सार्थ कर सार्थ के सार्थ के सार्थ के सार्थ के सार्थ कर सार्थ के सार्य के सार्थ के सार्थ के सार्य के सार्य

बानुहररा-काश्य की परिभाषा व स्याद्या

र्फेरारेश में प्रकृषक-काण को दारक-स्थ-क्यांत काण साता है। स्तिरित्य रिक्त-क्यां के साक-राज का व्यवस्थित कर कर प्रथम स्वाधित रिक्त-क्यां के साक-राज का व्यवस्थित कर कर प्रथम स्वाधित रिक्त-क्यां के स्वाधित स्वाधित कर कर कर कर कर कर के स्वाधित स्वाध

"A Composition either in Verse or Prose modelled more or less closely upon an original work or class of original works—but the turning the serious sense of such originals into ridicule by its method of treatment."

(??)

अर्थात् "गरा अथवा पद्यमयो पेनी स्वनाओ किपी भंप चथवा शंच-सेसी के याचार पर जिली गई डा - गरंतु प से इम महार जिला गई हा कि उन बाधारमून मंग बावना प्रा हे गमार मावाँ को उपहाध्य-वक्ष्य में वरिवर्तित कर है।" घवतस्य का भाव स्वतः हाष्ट्र है। परिभाषांतर्गत Ridio (तपडाल) यहन् सं बमारा वचा तामार्थ है, यह मो स्वष्ट कर वेचित है। इस विचय में इस एड मिलेड चँगों हु-घालाचड राविकार महाइच का यहा हा सवाहर, रुविकार मीर विराद व्यावन का यहाँ वस्त्रील करते हैं, जिसने कि 'उपहास' शहर का बीपा-पहरण होकर उसका समुख्यक दिन्य स्वरूप धर्वातन होगा। वधा-"Ridicule is Society's most effective means of curing melasticity. It explodes the pom-Pous, corrects the well-meaning eccentric, cools the fantastical and prevents the incompetent from achieving success,

"Truth will prevail over it; falsohood w. cower under it and it is true that when reason indignation, entreaty and menaco fail, ridicule will often cause a government to abandon a bill or a lover a mistress," "सर्थात् हिना गमात्र है जिने वसडी दिवतिनवाएक विदेशित घराया का निराद्य वरने हे जिये कपदान सर्वेश्वष्ट सापन है। काहान पासवा छेतळ का नर्व गवित करता है, दिनेची परंद्र मसत वेवड का ममाद हुँद करता है। माताका खेळाड के मावा-मात का हन बरता है, चीर चवान सेवजों को जनका सरब-सहज्जना गाउँ

हत पर यह शाविक होना श्वामाविक है कि यह वरबास मूज भीर देपाँ नेतित हुआ-को-वै "तो शाय को इसके विस्तू सहा विजय हो होगी, वर्षत्र अस्माय वर हमन यह श्वश्यमेव कर देगा"। आगे प्रकार वशास-माचन की स्मितिक और सामाजिक नगरेवन के विषय में स्वामाजिक करा है---

"यह राया साथ जाने कि जब विने हु तथा, विनय सीर वर्षण (बार्चा प्राम, प्राम, प्राम, यह आहे गोतिक वामीमयोग) हार्याद् साथा साथव विष्यक समितिक हो जातें, जल समय उपहास किसी बायाबां(यी राज्यक्षा क चतुक कड़ोर नियम की प्राम करते में सरक हो सकता है, अपने प्रामुक्त कीनों की प्रयान व्यवस्थितार चेता-पूर्वक होने स्थान है अपने साथ करते में रोक सकता है न

चानुहरण की उपादयता का इष्टात

मर ता हुमा व्यवान-माधन वा महत्व वव वीर उसकी प्रयोचित । हरीत करा में मोटे होर है हम पढ़ मितव प्राच्याच कार्योचे का सी उसके है कि क्षेत्रीरेक के यूच प्रयोचित कार्यो की सी उसके हैं कि क्षेत्रीरेक के यूच प्रयोचित प्रयोच कार्योचे की साम्याद्धित के यूच प्रयोचित प्रयाच कार्योची की साम्याद्धित वा से सी विकोच प्रयोची कार्यो विद्याच की स्थाचन के स्याचन के स्थाचन के स्याचन के स्थाचन के स्थाचन के स्थाचन के स्थाचन के स्थाचन के स्थाचन

(++) मर्वदर चीमों को देखनी, ता बहुन संपनीत होने। हुए विशास कृषेस में जन चीहाँ की भीर साम ह चाहति को प्रतिक्रक्षित देखती, तथ ती वह बहुत प्रश भी दानी । पश्चिम यह दुषा कि ममपीतर में बीरे-ब की वह बुरी बाम छूट गई, भीर मनिष्य में वह समाव

TED EIF

इन दर्शन से चनुष्रय-बासोचना वा हुनहु चित्र है। वास्ताः में महते समुद्धाय-दादव हे पही लक्ष्य ह मही वपादेवता है।

अनुहर्ए-हास्य की समित्र क्षमु ५२वा न्याच्य को स्तामा निर्वारित बस्ते हुए कॅगरेमची बहुत मोच-त्रिवार भीर प्रयोगों (Experiments)

कुष निवासे का बय-राम जरवेस (बवा है, मिनका अस-नि निर्देश कर देना इम वहाँ चावस्वक समक्ते हैं। महामना सर किसर कृत का कथन है कि प्रमुक्तराक सदा घरने अनुकरणीहत मुख-सेलक के मित प्रेस और ध भाव रक्षते चाहिए। इस क्ष्यन हो यह ११ट प्रबट होता

चानुकाश-काम्य का वर्तास्य केवल कुरिसत साहित्य के सेसा बासाह का व्यान करना ही नहीं है, चरन धराहें साहित्व के क्षे को दिस्कात करना तथा उनके गति लोगों को भदा बढ़ाना भी वे कहते है--"Admiration and laughter are the ver essence of the act or art of Parody. Parod

is concerned with pootry-preferably great poetry. It is playing with Gods," "बर्मात् दशांसा कीर बास्य, वे दोनों ब्नागर मनकरण-स्था के तिरकर्ष सिद्धांत है। धनुकत्य काव्य का यनिष्ठ संबंध सदा से कारा-महाकाय के साथ रहना काया है। यह व्यापार देवताओं के साथ बांडा करने के बरावर है।"

चनुष्रपारिकृत विषयों के संबंध में मही कहा मणा है कि वार्तिक कारणे पथण हरण के संबंध सार्थिक माणे (Sentiments) का सबुकाण करना मंदीण खनुबुक है। हारोतकः पॅगरिमी-माहिष्ण में तार्थ देनितम को खीतम करिया "Orossing the Bar" को चनुक्रप्रधानांक विषयों से चार मिनाया है। हुनी प्रकार हमारी समस्य में, माजिएएस के मुख्या और कुमारसंबक, नामक्षाय पेतिमाल को संगावहरी, रवींद्र की सोमालिक चीर साथका, नुस्कित्तिमाल की सामायक, सुर्वाक्षित के सेमायमार और साधका, नुस्कितिमाल की सामायक, सुर्वाक्षित के सेमायमार और साधका, दिवंध विषयों में दिवंध माने की सामायक, सुर्वाक्षों के सेमायमार और साधका, दिवंध विषयों में के सिवंधमार और साधका, सामायक विषय सामायक साथका सामायक साथका सामायक साथका सामायक साथका सामायक साथका सामायक साथका साधका सामायक साथका साथका साथका सामायक साथका सामायक साथका सा

कादरी कन्दरगुरुती

साब राज्य वह होता है कि मुझे पाणिय भीर वार्यों साहित्यां। की परिपृत्ति सामें का समिकारी क्षेत्रक कीन हो तकता है हैं व्यामानिकां उत्तर वहीं है कि कोई तिमके हुए से मानिय-मोदा की सामी, राज्योंच हड़ मारणा विधाना है; तो मूज-केकक के साम्ब ही पूर्वीचया सम्मान हैं। तो मिति साहित्य के साम्ब हिन्मू हिन को हान है। वही प्रमुख्य कारण की स्वार को मान वकता है। सही विषेक्ष कर सकता है कि कीन-ने बिच क्षेत्र करायों कार्यामा है। सही सनुस्तर वहने जनकी क्यांति सामारिक करगी जादिन स्वीर सीन-सी साहमा।

भानुकरण-कान्य के प्रकार, भेद

भागोत्री में अनुकाख-काम्य के शीव भंग माने थए हैं। बया---

(1) शब्दान् करवानधान कान्य, (२) भावानुकरवानप्रधानकार्यः धीर (३) शैल्यानकरख-प्रधान काव्य ।

शब्दानुकरण काव्य (Verbal Parody)

सन्दानकरक-प्रधान काव्य (Verbal Paredy) वह i जिसमें किसी प्रतिधित कवि को सुवतिष्ठित कविना के बाधार के सीकर अडॉ-सहाँ थोड़े-से शब्द इन्द दग से बदल दिए जायें। शुक्र को सर्वधा नष्ट-भ्रष्ट न करते हुए भी उससे धान्यार्थ प्रति-पादित कर शास्य-रस का उत्पादन कर दिगा जाय । यह भेद वित . सरब-साध्य कीर साधारण है। यथा---धॅगरंज-कवि पोप का प्र

धद भीर उसका शब्दामकरयः— "Here shall the spring her carliest Surets bestow,

Here the first roses of the year shall blow."

(Pope)

तथा---

"Here shall the Spring her earliest Coughs bestow, Here the first neses of the year shall blow "

हमरा इटांत है महाद्वि वरसवर्ध की सर्वमसिद कवियाr27 —

मीबिड—

ı

"My heart leaps up when I behold

A rambow in the sky,

No was it when my youth began;

. No to it now I am a man

So be it when I shall grow old or let me die." विक्तासम्बा में---

My heart fears up when I behold A minor-per on the table , So was it when my youthlegan ;

So is at now I am a man;

So he it when I shall grow old, if I am ablo."

उपरोक्त शब्दगिर्श्यन में क्लिया यह है कि महाक्षि यहैस्पी की उद्ग प्रशिक्त की क्लिया यह नहीं, वर्ष उनके दिस्त्रीतों की हार्य स्वारं ता है है देखिए, ठेवल को हो उपरो के विद्यंतों की हार्य रस की उपनित्त हिंदी हैं कि उत्तर देखा है के विद्यंत की हार्य रस की उपनित्त हैं कि विद्यंत देखा है की यह के कि सहस्त की कि ती है कि विद्यंत है के व्यवंत है के विद्यंत है के व्यवंत है के विद्यंत की का वर्ष हो हो है तो उपनित्त के व्यवंत की का वर्ष हो हो है के व्यवंत है के व्यवंत के हारा को की व्यवंत है के व्यवंत है के व्यवंत के व्यवंत है है व्यवंत के विद्यंत की व्यवंत है के व्यव

मा निपाद प्रतिष्ठानवस्थमः शास्त्रती समा ;

बारकीन्य निश्चनोदकं जावधीः कामसी हित्त । अपरोक्त हो अकार के निज्य-निक्त कामसे का परिशोजन कर पाठकों को यह जान हो गया होता कि अनुकरण-काम्य की सीमा के संवर्तक की-मीन-से विश्वय होने हैं जीर कीन-मीन नहीं।

सहाकवि वर्षस्थये के बहुत-से नृतन प्रतिवादित वाव-सिद्धार्तों में एक प्रोहोक्षकारी सिद्धांत यह भी या कि वे विकार और नाय की ग्रन्द-प्यना में कोई थेद नहीं वादते थे, और संगोद-सेनांग्री, एम्म में भी नृष्ण कान-शतिया को प्रकट करने के किये सामार्य-से-सामार्या अवता की बोट-पाव की सरक भाग के प्रयोग करने के पद में थे। उनके में विचार दस सराय के व्याकोचर्डों की सिक्कुन



इसी प्रकार साध्यान्य प्रतिवह पारणाय कवियों का भी अनुकारण विषय जा चुका है। दैशीसन की प्रतिवह कविता "The Brook" का सनुकारण काश्वरतों ने बहे राचक दंग से किया है। पाठक वर्ष काश्वरता काश्वरतों में सुकारित The

Century of Parody प्रसन्द को देखें।

भावानुकात्वा-प्रधान काव्य

बुरदा मका है आवानुस्य-लपान कारण (Sonse-Rendering Parody) यह मेर वण्यात कारिक है बीर कहत तथाय है। दिस्ती सुविन्द्र कि अपना तात लेक्क का मानानुस्या करना बसी दियात यनुस्यकरों के लिखे सुसारण दो सकता है, जो दक्षे बसा करि कथार सब्येक्क है, और को सुवक्षि के साथ हतना प्रतिकृतिक स्वयं क्षण नथा है कि उनकी कारण के साथ त्यात्तालय मात्र कर किया है। तथी तो यह मुक्किक के भागों की प्रयोग्ध वससी पाला के कियों की नाम्य कर सकता है, संस्था पह इस हन कार्य का प्रधिकरों हो नामी हा सकता। इस पहीं एट इस्न इसी क्षण का प्रधिकरों हो नहीं हा सकता। इस पहीं एट इस्न इसी क्षण का प्रधिकरों हो नहीं हा सकता। इस पहीं पर इस्न

भापुनिक समय के अनुकाश-किंग दिश्यन (Hilton), भीर श्रीक्षेत (Stophens) को इस मकार का अनुकाश करने में

(4.) दुमर्गे की वर्षेणा क्यादा सफलना मास हुई है। दिवरन ने ब बाख के एक छोट बाँगरेज़ी-विव स्विनवर्ग के फाव्यसम व्यक्ति वनको समग्र कान्य-गतिमा का याँ शेवक चनुकासा दिया है "Ah I thy red lipe, lassivious and inscious With death in their amorong kiese! Cling round us and clasp us and crush us With bitings of agoneed blise; We are sick with posson of Pleasure Dispense us the notion of pain Ope thy month to the nimest measure And bite us again." इचे कहते हैं सखा चौर मार्निक भावानुकाश । पर्यों का पूर्व मागः पहते-पहते यह बिरवास हृदय पर हुए मसने समावा है कि हैएस दिवनकों ही- केवल "Atlanta in Calydon" कारत के स्थविता में घढ रचना कर सबने हैं। वहीं जनका रचामाविक ग्रोज, वहीं सुमाण पद-वाशित्व चौर नाव विकास, वडा वनको चवतिवस मार-साहि (force of Sentiment) श्रीर वडी उनवा सनिवंषतीय, रस-मय नरस संगीत-प्रवाह । यही रति-मूचक खगार रच जो उन्हें सर्व मिय था और वही समुवाम और श्लेपांद कान्यवसर वा विविध चमाकार---वारतव में हवह बनको धारमा की सरी कड़क (True Copy) है। यदि बाद भी कियी को अम हो, तो जनके बहुन से मंशों को पड़कर देखें। बाहिर, भेड़ बंदिस को पंकिकों में शुन हो बाता है। यहाँ तक वहुँकहर समुद्धरक्षकाई अपने वहिनता से रोडे हेए हास को चटहास से प्रकट कर चेना है। "व्याप्तकारीत-व्यवधी वाष्ट्रते रायभी हतः 'वाजी बात होती है। यहाँ वह सी स्वान में रक्षता भावरवक है कि उद्भूष भनुष्टस्य स्वितवर्ग कवि के किसी विशेष मंद भाषना मंदनसमूह का मही है, बाद उनकी समस्त

PI

सारदारमा सा है। स्थितंत्री-माहित्य में यह सर्वमेश मावमूकक धाउ-काय कवितामों को कोट में मिलापा काता है। दूसरे समुख्यस्थाता, है। दिव्यति हम पेन में बहुत मतिका मात्र की है, है स्टीप्टमा 3 ज्योंने स्थानी Pootic Lament on the insufficiency of Bleam Locomotive in the Lake district में, महास्वत् वर्ष-गृष्ठ में सी होते, पूर्व-प्रकास कार्या में हा प्रवादस्थात की ह्यादि की पट्टे में, हुक्य कात्रक कराये है। इस समुक्ता के विषय में साधुनिक साहोश्यक रित्तेशिंद सर बात्यस्था किया कुल ने एक बार कार्या मा Perfection of Parody " खर्यान्य सन्व मानुकार्यक स्वास मा Perfection की समार्थन है।

तित तकार एय-काशों का रोधक बाजीवनायक अनुकरण विद्या नाशा है, वभी प्रकार गय-गादित्य का भी विध्या जा सकता है और विद्या जाता है। वसीयान जुन के प्राथस तो बहे-वर्ग क्यान्तमा क्षेत्रकों का चडुकरण को जुका है। मैरीशियन, हारशों, मैरार्थिक, पैरररटन, वसीर्थ हा, विधिवसमुख्यक चौजून कमा कीर्योगांच प्रमोत —क्ष्म कोरी मोरीयों में चाहुक्या हारा विश्वनिकार कोरी

है। स्यानकरवा-कास्य

सीसरा तकार है कैरवायुक्त्यक्ष-प्रधाय काव्य (Style Parody) । भी तो पढ़ बरपीय पूर्वते प्रवाद के व्यावक-सक्क के क्षेत्रतेल या ही ब्राह्म है, पार्च हो भी पृष्ठक क्ष्म के क्षेत्रद्भावित्य स्थायक्षेत्रकों की ग्रीवी को सञ्चावन किए बाते देखा नगर है। काव्य विवाद क्षावया की सावयवक्षा का सावक्षक इस बेवल हम मनेए के ममुख क्षावया की सावयवक्षा का सावक्षक इस बेवल एक प्रमेट् के ममुख की स्वावयवक्षा माजक्षक ने सावक्षक माजक्षित्र हमान्यों का जबवेलनाम कर देना वर्षात कावकों हैं।

भागरेती नाहित्य के प्रसिद्ध इतिहाय खेलक, कवि तथा शय जेलक पृष्ठ खेंग महोदय ने प्रोरीचलाहट संघ के नेता कवि बी० लंक राजेटी.

महोदय का सतुक्तम किया है, जो सार्थत रोवक है। जान फिर (42) "Splondid Shilling" में महाकृति मिण्टन की शीबी का प मनोहर बनुकरण किया है। इसी प्रकार, स्टोफंस, सर धावन सं घीर कारनरची महोवयों ने प्रयक्ष्यक कतियों घीर लेखकों रीयह बाबोचना करते हुए अनुकास काम्य रचे हैं, जिनहा धारोगी-माहित्य में बच्चा मान है। बांमैहपबीरमीन महाराप वो चापुनिक समय के चारोगी-निवंध-केवकों (Essavista) में

स्रात्तवव है, तो इत सोर वहाँ तक विरोपना रिलवाई कि स्वाबित "Christmag Garlands" जन्मक पुरतक में अपने समझजीत ?६ क्षेत्रको से अपनी आपनी रीकी के अनुसार एक ही विषय सर्वार "Christmas" वर ३६ रोवड नियंच किम्पताय है, सीर कर सर प्रकृत्यक् रीजियां है जिलमेगाने स्वयं शीरियसधीरभीत है। इसी से प्रमाणित होता है कि शीतिश्ववीरशीय ने कहीं तक इन सोबद क्षेत्रकों की श्रीकों को सपनाने का शक्ति पैश कर की होगी यह बात कियी जाबूगर के लेज में क्या विस्तावीत्वाहक नहीं हैं।

इसी प्रकार के तक काटि के, तिकायद कीर निचाय, मानव-मरितक बाकियों का विकास कानेवाले धामीर पमीरों में जिन दिन दिनी पहित जनता क्षेत्र श्रीर गति प्रवृक्तित करने स्वरोगा, उस दिन से साहित्य को सर्वेभियता छोर सामाजिक उपयोगिता घवरच बार गावगी भीर साहित्य तथा जीवन के बीच में वहां हुई पारस्परिक बहासीनता की वह अधंका दरार होंस को कावमी कि जिसमें गिरकर चान भी पाठडो, यह 'रितानी' एड माशानुबाल प्रचान डाल्य-मुखब चतुः य काम (Parody) है । खत्रेय मानात्माखीय महाकवि विद्यारे

व को करिता के धर्मकुष चतुक्त्यवर्ग, उपस्थाववर्ग दीरागर

कवियों की कविता हो इसका आधार है। सहाकवि की आत्मा की पण्ड करने के जिये ही हमने यह प्रयास किया है चीर उनके वार्व किया हुमा बह प्रवास इस उनके ही शांकरणों में श्रांपित बरना श्रपना प्रथम धर्म समस्ते हैं। इस बह पहले से 🜓 मानने को तैवार हैं कि वृत्रियों की हीयी, पश्चमी और भाव-सौक्षय का समस्त्रण करने में हमने बहत इह मुटियाँ की होंती, वरंतु इब कोर वह प्रयत्न प्रयास है । बहुत-से काय आतृत्वेक्षक्र इस चड प्रवास को देखकर उत्पादित होंगे । प्रदि की पूर्ण करना कनका काम है। दाहाँ के लाय टीकाओं की खियते हुए भी खेखकों ने प्रत्येक क्या हिंदी-साहिध्य की एक धचित प्रगति को स्थान में रचला है। प्रश्चेक टाका में लेखकी में दम इसारे रेंगीले टीकाकारों ही विचित्र शैवा, यमपाय, रक्षेप चीर धतिश्वाकिएकं भाषा. चीर चलंगत बातों के समावेश से परिवृत्ति, श्रांत विस्तारपूर्व, श्रंग की तरंग में बिसी जानेवासा व्यादया-मतवासी व्यावया-का अनुकरण किया है। हमारा शो यह सत है कि विदारीकाल में शोहे-जैसे घोडे घर रूपी "गागर में मागर" मरकर साहित्य में जितना चडि-तीय चमाकर येदा किया है और समर, स्थायी बस प्राप्त किया है, हतना ही भारत्य, अपनी अही और बेतुकी, असगत और अति-विस्तृत व्यावया जिलकर, उस गागर के सागर को उसीच शक्तने का कृपा प्रयास कर हम अनमीती सतवाक्षे टीकाकारों ने कमाया है धीर घपने गांच कारना हैंसी कराका काने भारत में कर्ज़क का टीका सगवाया है। उनम कहीं इयाश कावस जल नहरूक श्रोहादार कवियों ने कमाया है, जिन्होंने विद्वारा जैली सनमुक्त्रशीय प्रतिभा का भनकाया कर बाँह दोडे-जैसे होटे छद ("देसत में होटे सरी पाव करें गंभीर" ऐसे, "सससीया के दोकरे क्यों जातक के सोर") का बनामा बार्यत सरखसाध्य समयका वापनी शिविज, असंबद

(44) करुचिंबर, नीरस, क्षसंगत भीर फोबी काव्य-सांक का परिचय दिर है। इस प्रकार के नक्षाओं से विडारी को सुर्वित रचना प्रकृत प्र का मुक्य च्येय है। ऐसा करने में इमाश ईगित किनी व्यक्ति टीकाकार श्रमना दोहाकार कवि के प्रति नहीं है, चीर न इस के विहारों के टीकाकारों की ग्रामीत की काकांचना करने को हो दर हुए हैं। ए० प्रधातिह रामाँ एवं 'त्वाबन' को इस बिहारी के बादः दीकाडार मानते हैं, वरंतु बनडी विराद हुवि, गांमार्थ और वाहित ९० व्याख्या की नज़ल कर दूसरे व्यक्तिड और 'रबाडर' करवाने का दौरा रचनेवाले समग्रीजी चौर निरक्ट टीकाकारों को हुँसग भीर सुधारना इसारा कविचार थौर धर्म है। वास्तव में डीका का घड कुलिस कर बिहारी के बाई, सांत सूर्वत डीबाकारों में इस रेपादा प्रकट नहीं हुका है, जिसना कि सम्यान्य बरियों की शेकार में विशेषता हर्नु-कविकों के कार्यों की काशुनिक हम की 'बहररी मतालेदार' डीक) वों में । बातपुर साधारखतः यह चनुकरण समी महार की बलात (Irrelevant), केनुकी (Far-felohed), व्यतिचित्रत्व (Prolix) धीर मनग्रीकी रीकाचों व्यवन स्थानवार का है। स्पत्तिरात काछेप करना क्षतस्थता और अवितय क पराकाष्टा होती है चीर ऐने व्यक्तिमें को साहित्य में स्वान नहीं रिवा जाता । सतपुर इसे पूर्व सारार है कि सहदव पाटक इस पुत्र रचना में व्यक्तिमान बाचेर बूँदने का व्यर्थ प्रयास न करेंगे। सेसदों से हेवज हिंदी-माहित्य की साधारण अमिल्यों (General tendencles) को स्थान में रमकर सनुकरण विधा है। यरष्ट्रत-माहरयकारी को धानुमनि

इन क्षा कर चाए है कि चनुकाल काल वृक्ष व्यवस्थानकार विषक साधीचनात्मक काल है। वों जो वह साध्यानीर वसारे प्राप्ते विद्यार्थित क्षा कर से चहीं निवास मही है, परत दूसी महार



रसरहरू

स्वत्रोदेकाद्खगडस्वत्रकारा।देव विन्मयः । वेचान्तरस्परासून्याः मह्यास्वादसङ्घादरः । सोहीतस्वमत्कारप्राणः केश्चित् प्रमानृभिः; स्वाकारवद्गिमलत्वेनायमास्त्रायाने रसः।

षर्वात् व्यतराक्षा से प्रकाशित होने के कारण पह रस वर्णह है— हें वर्ग मकारामाम है—सार्वद और वैशान्यस्वस्त्र है। स्तोनेंड है समय धन्य बाह्य विषय हे व्यसांमुखन में सूच्य और महानंद हैं सहस्य भागमननावा है। भागोजिक विश्वविकासमञ्ज्य चासकार ही इतके पाय है, चीर इसका सनुमन केवस कई एक प्रतिमालंबस हार में होता है। स्वाधास्वत् होने के कारण यह रस यह हो बार सहेश

धनुभव किया जाता है। धारों बसकर ज्ञानताहातव के द्वारा साहित्वकार ने इस रस का रवाकाशस्त्र भीर वालंडण भा विद किंगा है।

पद मो हुचा रम का रवरूप-वर्णम । रस नव प्रकार होते हे_ रितिहामरस सोग्डरस क्रीकेल्याही असे नथा।

रापानिहमयर बेल्समधी घोका समोऽपि व । महत्त विश्वतियांत चाच हुए शासनम् वा निरूपक् वाते हुए साहित्वर्पणकार में जिला है-"बागादि बैह्नाबेसी विवासी बाम इंप्यूने" अवीन वक्षत्राहि विकृति-अन्य किस के विकास ही

पित बहते हैं। "बागादि के हमार्" में सभी बकार के (बोट-प्रमुख-य भी एव प्रचार की विकृति हैं) अनुकास ब्लास है, बचा नगर, व भारत करातुकास । सामविष्ट्रति = सामानुकास सीर तीसीः

माने बसदर रमांनों का विदेवन करने हुए दीनिकार

त, विकास चीर परिपूर्ति के त्रमधाः ये सखेल बाताया है, जिनका स्वात प्रयोग कर इस खनुकरस-कारण (Paresty) को बारण-धान एक तृतन कारणांग प्रशासिक करेंगे— विकासस्य रोजनेकारेः कडकाडवेन ।

हिन्द्रस्थाति । इस्ति हुन्द्रस्था । इस्ति हुन

तते हैं— |विभावत दात है। विभावत के हो भेत हैं—बावेदन कीर होते-हम बन्दु वाध्या विद्यारकारकोश निकास का पत को देखर |वे के यह में सारवातुकाय काने की सेटबर हो, दब बन्दु भाव को हम रम का वाध्यवत काने है और बार्ट कर बस्ट

वेरिवाराम्यके विभा आष् प्रवस दिक्षेत्रा-साठ दठ द० ६ १९६ । ग्यापुन्देश्वयालये विभागा वण्य बाध्यवे:-साठ द० ए० १ ६१

!सरम्ब मादवर्णद्रस्त्रयासम्बद्ध स्थोद्रसान्—६० १० व० व् १९१

(30) चेष्टा को उद्दीवनळ बहुते हैं। ("ेष्टा" के इव क्यां के जि इशंत यथा—मनु १-१२ण यहास देवो जागरिन तरेर बेशने जा भौनों का संकोष, बदन घराना मुखनांडच वर हुँची के विचाद ह विकास (Expressions) की धनुमान कहते हैं। चीर नि बाह्यस्य, व्यवहित्याः इत्यादि स्थापार स्थमिचारी ए भाव है। घव विद प्रयोगाताक (Praotical application) मु रिष्ट से देवा जाय, तो "विक्रमाधारवान्ते राषेशारे कुरबात्" इन बात में ध्यारे पूर्व निर्मिष्ट चनुकालकाव्य (Parody) के तीनों थे। वर्षो । अयो विद्यमान है । यथा—भाव हे 'केर' सर्वात् सर्वा - वसहे विशासन्त्रम् नाहरवानुस्त्य (ज्ञृहकात्) को इसने सन्तानुहरू प्रथान द्वारव नतानित बास्त (Verbal Parody) बता है। भाव £ 'शाहार' क्यांत् भावारं क्यांश भावाराव (Sonse) बसर्ड विकार मध्य ताररचातुषरच को भागानुकाक अवार Transfer sing (Sonso-Rondering Parody) कीर शाव के ''बाक्'' कर्षांत्र शीक्षी तथके विकार-त्रम्य ताहरर

• वरीननविमानास्ते रसमुद्दीनगरित के भाः दः वः र । † उच्छादकरणी १वे स्वं, बांहमांबं प्रकारायनः, साहे या कार्यस्तः भी सनुभाष कास्यनात्वयी । है किसी । बाहितक आह के शीयम क्यायप को बाहितका कहते हैं। ्र विरोपादाः नमुस्येन, खरन्नां स्थानवारियाः । रमायानुस्मानानिर्मात्राः श्रीय धाराचीनगाह्नत्।। -वा॰ व॰ व॰ व स्थी। इक्ट

जुकाण को शैल्यानुकाण-प्रधान द्वास्य-गर्नित काम्य (Style Parody) वहा है।

र्शतराजी के विषय में शासा-प्रयोग

जैसा कि इस उत्पर कह बाए है, प्रकृत पुस्तक दिसानी एक हारय-र्गामत भाषाबुधरख-मधान कान्य है। क्षेत्रस भाव के चाकार का विज्ञतानुकरश इसमें किया गया है और वह भी दो प्रवक् दशीं से। एक दरहान-मुखब सनुबरख (Ridicule) और द्वरा प्रशंमा-मुक्क प्रमुक्त (Applause) कविवर विद्वारी के चारंतप चानु-कायकतीमों के भाषों के जाकार (Sense) का मनुकरण [(बातपुर, वांशिक क्य में स्वयं कवियर विद्वारीकाल के भावों का भी , क्योंकि महति का यह नियम है कि Things which are equal to the same are equal to one another) प्रसाधारण (Common) करन से बराबरी का संबंध रखनेवाली सब बरत्ये चापन में भी बराबर होती हैं)] विदर्श के प्रति छहा के भाव से प्रेवित होका, जनकी विद्युद्ध वशास्त्रवाति के हेतु किया । गया है । इसी प्रकार विदारी के टीकाकारों का नवा ब्यायुनिक समय के यम्प रंगोबे श्रीकाकारों का अनुकरण, माधारणमः कुलिक श्रीकार कारों के मांत कविश्वास और उपहास का आवरलने हुए किया गया है। ऐसा बरके संखर्की ने सवीय-सप में चतुकाचा-काव्य की रचना के उपशास-मूजक और प्रशंसामुखक, शेखक, आस्रोधनात्मक दोनों कारमें दिसका हैने की चेटा की है।

रतिसाती क्यार वस-विकेचन

ì

चन प्रश्न पह होता है कि रतिशानी के, चंतरील अनुकरण के इसर दास्परस का श्रीवोशीय अस्पादित होता क्रिय होता है चपत्र नहीं रिज्ञक प्रमाण से हैं—

शामरम इस पुस्तक का स्वाविमात है । "निर्विभागतमके विसे

हम विशेष धन्येषणीय बातें शहकों के तारान्येपी श्रुपों व भीवते हैं।

भारतः व । भारतः शास्त्र आस्त्र आसवा अक्षीर

व्यव दिल्लुन संस्कृत-नाहित्वायं है से से बहुब बच्छे हमारे सहर् पारकों के समय हम वह वृद्ध बच्छ बोटि के सर्वेश वृद्ध कर हमारे सहर् रेथ्य-कामरात करियल करेंगे । हतें सामा है कि दून हरोगें पा सत्त करने के परांत कराइय बाह में ब्रांच सामान सराव्य हमा थे मार्ड होगां बोटे के बहु बाल टिटियल कान के कि का मानत में हैं सही, स्वयंत्र वारतें वृद्ध हो (हम हो यहां परेंगे कि बात-बुक्त कर्म) हमारे दुरानन साहित्य-वहायों कोंच वहि, बाहुब्द वा स्वरेश के साहित्य ब्रह्में मार्च के सामान के स्वरं के प्रति करने हैं वा साहित्य ब्रह्में मार्च के सामान के स्वरं के स्वरं कर हो के व्यव क्रियानकामर्थाय साहित्य कर कर सहे । यहां कर हो कि स्वरं कर हो के व्यव क्रियानकामर्थाय साहित्य कर हमार्च कर कर सहे । यहां कर हमाराव्य कर हमारे के स्वरं हमाराव्य कर हमारे के साहित्य कर हमाराव्य कर हमारे के स्वरं हमाराव्य कर हमारे के स्वरं हमाराव्य कर हमारे हमारे के स्वरंग हमाराव्य कर हमारे हमाराव्य कर हमारे हमाराव्य कर हमारे हमाराव्य कर हमाराव्य कर हमाराव्य कर हमाराव्य कर हमारे हमाराव्य कर हमारे हमाराव्य कर हम है, तथा धतुबरावृष्ट्रिक का मानव-परित चीर मरितण्ड के साथ माइतिल करो वा वंद्य है, दृशः विषय में देशो, "Origin of Spocies"—Charles Darwin) चीर सम्बक्तिय ग्रुव हो कि Spocies"—Charles Darwin) चीर सम्बक्तिय ग्रुव हो काला इस प्रमान इस प्रमाने सांसारिक व्यापारों का निर्मायण करते हुए सानाहि कालारों का व्यापा करते हुए सानाहि कालारों का स्वाप्त सांतर हो यह माइति काला से प्रमान होने से महत्त होने यह भी, काला हो यह प्रमान करने में महत्त होना आया है चीर प्रमुक्त रहेता, जसे मत्त्र का माइतिक वर्ष में Lostinet) कहते हैं। वर्षाय सम्बक्त मानविक वर्ष में Lostinet) कहते हैं। वर्षाय सम्बक्त महित्य स्वाप्त मानव-विवार मानविक मानविक मानविक मानविक मानविक है। चलुकराय मानविक मानव

संस्कृत-साहित्य के इतिहास का परियोजन करनेवाड़ी प्रापेक विचारशोक कार्ति को एक नहीं चानेक समुक्ताय कार्तों के इसीत बीर इतिल उपायक हो सकते हैं। इस यहाँ केवक दोन्यूक विशिष्ट कार्तों के नामोश्लेख कर, मृतिकावित्तार के स्वयं से चाने कथन का क्षण्येता करेंगे।

भोज-प्रकंध

कार्रा अपुष्टाणका कविषय जीवकावासेय का दिरविष्णायात समुक्राप्य-काथ-रीम "मीत-नवष" दशारे सार से देख्य संस्कृत-सामित्र के प्रमास है। नहीं, बार्य, संसार के सारक जानुकरच-कार्यों के मेची में उत्कृत है। दशमें वातिकायोकि समस्या मृत्य है। इस सहस्य पाठकों से पुरते हैं कि चित्र पर साथ सार्यों सनुकाल-नाय के साथ भेरी को स्वस्त्र पर्याचित्र कार्यों कराया, तो वे से बनार्व कि शासानुकार सम्बन्ध कोर की-नों स्वयंत्र के जातांत यह दस्ता है। हमारी समस्य में हसका एक हो उच्छा हो सकता है और वह बा कि भोजनवंदा, याख हारा खनुमत, परेतु शास्त्र-मेर्ची में मारी स्थेल के समाव के कारण संरशटानुसत, हारयमधान सनुसर कारत है।

इतिहासकार भोजराज को माजव बर्धांत् धार देश का राज

बताते हैं। इनका बोधनकाल भिक्र भिक्ष मतो द्वारा १०वी है। इतारी है चार में प्रवादी की प्रतादी की प्र

क्षमबाबीत ही ये चीर न जनकी वे कविताएँ, वे समस्यापतियाँ चपश

बोचना वे बाग् में मुजीसह अंच है। देने तो संस्तृत-साहित्य में बीर भी वह माझेचनत्मक अंच हैं, वांनु रोचवार, नमोशारिक भी बोडरीज्या की प्रति से मोकनवंच ही क्व देना मय है, वो दचनेन, रिताररेत बीर क्वा-महित्याला के माझ क्वान्य में स्टूटन-साहित्य के ब्यानक्ष हिराट्-क्वान को क्यू मीनाम के कुछ में मुर रित्य वर सद्या है। धंन्युन-माहित्य मैं विशेष गींव व स्वयंवाचे हमारे कारों भारतीय भाई घोषी-सी जारिकसंस्ट्रक-विकास बाद मोक-धरंप ही सो पड़कर हमारे भारतीय काम्य-वीवन के निर्मारामां के विकास में कुछ जानकारी मारा कारते हैं, तथा बनके सुखों के तारतम्य का कुछ भार वर्षा सकते हैं। बीद, इसी भोज-वर्षक के विकास में हम निश्चय के साथ कह सकते हैं कि यह संस्कृत-कवि-मन्त्रापनार्थ हारव-माया, एक वरितीय पानुकाय नाम्य है। जोज-वर्ष में सनुकाय-काम्य के तीनों द्वारा के जाननाम बांद्रशीय काराया में निजार हैं। कहरूय पाइक वर्ष पड़कर देश कीं।

यदि सम्बेचक किया जाय, तो और भी बानुकरात्य रवनायूँ वे इसते इंदर, संदान-माहियायोच में मिला करकी है, पर्दे ह इंग्लंड इंतिन-माहियायोच में मिला करकी है, पर्दे ह गाठकार्ग, करार इस कह बाग हैं कि अनुकास करता प्रमान मायायाया करता कोई बाग होग नहीं है—वार्थ वहां तो में क्या आप । इस यह की माजने को जैवार कि कि वार्थ विश्वारी भी पतु-करपायीक-महार्तिसद्ध सोन कांस्वरण नहीं कर सकरने ये चीर त जन्हों में किया हो। परंद, जैवार कि इस करत बढ़ बाग है चीरिय भी करूने हैं, परे याहबर कींस तहता हो में हुए तर कर केंद्र कर कर एक हो सा सकरेवाले भागावास्त्र कींस व्यवस्था के विश्व हैं वह कोई विवादतील पुष्ण जाकार्मी तिकाहेरी । बार देशकार्थ प्रीमान-माल कराइस्त्र केंद्र साहके अनावासे की तार रेश सी

क्षीर के निग्न-जिखित दो होंहों को ही स्रोजिए--(1) कहा सवी तन बांतुरे, दूरि बसे वे बास 3

जाती है---

कहा सयो तम बहिते, दृष्टि बसे वे बास ;
 मैना ही खेतर परा, जान तुन्हारे पास ।
 पदस्त यह तत एक है, एक प्रान दुह यात ;

अपने जिस से जानिए, मेरे हिस की नात ।



बसाइए, साहित्य का क्वा खान हुआ। एक ही दोने को पारीटकर संविताम ने उसकी क्षीमत १६ से १२ आने कर दी। इससे तो पदि वे एक मीटिक दोश क्लिको, तो उनके भक्त जोग क्वा १२ धाने मांच को भी १६ माने में क्रांतिए खेते। पांतु विकास की उपेचा करके क्य उन्होंने एक हो बाहात में एक ही चीता की सामने-सामने बुकान कार्याहै, वक तो जबहे सुक वह बी

पाउको, दम विदारी की तवाना में सरितराम को नहीं रकते, न कमके कवित्व के प्रति हमारी जदा दी का अभाव है। हम विदारी को विद्वारी की जगह चौर मितराम को मितराम की अगई सर्वेग्रेड समक्ते हैं। कई बालों में इस अविराम को विदारी से नइकर और बहुत-सी बातों में विदारी को शतिरास से बढ़कर समकते हैं। केवब हपपुक्त शिर्त के काओड़ के किये हम जनको अवश्य जल कह सकते है। फिर एक मतिराम 🗊 को उदात करने से हमारा धाराप केवस बन्दीं को बिहारी के जनुक्यकर्वा जनना सबसे बहे चनुक्यकर्तां मान सेने का नहीं है। हमने केवल उदाहरण-मात्र के खिये मिराम का दोड़ा बसी प्रकार की किया है, जिस प्रकार ३०० सन धान में से शहरी-भर चावल । साथ तो यह है कि विदारी के बसरकालवर्सी मायः सभी दोहाकार कवियों ने विदारी के दोहों का चनुकरण कर इनकी-सी उज्जवक स्थाति काम काने की थेश की । बात तक यह बामकर्या का प्रवाह बरनवरश जावा जा रहा है। यहाँ तक 🎮 वे अनुकरक्षकर्या दोहा-कवि धाजकता तो वरशाती शेवकों की तरह जिथर देखों अधा 🗗 टर-टर करते सुनाई देते हैं । उनकी बिरक्ति हेतु और विद्वारी की स्तुति और प्रस्वाति के देतु वह प्रयास है। पदी इस अनुकरश-काम्य का संतन्य है। उदाहरक के जिये तथा मनोरंजनार्थं इस नीचे कड़े वक रतिशानी के दोहे विशारी के दोहों के निकट रसकर अपना अपहास्य संग्रन्य प्रकट कर देते हैं।

(88) यथा— विहासी—हेरि हिंहोरें ममन तें परीपरा सी हार वर्श बाइ विव बीच ही, दूरी खरी रस लूटि रविरानी—सावन में मूली परो, सिंग तेन मुतान धाय बीच अकटे पिया, 'सरी' बहुत संपटाय। विहारी---कुच गिरि चनि, चति यक्ति है, चत्ती बीटि सुँदवार । जिरि न टरी, परिने रही, विरी विपुष्ट की गाड़। रतिरानी - इन पर्वत साथ घटत ही, परवी पेट के गाइ वामें भी मन कीते रखी, सकत व कीड कार विद्यारी---वेलन निकए वाले मर्त, बार वदेश। मारः कामनवारी नेम-मूच, नागर नरम शिकार। रतिरानी—कर गढि वान कमान, नैना कानन जात है। हैं भे बाचे हैं मान, यूग बाने भारत सूराम ही। विद्वारी-सहज साविहन स्थामहन्, सुवि सुगय गुडुमार । गमद्र न मत्र पश्च व्यवधुस्तिः, विद्युरे छक्रे बार । रिनिरानी—कारे गटकारे विकन, मोन विकोधन कात;

रेराम-रमरी-बाल मनुः भय-सम कांसन नाम । हारी - उद्योजयो बोबन-केट दिन, इस विति स्ति स्विवस्ति । स्योनयो क्षिन-क्षित्र कटि-स्ट्रान, श्लीत वस्ति नित्र जाति । ानी—हव बरोस हह बहुत साथि, बहु निर्मेव हुव मैन। बरी बीन मह बात है, मैनाई माहा चैन ।

(4)

विदारी—जाज मही वेश्वज कत, येरि रहे घर जोहि; गोरमु जाइत फ़िरत हो, पोसमु जाहत नीहि। रितिरामी—हरी दरन में चतुर है, हरें सबन की थीर; सास्त्र होरे मोरस दरत, हरत मान दरि थीर।

(७) विद्वारी---विनती रति विपरीत की करी परिक भिय पाइ :

देशि व्यवपोति हो दियो, कराड दियों नताह। रितिरानी—एक दिया थियो व कही, करा केटि विपरित ; मतामुख हो विदेशी शिया, नवान में सब श्रीत। इस वासि दिश्यत भूभिका का वपसंदर कार्ते हुए और सहदर्य पाडकों के चुना-रामका करते हुन हम बासा करते हैं कि वे हमारे

भाराम पर भौर इस विनय पर कि ग्रापदि को भाषराथ , स्यायालय में भापके इ

दुशकु भीति साथ , सभी सम्पी न्याय करि । पूर्वकरेष प्रधान हेक्स हमारे प्रधान स्व कृष्ट दिस स्रोवकर हैंगैंगे । बार उसी हुँगी के सासंगरिका पुरश-प्रधान में यदि दिसारिकास करके और समारे विद्युत हन्यासमाँ पर था दिसानें, सब सी उनकी यह सामना और हमारी और साहदय पाठकों की यह मनोभिकाण पूर्वी काय-

सींत मुक्ट कटि काझनी , कर मुरलो उर माल ; यदि बानक मेर मन बसो , सदा विद्वारितास ।



विषय-वीचि चतर चकोर

।। मरको 3 मोडिनी मल्लियाँ ... नंददायी अञ्युत बड़ा व्यापारी ł 9

र चोर

-विडार

জ-কর্তদা

ों की भीद

ज की केसर

र्घो की सजा

ो काम

रीका

वा मभाव

की कसौटी ٠., 80

से चिड

1797

व को भागार ...

नगर के राजद्वार

क्षीकी साथा ...

।ठाकी चाइ ...

*** 24 रसना के शस

...

ह अंदाकिनी सम्मान के साधन -দৰ্ z मेम-प्रकारा

वी भौर शक्ती 10 विकास सी विकायत म-रसरी 11

38

90

98 प्रेस-प्रदर्श

22 विचित्र वैद्य

RR सुरुष सञ्जय

48 सक्त सका

49 प्रेय-पय-पान

3.2

22 द्याभ सीव

10 सचा संदेह

**

** ...

**

स्वर्गं का सुका

काम के कमज

षड्रंगी विदारी

र्देश की ईवार्र

कीय का कारश

नम का नीसम

सर्वेकों की मान-हानि

अ्ला के समृष्गार

41

\$1

5 P

68

44

\$12

44

91

43

40

1319

19 8

21

51

SŁ

ĒU.

.

.

(*) संदर समन --- ६२ मर्यक्षकामोह . बर को वर्षेट ··· ह३ ख़ित की ख़दास ... मेम की मनावाता --- देश सनीव स्रोपवि मदन का मोह -- १६: बाता-बासक्ति ... प्रेम-पयस्विनी -- ३०० मेम का मितिहर धामयहीन के बाधार ३०३ मान-मोचन ... प्रेय-त्योधर काविद्वी में क्वार करण । १०० कामाय वा काव ... गयम-वैद्या १०६ वाम विद्यु ... १ गयम-विद्या ... १०० माम-मान्य ... ११ मेन-पान-वाम ... ११० वृतियों की द्वारा ... ११ ·· १०४ वजामाय वा कर्यक ... ·· १३० बुतियों की दुश्ता ... १६ वासिनी का कृष ... ११० संवानक वासिन ... 101 ष्विन्ताकः ... १९४ अम्मीम भाग प्रार्थतः ... १९४ वर्षे की त्वा तिमार्थ किया काँच ... ३३३ मेमपां। प्यासी ... 108 ा ११७ वर्षं की वृद्धाः । १४१ । मरम सैनिष्ट *** *** ... १२२ सरोजपर र्याच ... १८। रकोतियाँ का ममाइ... १९४ अनवंती कता र्वमां की हैंसी ... १२६ वीवक का वात ... १८६ वहाँ की बहाई " इन्ह पीपक का पास भागीका मार्थिद " इन्ह बाद प्रिका भागीका मार्थिद " इन्ह आसी आप ... 153 मेम का मतिकार ... १६२ स्नेड-संबद्धानामिक्कच १११ *** 145 मिननिवन १६४ व्यक्ति । --- 240 वहात की काकी ... इंड्स मेह में मीति ... इंडस



रति-रानी

चतुर चोर

हरा हरन में चतुर हैं, हरें सबन की पीर ; मारात हरि गोरस हरत, हरत मान हरि गरि । अजिबहारी बड़े वाँके बटमार हैं । चोरी करने में भी बह

यहे चतुर हैं। यह चोरो तो करते हैं पक वस्तु की; परंतु पीछे रिस्य व्याती है एकआप कोर हो चीज! यह इस्त तो करते हैं मावत का; परंतु गोरस अपने-आप चला बाता है। इसे ब्यास्पर्य तो यह है कि मावत-चारत के पाचात्त करों गोरस की की क्यों सभी रहती है । याव्या होता है, यहाँ गोरस का शुद्ध कर्ष ही ब्योर है। वहि के हम स्त्रेय का व्याप प्रवीच पाठक दत्य दी सम्मत्र है। यह गोगाल पहले हो गोरियों के गोरस का हस्त कर लेते होंगे, तो करों लायन तो मुस्त ही मिल जाता होगा। क्या प्राप एक बीर योधी की पासनी चरिस्प। जल-विहार

कर की एक जार पात का पासना पारका त्र तननवहार करती हुई भानिनी गोवियों के बच्च पुराकर ही हमारे हरी करदा मान हर लेते हैं। यान को पानी के प्रवाह के साथ बहा-कर ये हमारे विद्वारीलाल से, बस्त्र बापस लीटा देने की, र्यत-रानी

द:सों की बोरो करें।

विनय करने लगती हैं। परंतु कृष्ण केवल इसे ही पर्या नहीं सममते। यह उनको अपने पास नग्न मुलाकर उनके मा को पूर्णतया पूर्ण कर देते हैं, जिससे वे आगे सँभलकर वर्षे

भाषपा थों कहिए कि वह राधाओं का मान हरकर बनदा की भी हरने लग जाते हैं, ऐसे वह 'चनुर चोर' समल संसार

मधुर सुरजी

धनी घटा देखन रसिक, गया असुन जल पार ;

रापातारन सान करि, दियो सबहि जग तार।

सावन का सुहावना समय है। एक साथ एसारों होंगों की भाषाय के समान गहरी गर्वेना हो रही है। भारतम होण है, दैहरेंच कपनी आर्थों यूभि से चिरकाल के बाद मिलने भाए हैं, वन्हों की खुरों में—उनके स्वागवारी—यह धानेदी-साथ मानाया जा रहा है। थोड़ी देर में पानी बरसना ही चारता है।

इपर तो यह हात है, "और जगर वेणारी विराहितियों की वेरना का इस कारापार कहीं। करका तो "क्याबारी जिय होत हैं, ये करना करनार"। परंतु साँचले के लिय तो संयोग-मुख का पूरा-पूरा सामान जुटा है, सिक रामें ही की शिकायत है। सारने एक तरकीत हैं हि काराने एक तरकीत का माम लेकर काथ यहना के उस पार गए और मीटे सुर में सुरकी बजाने लगे। राधा-तारन, वारनंतरन इस्प्य ने यह जान कपने पे परा वार करने से एक सार गए सार करने से एक सार गए सहस्त करने से सार गए सहस्त करने से एक सार गए सार ने सार गिरा है सार में करने से हि सार से का सार में सार से हैं सार से हैं कर सुनाया होगा।

संसार को इस आनंद से वंचित रखकर आप अडेले हैं

×

1000

राधाजी के साथ मजा खुटना चाइते थे और इसी जिरे 'रापा-तारन' अर्थात् राघात्री को तैराने के लिये तान की!

परंतु नवीचा कुछ और ही हुआ । बान को सुनक्र राघाजी सो लञ्जाबरा यमुना न तैर सन्दी, परंतु समर संसार के प्राणी इस अवसागर को—तैर गए—सहज ही में

पार कर गए ! घन्य, 'राघा-वारन' ! बाप तैराना तो चाहते हैं। फिसी और को और तैर जाता है कोई और ही ! है माध्य ! यह मजा तुम्हारी मधुर भुरती को छोड़कर और कहाँ है इस संसार में आकर वही तरा है, जिसने राधावलम भी भरती की तान के रहत्व को समक तिया, जो उसके सुम्पूर

संगीत को पोलकर पी गया है, धौर जो निशिदिन बस बसी एक प्रेम-रंग में मान रहता है। विहारी ने सत्य कहा 🐫 र्रात्रीमाद कवितानस, सरस राग रति संग : श्रानकृते नृते तदे वे नृते सक श्रीता

धानंददाधी अच्यत

गोगिन के सन हरन करि, पियो अधर सकर्द : रसिफ-रिारोमणि, सौथले नंदलाल ने तो अपनी सीलाओं

द्वारा समस्त अल-मंडल को बरा में कर रक्खा है। भक्तों ने उनको अपने हृदय में स्थान दिया है: और उनके चरणों से ऐसे लिपट

म्य बय ग्रंदर स्याम बपु, काहि च करत प्रांतर ।

गए हैं कि चनकी वीनता वेदाकर मक्त-चत्सल भगवान से चनको छोड़ते नहीं धनता । परंतु, यह न समक्तिय कि रूप्या जैसे मीतिहा, सबकी चाल में चाकर इसी प्रकार प्रेम-यंदी यन जाते हैं। नहीं-नहीं, यह तो चटल और अमन्य मिक ही की शक्ति है कि जिसके बश होकर वे लाचार हो जाते हैं। ऐसी कोदि के भक्तों के तो ने सर्वस्व, जीवन-प्राण हो रहते हैं; भक्तों में ने इस प्रकार मिल जाते हैं कि वे शक और शक वे हो जाते हैं, परंतु सबको यह बानन्य मसि दुर्लभ है। इससे यह न सममः लेना षाहिए कि केवल इसी फोटि के मक उनको प्रिय हैं। नहीं, उन्होंने सी "मितिमान में जियो नरः" कहकर स्पष्ट कर दिया है कि मक किसी कोटि का क्यों न हो, वे उसको अवस्य अपनाते हैं।

हाँ, इतना चरूर है कि जिनकी सक्ति चनन्यवा और प्रवतता

रति-रानी

में मदी-चड़ी है, वे सो बन पर दावे के साथ अधिकार रखते हैं परंतु सगवान् सबके हैं। कोई उनको रासलोता के रनिक र में देशकर भानंद वाते हैं, वो कोई उन्हें गोवियों के सामग्रेम कर देराकर प्रेम करते हैं; कोई उन्हें गोपाल रूप में प्यार करते तो कोई उन्हें दीन-दुख मंत्रन अर्जुन-सखा रूप में देखना पर फरते हैं।सारांश यह है कि इन सबको भगवान आनंदरायी हैं परंतु इन कविजो की कोर तो देखिए, इन्होंने अपनी हैं।

ξ

पावल की खिचड़ी चलग ही पकाकर कृप्याजी की हम करनी षाहा है। ये धन्हें और ही रूप में प्यार करते हैं। इनका से कहना है कि जिन झैंला कुप्छ ने गोपियों के मन हरन कर लिए थे, और जिन्होंने चनके अधरामुद का पान किया था, ^{इन्हीं} कांतिमान, किरारि और सुंदर, रयाम शरीरवाले कृष्णकर्ना

को हम व्यपना जेम अपिंत करते हैं। कविजी का कथन शर्य है। मालुर होता है, कवि ऋधरामृत के बड़े ही शौकीन थे, त्तमी हो इस रूप में बनके व्यागे व्याना प्रेम प्रकट किया है। 🔇 फविजी में यह गारंटो नहीं दे दी है कि सभी को यह हर सर्वेत्कृप्र जैंचे । यहाँ वो जितने रसिक हैं, उतनी ही रुचियाँ हैं। बिहारी उनको 'कर मुस्लो वर माल' देखना चाहवे हैं: कोई-कोई चनको बहुरंगी रूप में, वो कोई 'विच्छ चरख घर' रूप में देखना चाइते हैं। घन्य हो गोपाल, बापकी लीला पर सव सह हैं।

मक्त मंत्राकिनी

#

मुहा मरि विय माँग होंग, होइत विव कप पास ; मञ्ज नीतोत्त्वल अम विषे, हत्तवत वंग-चकाम । तियों से भरी हुई नायिका की माँग केरा-पास के :

सोतियों से भरी हुई नायिका की माँग कैरा-पास के बीच में इस प्रकार शोध्या देवी है, मानो नोले और चयकीले बाकास में बाकारा-गंगा एकक रहो हो 1

ये कि भी भवाव के सोग होते हैं। ये शहात-देशी के साहित सहकों में से हैं। इनका कुछ बंग दी तिरासा है। इनकों झुमन में भुरतों के सर्गन होने हैं, क्षोस में मोती नवर क्षाते हैं, मिहला के सुक में सर्गक के दारों होते हैं, सर्गों में मानिन नवर काती हैं, दों में साहिम के दाने शिल पहने हैं, करों में कहिं में कहिं हिस्सार्ग पहनी है, में मेरी को द्राप करों में कर्तरहार काँच पीस पहना है, और मोतियों से मरी हुई सींग में मंदाब्जिंगी मिसती है।

ये कवि प्रकृतिन्मावा के सक्ये सुपुत्र हैं, इसलिये इन्हें इर बगइ ही प्राकृतिक सींदर्य दीख पहचा है। संदादिनी के समक्त लो, मान्य सुख गए—यह थो सुक्त हो गई ! किंदिनी की छुना से क्से ऐसा स्थान मिख गया है कि जिसे स्थानने

le,

द रिले-रानां की शायर ही कमी उसकी समियत करे; क्योंकि उस नम ' सो चंद्र कलंकी है, परंतु नायिका का मुख निरुक्त करं निसकी चौरनी हमेशा ब्रिटकी रहती है। बेनी-रूपी मानि रक्षा के लिये नियत हुई है, जो सन्ना पहरा देती है। मेर

र्थांथी कामी यहाँ डर नहीं है। अतः यह सब प्रकार ह

यहाँ सुखी है।

नेह-नद

विद्वर माँग वेदारि निव, उसवि-उसवि इठलातः । मानदु नागरं नेद्रशद्, सागरं हृ व समातः ।

मन्दु नगर नहरू, वागर हूं क वागत ।

सिंदूर से घपनी सौन प्ररक्षे वह स्त्री इतनी इटला-इटलाकर क्या बतनी है, माने पह दिसानी है कि विन-प्रेम की नदी
का प्रवाद साहर में भी न समाकर इपर-क्यर वह निकता हो।

मौग में मदा हुआ सिंदूर ही मानो पित-प्रेम-त्याहिनी का वह
माग है, जो इरय-सागर में भी न समाकर कह बता हो।

जो पित-प्रेम में पगी हुई हैं बचवा वसले परिपित हैं, ये इस
बात की वाईर करेंगी कि बासाब में यह नेम-क्यी नदी साहर
में नदी साम सकती—साहर में ही बया तीनों सोकों में भी
नहीं साम सकती। किर वेवारी नारिका इटला-उटलाकर पत्ते,
ही मना साएवर्ष है। किर वेवारी नारिका इटला-उटलाकर पत्ते,
ही मना साएवर्ष है। किर वेवारी नारिका इटला-उटलाकर पत्ते,

हैं। नेइ-नद की भला क्या हर !

मकही और मक्खी बामिनि केस कलाए ,सिर, मक्दी, को सो बाल ;

थन माद्यी तेंड फीस रही, करत न होत विहास। मकदी का जाल से कापने देखा ही होगा; कैसा मुंदर होत

है ! कारीगरी को देखकर सो दिमास श्वन्कर खाने सगत है। फिर कमी सूर्य की किएलें यह गई, तब तो ऐसा बन

कने लगता है कि देखनेवालों की आँखों में पकावींची बा जाती हैं। ज्या दृष्टि स्थिर कर एक-एक सूत पर नदर डाहिए भीर सोविय कि चनके जुननेवाले को ईश्वर ने क्या हमीटो री होगी ? स्पर्याशील जुलाहों की साखों पीड़ी गुजर गई, पर्ख इसकी नकल न हो सकी। आपने सब कुछ देख किया। धर्म साथ ही यह जानने को भी चत्मुक होंगे कि इस जाल का चरेरव भी फैसा महान् चौर चडितीय है। परंतु, यहाँ चाफर, चापकी

हतारा होना पड़ेगा ! देखिए, एक कोने में दुवकी हुई वह बेडील सकड़ी हो इस सींदर्य चौर कारीगरी के नमुने की स्वामिनी हैं। भीर, इस जाल के विजाने का उद्देश्य यह है कि इधर से गुजर-नेवाती भोली-माली भविस्वर्गं घोट्या देकर फँसाई जाएँ। देसा, फिनना बड़ा पहाड़ शोदने पर एक छोटा मुना निकता । "बहुत होत शुक्ते वे पहलू में दिल का ह जो चीरा तो एक बताए मूं न निकसा।"

88

शकरी और मक्सी

धान भी ध्यान रक्षिए, किसी सहकीली चींच की देलकर इसके मोह में मत पह जाहण ! भीर मुनिए। कवित्री की प्रतिमानी भी इस प्रकार की

इसके साह म मत पड़ जाहण ! भीर मुनिए। कवित्री की प्रविमा ने भी इस प्रकार की एक कपटमय बस्तु की के हावि-संसार में हुँड निकाली है। जियों के केरापारा सकड़ी के जाल के सहरा ही चमकीले भीर

ावपा के करावारा अक्षा के कारण के पार की किरणों की पश्चक भी करीलों की सहत-शांकि से बासर हैं, वनक भी वहेरण किसी प्रचार सक्षा नहीं हैं। विधि ने इस केशभारा को ऐसा सुंदर कौर नयनानंदराजी बनावा है कि क्रियने एक बार सन सर-

कार परवानरद्वावा बनावा है कि किसन एक चार जन पर इस हसकी हार्द को देश जिला, वह काँत गया, और उसका निकतन हरिकल हो गया। वहाँ वो सकही के काल में केवल मक्की-जैते हुए जंतु ही फेंसवे हैं, कोर काल स्व कोव का पढ़े, तो जाल के हटने की नीवल बातो है, परंतु पढ़ों तो

बा पहें, तो जाल के टूटने की नीवत ब्यावी हैं, परंतु यहाँ तो पेसा बहा भारी औप कॅसला है, तिसकी सामव्यें का थींसा दूर-पूर तक बनता है; चंचलता में, जो हवा से भी बहकर है, पत्र-पात्र जो इतना है कि विचीध पड़ने पर पहाड़ की तरह व्यवस रह सकता है, टड़भतिफ इतना कि एक बार प्रतिशा करने पर करोड़ों सामार्थ क्यों न का पहें, दिखता तक नहीं, जो सुरस १२ रिक-पानी इतना है कि प्यान में भी नहीं जा सकता। परंतु, यह सर्हें से क्या हुजा, यहाँ जाकर उसकी दाल नहीं गतती। जार

राजन का मामला है; प्रमु बचावें तो रक्षा ही।

पड़ते ही देवता कूच कर जाते हैं। एक बार इसमें फेंस गर फिर क्या है ? जन्म-बर यहाँ चहर लगाता रहता है; बेरा

फिर क्या है शिजन्म-मर यहीं चकर लगाता रहता है; वेही होता है; परंतु करे क्या शिक्षसहाय है ! निकल नहीं सहय

रेशम-रसरी

कार सटकारे विकत, सीन सुक्षेत्रल बाल ; रैशन श्वरी जान मृतु, वनकव कांसन साल ।

यह रोहा सींर्व और नवाबत का नमूना है। किनी कहते हैं कि नायिका के सिर पर काले, खंबे, विकने और महोन बालों का यह बेहावारा प्रेमियों के सनरूपी पक्षी को फँसाने के लिये रेशम की पतली, क्रोमल और विकनी रस्सियों से बना हुआ जाल-सा है।

काप जानते ही हैं कि बहुतेरे विश्वीमार पतियों को फाँसने है लिये जाल फैलाइट पैठने हैं । परंतु बनका तो यह क्यापार साचारण है, इसमें कोई विशेषका नहीं है, जो बल्लेकनीय हो । हों, कदिनी की सुष्टि में एक मण आविष्कार हुक्या है, इन्होंने कहे परिलम के याद यह माल्या किया है कि को-स्पी पर्क पटेलिया बाजीब हंग का जाल विश्वाबर एसमें साम् स्पी पर्कियों को संसाता है। वह कोई रेसा-वैसा विषक तो है नहीं, जो शाएको बसके जाल का पता लगा जाय; उससे जात ही रचना ही विषय है। वसके कोन्याले, लोने, पुराराले, पियनी, कोमल कीर मीने केशों का पारा विश्वे हुए जाल के **58**

सदश है। यह जाल कोमलता, चिकनाइट श्रीर मीनेन से ऐसा प्रतीत होता है, मानो रेशम की वारीक रस्सियों से ह हुआ है। क्यों न प्रतीत हो; यह जाल भी किसी ऐसे नैं पत्ती के लिये नहीं है। इसमें तो मन-खग फँसाया जायन जो इतना नाजुक है कि थोड़ी-सी स्ति से नप्ट हो सकता है इस जाल की तारोक यह है कि चगर और जीर जातों है स्वामियों को अपने-अपने जाल के इर्द-गिर्द क्षिपकर पविन की तारु में बैठे रहना पहता है, तो यहाँ पर बैठ रहने ही कोई चावरयकता नहीं है। जाल को हमेशा के लिये विहान उसकी स्वामिनी नायिका निर्दिषत हो जाती है। फिर वे अपने आप वों ही मन आकर इसमें फेंस रहते हैं। वन्हें !! फॅसने में ही मजा जाता है। बाप यह कह सकते हैं कि ए

थार फॅसने पर जाप इस जाल से हतुमानती की तरा सुदमरूप घरकर निकल बाहर होंगे, परंतु क्या जाप सन हे

भी सरमरूप घर सक्ते हैं ?

घेनी-विहार

पर बेनी तिय शांधा पै, वहै काज दरसाय ; मांगु ररझा दिल जामिनो, मनहु सपन बन मांग । कृषि उत्प्रेता करते हैं कि नायिका के सिर पर यह बेनी ऐसी

प्रतीत होती है, आनो नागिनी ने धने बन के किसी दकोठ स्थान में अपनी मस्तक की मिंख को धर रक्का हो खौर फिर इसके इधर-बधर फिरकर उसकी रखा करती हो।

इसके ह्यर-उपर फिरकर इसकी रचा करती हो।

बास्तव में उद्योक्त अनुहो है। नायिका का यने केरापारा
से उद्या सिर किसी यने यन से क्यादा अयोत्पादक है।
यो बाद से से कोलवाकार करते कोई प्रस्त भी जर सकती है.

पत्रे बत में को कलेका करा करने कोई पुत्र भी जा सकता है, परंतु कामिनी के क्रवणारा की सपनता इस प्रकार की है कि दिमारा इसको देखकर ही चकर खाने लगता है। कीर

दिसाता बताको देखकर ही चक्कर खाने लगता है। और सपन बन भी पेखा कि जिसमें घोर बंधकार एक खोर से दूसरे होर तक पैल रहा है—शाव को हाव स्वन्ता ग्रुपिकत है। फिर प्रवेश कर हस कानन का खींदर्ग को निरस्ता ही कैसे जा सकता है। परंजु दूर से देखने पर एक किनारे पर कोई प्रमकीली चीज़ देखकर दिल को पैर्य होता है। उसका प्रवास हरना चञ्चल है कि दूर-दूर एक के स्थान चसके

रनि-सनी आलोक से बालोकित हैं। किमी अकार गिरते-पड़ते वहीं प परुँचते-परुँचते यह मास्म होना दै कि जिसको और बुद्र सन

थे, यह सो एक सौंपिन की मणि, किसी पेड़ के महारे, इस ^{जा}

के एक किनारे, रक्सी है; और उसकी मालकिन, बेनी रूप सर्नि

मत-ही-मन उसकी गुति देखकर हर्षित होती हुई और उसके

रत्ता करती हुई उसके चारों और गूमती दिखाई दे रही है

ही निक्ला!

चरे राम ! यह तो बड़ा मूम हुआ; यह तो कुछ चौर हा बौ

क्रपोल-क्रन्यना

कत करोज तिय पर्मि कर पुनि-पुनि यो उप्रमात । सुनि सुनि के केली कथा, हवं न दिए संसात ।

रात को तायक चौर नायिका के बीच रति-कीहा तो हो चुकी, परंतु यह न समसिए कि फिर उस केलि-कथा का मसंग ही न ब्याया हो। बहुत समय बाद तक इस विषय पर टीका-टिप्पणी होनी रही : राजि में नाविका के सब कार्गों की एस प्रेंग-रस के चारवारन करने का सीमास्य वाप न था। हाँ. कई-कई श्रेग अत्यंत सीभाग्यशाली थे, तो पास की कई ऐसे भी भाग्यदीन थे, जो घटनाश्यल पर होने पर भी, इस सीला में शामिल हो हर अशा चलते से महरूम रक्रो गए थे: में मेचारे महेदुकी थे। धनका दुख तो स्वामाविक ही था। भक्ता किसी रसिक दर्शनामिलापी को नाटक के अंदप में ले जाफर और आँगों पर पट्टी बॉधकर छोड़ दिया लाय, सो क्या यह दुन्त्री न होगा ी यही हाल था मेचारे उन धांगी का ! एस समय सो दनको यहा क्रोध आया. परंतु करते क्या ? निरसद्दाय थे। और उनको निराश करनेवाले भी तो उनके खामी-तायक-नायिका ही थे 1 चाक्तिर किसके जागे दुखड़ा रोते ? चमक्ते हुए

श्रीपुश्रों को पी गए। परंतु हरव को जानने के लिये रह-रा-कर दिल में श्रानेवाली उत्सकता को मन से न मिटा सके। पाठक ! आप यह जानने के लिये उत्सुक होंगे कि इस र्पा आरत में पड़े हुए ये खम कौन-कौन थे। यह यी नायिका है हैरा पाश से लटकी हुई और उसके कवोलों के सहारे, तनहीन मन मलीन, पड़ी हुई दो लटे'। वेचारी इन्हों दुखियाओं पर आधा पड़ी थी। पर "मरता क्या न करता"—इन्होंने भी ए तरक्रीय दूँ द निकाली : ये कपोलों की शरण में गई, जो स्नर्क महोस में हो रहते थे। कपोल बढ़े सहदय थे; इनकी इस सा **पर** उनको दया चा गई । फिर शरणागत की रत्ता करना परमध्ये सममकर इनका दुःख दूर करना उन्होंने अपना कर्तव्य माना, सटों की इच्छा पूरी की गई-प्यार दंपति की झीड़ा हिंग प्रकार रही, चसमें क्योलों ने क्या पार्ट खेला इत्यादि सब हाउ षदाया गया । ये सच बार्ते कानाहुँ सी में क्योली ने सटी की सुनाई । सटौँ का दुःश्व दर हो गया । वे तो अवख्रातंत्रस में मध हो गई, और बार-बार मारे खुशी के क्षगों बदलने । मना इनहे होटे-से हृदय में यह जानंद-होत कैसे समाना है सो तो धार वे यह दूरव भारतों देख सेती, तो न-जाने क्या करती !

भीरों की भीर

काति केवाई कार्त जाति ही, यह औरत बाँ मीर ; सट सीरा बाए बेरनन, विवाधन कवि कीर ।

नायक-रायिका ने कापने सकान में यहीं के मीजूद होने के कारण, मिलने का भीका न पाकर, एक तरकीव दृंख निकाली। नायक ने सैन-सैन करके भाषनी जिया को सांदेतिक स्थान गता दिया और स्वयं उम तरफ चल पड़ा । मालूम होता है यह स्थान कालियी-कुल का कोई कर्यक्त ही था, जहाँ चिरकाल तक इस कामिनी और कांत ने फेलि कर के अरूपनीय आनंद लूटा होगा । नायिका तुरंत साइ गई; और नायक के चले जाने के छुछ समय बाद हुछ बहाना बनाकर उधर रवाना हुई । परंतु वेचारी का रूप-सींदर्य ही मैरी यन गया । लुटेरों ने अधानक आक्रमण किया । इसके शरीर से निकलवी हुई सुवास ने इन बाइकों को सेंघ पता दी। भीरों को पदा-पराग का पता मिला, वे भनकार करते हुए चारों और से चा जुटे और नाविका पर मेंहराने लगे। उपर सर से जटकती हुई संबी-संबी जटों को नागिनियाँ सम्मर-कर एनके स्वभाव-रात्रु मयूर एन्हें मारने दौड़े। व्यथरों को पके दृष्ट विद्याप्तल जानकर कीर लालच को न रोक सके--- उनके सुर्याशु-रूप ललाट में न रहकर अधर में ही अटबी हुई हैं।

२२

कविजी ने इस शंका का यों समाधान किया है—पड़ी

का व्याधार वो ललिव ललनाव्यों का ललाट ही है; परंतु हैने

माकर्पित कर के अधर में ला रक्सा है।

र्रात-रानी

सुधाकर श्रपनी शीवल किरगों को फैलाकर सोम हत्व^{हि} जड़ी-बृटियों को असत प्रदान करता है, उसी प्रकार यह लहाँ भी अघर को असृत प्रदान करता है। परंतु इसे क्या पड़ी, ही विना माँगे ही अधर को दान देने दौड़ता है। यह तो ही चनोले चमृत की ही करामात है कि स्वयं लजार से द्रवित हैं कर अघर में जा ठहरता है, जिससे कि व्यारे की व्यास ति^{त्री} कुछ प्रयास के ही सुक जाय । या रवि समय पवि को प्रेयसी है खलाट तक पहुँचने का कहीं परिश्रम न करना पड़े, यह सो^ई कर प्रेमदेव ने अपने पुरव-प्रकाश के प्रमाद से झमृह की

कमल की केसर

र्रतासमय बेंदी दिए, तिय सुख में। मन लाल कमल विकस्था मनहु, बीच पराग खुदाय ।

इ एक नायक के मनरूपी कैयरे में खोंचा हुचा, रति 'का प्रिया के मुख-पद्म का भाव-चित्र है। सीजिए, इस

ोर कीजिए और इसके मनमानंद में भग्न हो सुख-सागर ते लगाइए । दिन का समय है । प्रेम-रूपी पौदे के विकास ाये वसंतृषा-सा व्यवसर है। इघर नायक चौर नायिका

ोन्मस हो रति-कीडा चारंभ की है, वो चघर वसी समय -सिकलरूपी सुखद राज्या पर सोती हुई संग्रेजिनी के सा**य** । भी कीड़ा शरू की है । अपने-अपने प्रियतम की गोद में । हुई नायिका और पश्चिनी पूर्ण ज्यानंदोलास को पा रही र्य-करों के मुखदायी स्पर्श का अनुभव कर कमलिनी

विकारा पाया है, और नायिका ने नायक के हत्य धानंद से एक धनोसी धामा धारता की

म का चेहरा लालवर्ण हो गया है, तो उपर । गर्भस्य लालीको घटा डिटका दी है। 💲

ानी ने संकोच को छोड़ भापने चंदर की ै

... सुंदरता इस प्रकार दरसा दी, जिस प्रकार नायिका के सुर्व चेहरे ने केसर की पीत बेंदी ! जिनको देख-देखकर नायक

महोदय ध्यौर सूर्यदेव के मन-पृग छलींगें मारने लगे। मता इस प्रकार की दर्शनीय हरयावली कविज्ञों के मन में क्योंन चुभेगी; इसकी तो स्मृति ही रिक्षकों के मन को मुग्य कर

रेती है।

राष्ट्रकों की सजा

भ कमान काम मून लिए, मीन वरीनी जाल इ दमलिन सांग भेंगा मये, किए सबनि बेहाल। पारों कोर राजुकों की फीक पिर काई। इसर से संजन पवियों के मुंड-के-मुंड अपनी अपलता और कटीलेपन की

फिर से हीतने के लिये अपटे; यरिवम से खुगों के समुनाय पवन-वेग से अपने तीरो सींगों को कुकाकर अपने नेत्रविस्तार की बापस सीटाने को क्षपके; पूर्व से कमर्कों की क़तार अपने दिल को कहा करके, व्यपनी कोमलवा, रंग, स्निग्धवा, सींदर्य इत्यादि सर्वस्य का धपहरण करनेवाले पर व्याक्रमण करने के लिये पैर न होने पर भी चठ दौड़ी; दक्षिण दिशा से, समुद्र की कमी न झोइनेवाली मझिलयों ने भी चपने चाकार और पंचलता की चोरी करनेवाले को दंह देने का इरावा करके चपने वासस्यान को छोड़ा; चौर चारों ने मिलकर चारों ओर से घाषा बोल दिया। परंतु इधर नेत्र भी पहले से ही होशियार में । छन्होंने जर्मनी की तरह पहले से हो सबाई के लिये तैयारी करनी शुरू कर दी थी। अतः ये इस अचानक आक्रमण से वनिक भी भयभीव 🗷 हुए, और अपने सिपहसालारों को रात्रुओं

mander-in-chief) समावने, बाँके दीर भू ने अपनी हमान को तानकर उत्तर और पश्चिम की ओर भवानक वाण-वर्ग करनी प्रारंभ की । हजारों की संख्या में मृग कौर खतन वप-शायी होने लगे। बहुत-से तो डर के मार्र ही मर मिटे चौर जो बाकी बचे, वे दुम दवाकर भागे। बीर बरौनी ने अपना जात फैलाकर दक्षिण से व्यावी हुई महातियों का मुफायला किया। ध्यौर सबको परंदे में फेंसा लिया। अन बाफ़ी बचे कर्महोत कमल, सो चनका बचा-खुवा खजाना भी प्रवीण पुर्तावर्षों नै भ्रमरों का भेप बनाकर खट लिया, श्रीर उनको डरा-यमका कर थों ही घला बता दिया । तीनों बीरों ने अपना-अपना काम कर दिखाया, और अपने सर्वगुण-संपन्न स्वामी से सम्मान

पाया । राष्ट्रकों को सबी सका मिली ।

रूप-नगर के राजद्वार

पुतरी प्रहरी, चलक पट, बत्तमा वरीनी बार ; रूपनगर के नैन है, बानहु मायाहार। पाठक ! ध्वापने च्यनेष्क नगर च्यौर दुर्ग ऐसे होंगे; अनके स्वार्जों पर पहार हेते हुए पहरेदारों. बहे-बहे लोहे के फाटकों

नार्जी पर पहरा देते हुए पहरेदारों, बहे-बहे लोहे के फाटकीं रेए जन पर क्षमें हुए लोहे के तीले मालों को भी कावरय देखा गा। परंतु क्या कभी जावने ऐसे कारवर्यज्ञक कीर अपी-गर । परंतु क्या कभी जावने ऐसे कारवर्यज्ञक कीर अपी-गर कदार भी देखें हिस स्ट्र-नगर के हारों का हम क्या चैन करें! यदि क्याच स्ट्र-नगर के राजहार देख लें, तो कापका

गर के चंदर के ऊँचे, रमछीय चौर दर्शनीय प्रासारों को जने का मन हो न करें, ऐसे सबीग धुंदर हैं ये नैन-दार! संसार-भर के साईटिस्ट (Scientisto) तथा चढ़े-रे कांग्रेगर यक हारे, चरंतु ऐसा द्वार न बना सके । वि हमका वर्णन सक न कर सके चौर विश्वकारों से

तका वित्र तक न इतरा । इन इरकाओं का व्याचार ही तेपता है । दोनों पुतती रूपी यहरेदार हिन-भर इरकाओं है एक कोने से दूसरे कोने तक टहल-टहलकर पहरा देवे रहे हैं। कोई सेर व्याइसी इनकी नवर से वचकर नहीं जा

का मामना करने के लिये मैजा । कर्माडरहनचीर (Commander-in-chief) अयावने, बाँके बीर भूने अपनी बनान

पाया । राधुकों को सबी सन्ना मिली।

को तानकर उत्तर स्त्रीर पश्चिम की स्रोर मयानक वाए-वर्ष करनी प्रारंभ की । इचारों की संख्या में मृग और संजन घंप-शायी होने समे। बहुत-मे तो हर के मार ही सर सिटे भीर जी याकी यने, वे हुम दवाकर मारो । बीर वरौनी ने अपना आह फैलाकर दक्षिण से बाती हुई महलियों का मुकावला किया, भौर सबको पर्द में फैंसा लिया । अब बाकी बचे कमेरीन कप्तल, सो चनका यचा-खुवा खवाना भी प्रवीख पुनिवर्गों ने भ्रमरी का भेप बनाकर खुट लिया, और वनको हरा-धमधा-कर यों ही पत्ता गवा दिया। तीनों बीरों ने व्यवना-व्यवना काम कर दिखाया, और अपने सर्वगुण-संपन्न स्वामी से सम्मान

ोर नहीं वय संकता । उसको वे व्यपने माया-जाल में फँसा री लेते हैं। धव दरवाजे के कपाटों का हाल सुनिए; वे पल-पल में खुसते गैर धंद होते रहते हैं; वे पहरेदारों की आज्ञा का पालन

रूप-नगर के राजदार

न्दने में छझ उठा नहीं रखते। धनके सोने पर यंद हो जाते हैं, प्रौर जगने पर ख़ुल पड़ते हैं। ध्यौर चदि वे किसी व्यपने प्रेमी ने देखना चाहते हैं, तो चानिमेप होकर खुले रहते हैं। इनमें

ने डोकर एक रज का कछ। शक प्रवेश नहीं कर सकता; नहीं हैं। रूप-नगर कभी का कुरूप न हो गया होता ⁹

इतने कोमल होने पर भी ये कभी-कभी वज्र का काम कर गते हैं। ये वरौनो-वालरूपो आलों से सुरसित हैं, जो भत्यंत तीले और दूर ही से हृदय को वेधनेवाले हैं। ये भाले निजों ही के हृदय में धुसकर पात्र पैदा करते हैं, और सिज ही। इस द्वार में क़ैद फिए जाते हैं; दूसरे नहीं। शत्रु को इनमें खट-कते हैं, इसलिये बाहर फेंक दिए जाते हैं। बरीनी के भारतों से पायल होने और इस बंदीगृह में सजा पाने ही में मजा है। भपने मित्रों के विरद्द में कभी-कभी इनमें से जल-धार बह्कर सबके दुखों को दूर कर देती है, और कभी-कभी दूना कर देती है। इस जल-घार में शब्ब और मित्र, दोनों बद्द जाते हैं। यह भाराभी कभी हर्ष की, कमी कोच की, कमी दया की,

24

सकता । इनकी कभी बदलो नहीं होती । वेबारे पुराने विश्वास

पात्र नौकर हैं; जादू के पुतले ही समम्बे ! वे कुछ योलते नहीं,

फेवल अपने भिन्न-भिन्न भावों को हो फलदाते हैं। इनमें १या,

करुणा और अनुराम का भाव देखते हैं, ता रूपनगर के दरांग

रविनानी

भिलापियों की हिम्मत वेंध जाती है, और वे तिधनक अपने

मन को इन पहरेदारों के सुपूर्व कर देते हैं। परत याद रिपप

। यह द्वार किसी के मन को रूप-नगर की खबि दिखारर यापित

महीं सीटाते: चसको फिर हमेशा के लिये वहीं रहमा पर्गा

है। यदि इनमें कोध इरवादि का भाव देखते हैं, ही किसी की

इनके पास तक फटकने की हिम्मत नहीं होती । ये रिन भर

पहरा देते हैं; क्यीर-क्यीर पहरेदारों की धरह रात को म जा-

कर चाराम करते हैं। कभी कोई ऐसा दर्शक था जाय, जो हि इनका परम मित्र हो. तब भने ही ये जगकर चारते मित्र को

बार्यालाय का ज्यानंद-प्रदान करें, बरना विना कोई कारण पे

बहते हैं। बनको हाय से हुने तक की चलरम नहीं है, फिर ती

कभी महीं कमने । इन्हें जमने की धावश्यकता हो क्या है। तर ये बरीनी रूपी बन्सम संगे हुए पशकरूपी कपार्टी की बन्दी

तरह में बंद कर सोते हैं; और इतने होशियार और चंदत हैं कि किमी के नगर की चहारहीवारी की बूरी चाँगों से पूर्त ही सजग हो जाते हैं, कौर इनहें चेतन होने ही मायान्तार ग्या

२९

ही लेते हैं। धव दरवाचे के कपाटों का हाल सुनिए; वे पल-पल में खुलते भौर बंद होते रहते हैं; वे पहरेदारों की बाहा का पालन करने में कुद्र चठा नहीं रखते। उनके सीने पर बंद हो जाते हैं, भौर जगने पर ख़ुल पड़ते हैं। और यदि वे किसी अपने प्रेमी

को देखना चारते हैं, तो चानिमेप होकर खुले रहते हैं। इनमें से होकर एक रज का करा वक प्रवेश नहीं कर सकता; नहीं हों रूप-नगर कभी का कुरूप न हो गया होता ?

इतने फोमल होने पर भी ये कशी-कभी वज का काम कर जाते हैं। ये परीतो-धालरूपो आलों से सुरस्तित हैं, जो ष्मत्यंत सीसे क्यौर दर ही से हृदय की बेधनेवाले हैं। ये आले मित्रों ही के हृदय में प्रसकर चाव पैदा करते हैं, और मित्र ही

इस द्वार में हैंद किए जाते हैं; दूसरे नहीं। शब् सो इनमें खट-करें हैं, इसलिये बाहर फेंक दिए जाते हैं। वरीनी के भालों से पायल होने और इस बंदीगृह में सन्ता पाने ही में सन्ता है।

व्यपने मित्रों के विरह में कभी-कभी इनमें से जल-धार बहकर संबंधे दुखों की दूर कर देती है, और कभी-कभी दूना कर देती है। इस जल-धार में शब्ब और मित्र, दोनों बह जाते हैं।

यह धारा भी कभी हुर्य की, कभी क्रोध की, कभी दया की,

₹0

कभी करुणा की, कभी वेदना की और कभी प्रेम की होती है थौर भिन्न-भिन्न श्रसर रखती है। प्रत्येक द्वार में संसार है

रति-रानी

सब सुंदर मुंदर चित्र टेंगे हैं। फिर इनमें तीन 'खेत र्याम, रतनार' घडे हैं। जो--

ग्रमी, इलाइन, सद भरे, रदेत श्याम रानार। जियत मस्त भुर्तेक-सुर्वि पस्त, जेहि चिनवत इक बार ।

कपटी काम

मैनन पुतर्श मैन यह, है पलकन की कोट ;
शांठ भाग ताके तानकर, हरन जान करि कीट ।
नायिका के नेशों में जिनको काप पुत्रिक्त समामे हुए हैं, वे
पुत्रिक्त में नहीं हैं । ये तो क्याँकों में सदन महाराज विराज रहे
हैं । काप पत्नकों की कोट से टांट्रिक्पो बाखों से निशाना ताक-कर ऐसी कोट करते हैं कि प्राय हर लेते हैं ।
माख्म होता है कि शिजनों से करकर सदन सहाराज ने नायिका के नेशों को क्यापना नियास-क्यान वानाया है। जून एक कीने में कापास किता है। यहाँ वे प्रश्त स्वर्ग स्वा गया, वा राक नहीं; क्योंकि जान वे करकर को की शरक में का पर सुत्र पत्न स्वा

राक मही; क्योंकि जब ये डरकर की की शरक में का गए, पव भोते शिव हन्हें क्याकद सकते हैं। परंगु ह्यस्त क्यमी कारत से बाब नहीं काले हैं। किर नहीं नाय कीर कमान, फिर वही पोड़े और वही मैशन। वचों नहीं, शिवजी का वी जब बर रहा नहीं, फिर वे कब चुव वैठ सकते हैं। वहले सरे मैशन शिकार किया करते थे; जब वी आँकों की जीट से खालेट करते हैं। इन कालों के इतनी अनोहर साल्य होने का रहस्य क्या प्रकट हुआ है। इनमें जो प्रत्यक कामदेव विशाज रहे हैं; फिर 3.5

भना क्यों न ये इतनी संदर प्रतीत हीं। नायिका के नेत्रों के सामने से गुजरते ही एक चोट लगती थी, मगर इचर-उप देखते हैं, तो कोई नहीं दिखलाई पहला था। इस शिकारी य

हमें भाष पता सगा है। यहले हम नहीं जानते थे कि यह इत गुरुजी की कारगुवारी है।

मगर एक बात है: यदन महाराज ! सुग का वेरा बनाकर

मत्त्रयों के सतहती सुनों को मारने से बापको मुगवा की कोई महत्ता नहीं मालम होती ।

भाषाची की माधा

सायाची नैता चरता, दिवर, पात बाद रात ; यनता कमल खंत्रन कमू, ज्ञान, बहोर, बाद मांत । ये नेत्र **यहे नायाची हैं—ये पूरे** जाङ्गर हैं। देखते नहीं द्वी

कि में फिस प्रकार भीकें-भीके पर भिन्न-भिन्न भेप चनाते रहते हैं—कभी ये दुसने चंचल बन जाते हैं कि चयतता स्वयं हमकें सामने चपती हैं: कभी ये बहत विस्फादित हो जाते हैं. तो कभी

पीन दीन बनकर पैठ जाते हैं—सानो सचतुन्व ही वे ''नैना कई ग्ररीय हैं, रहत पत्तक की कोट'—कभी सरोज का-सा सुंदर स्परूप बना लेते हैं, तो कभी अंजन के सत्तान 'चंचल बन जाते हैं, कभी ग्रुग की-सी ओली-आली हाँछ बना लेते हैं, वो कभी योन की-सी अपलात हिलताए कर लेते हैं, तो कभी कभी स्पार्थ हिलताए कर लेते हैं, तो कभी-कभी स्व एस स्पार्थ हो जाते हैं कि स्वयं स्वरता भी स्तुक्वाती है! देशी हन में जो की क्याया ! उन्होंने तो कशस्तर देश हैं।

ष्ठामिनियों को भी किरत दे दी। पोलीटिक्स में भी ये पूरे भवीख प्रतीत होते हैं। वन जैसा भीका देखते हैं, तब बैसा दी रंग-ढंग, बैसा दी दाव-भाव, बैसी दी सुरत-राकल बनाकर तिस ξģ

तरह हो अपने कार्य की सिद्धि करते हैं। जब नायिश र

कोई चिता होती है, तब उसके नेत्र अतिमेप हो कमलना की पंखुड़ियों की तरह खुले-के-खुले रह जाते हैं, धपना सो

में रात्रि के कमलों के सदश सकुवा जाते हैं। जब मारिक

को कामोदीपन दोता है, तो नेत्रों में काम हा जाता है, बी में मीन के समान मुखहपी खरोबर में तैरने झगते हैं। अ

रवि-सनी

नायिका के हृदय में भय चत्पन होता है, तो नेत्र राजन के

समान चंचल हो जाते हैं। जब नायिका को व्यार की प्रतीहा होती है, तो प्रेम-दृष्टि से नेश टक्टको सगाकर नायक के

माने के मार्ग को देखने क्षगते हैं। जब दीनता दिखतानी धौती है, तो मूग बनकर दवा की भीरा माँगते हैं। ये **बहे बाँ**ने तीर-दास भी हैं। जब इस नेत्ररूपी कमान से मुख्तक्षिक किम

के तीने नीने तीर कतने हैं, तो कड़-बड़े वोग्राकों को पुत्र-वेड से पीठ दिखनाकर मागना पड़ता है। कभी ये नेत्र काम-इप्टिमें काम समाम कर कालते हैं, तो कभी सोप-इष्टिसे

शिकार रेजने सगते हैं। कभी वे भय-दृष्टि से भगा देते हैं, तो कभी ग्रेम-इटि ने पारा में बॉफ्डर कागगृह में बाह देने हैं।

इन नेत्रों की मुद्दाला का क्याँन करों तक दिया आय, वन इसी बात से कार इनडे मीर्य हा चतुमान हर शीविएस

कि कमल इन नेत्रों को कमनोयता को देशकर सदा जल में रहा हुआ सूर्य को जलांजलि देता उदला है। इस कठोर तप से सूर्य को प्रसान करके सरोज नेजों के सहस सुंदरता की प्राप्ति का बर औराना लाहता है। इन नेजों को-सी नाजाप हाथि पाने के लिये हो कुरंग कानन का संवन करते हैं। इसी

शायाची की माया

34

प्राप्ति का बर औरता भाइता है। इन नेग्रें कोन्सी नायाय इथि पाने के लिये ही कुरंग कानन का संवन करते हैं। इसी तरह भीन भी जल में धोर तथ कर रही है। इसी हेतु से पकोर चंद्रमा को चाकरो कर रहा है, और खंजन भी इसी विका के मंत्रन की दिक्क में कही किर रहा है।

मेम-पीड़ा

मीन बमल जन में रहें, पे नैनन में भीर ; पाह, बरते पीर वे, हनहू बरते पीर । कीर कमलों का जो खाधार है, वही नैनों व

मवली और कमलों का जो चाजार है, वही नेतों का चार्यय है। मीन और कमल जल दिना जोविद नहीं रह छक्ते, किंदु नैन नीर के चामय-दाता हैं। चाम पाठक स्वयं सीच लें, इनमें से कीन से महत्ता में यहे-बहे हैं। मीन और कमल वो गुलामें

रे जोग र नहेण न पर्यक्ष है। नाम कार काल वा पुनाम के भी गुनाम हैं, नैनों का गुनाम नीर वनका मालिक है। किर भाग के नी माना कैसे पा सकते हैं। यह कवियों के किर समान कैसे पा सकते हैं। यह कवियों के किर हैं। यह किस में किस ने ने ने किस करते हैं। यह किस ने मैदने हैं। यह किस ने मैदने हैं। यह का किस ने मैदने हैं। यह का किस ने में किस नहीं से किस नहीं

! हमारा क्या बिगहता है—दुःख होगा, तो दनकी

होड़, गोड़ फोड़कर, ज्यर्थ कहा करानेवालों को हम सचेत कर हैं। हमारे फिर को भी ये नेज अपने चौंत्यरे के प्रभाव से पीतित करते हैं; परंतु यह प्रेम-पीड़ा है! जिनको यह पीड़ा होती है, और जिनको नहीं होती, ज्य रोनों को हो माग्यसाली सममना वाहिए। जिन्होंने इस पीड़ा का अनुभव मारों किया, वे हो आनंद में हैं ही, परंतु जिन्होंने इसका मचा चला है, वे भी इसी में परमानंद का अनुभव करते हैं, और

• परमेरवर से इस पीड़ा की घड़ाने की ही प्रार्थना करते हैं।

होगा। परंतु यह हमारा कर्तव्य है कि इन बड़ों की होड़ा-

चपलता की चाह्

ेंचंचतना माधन हमें, बारदा चंचत नैन ; बैधे को तैया हवे, सबहूँ झन्य हचे म !

चंचलता को इस चाहते हैं। चंचलता की चटकीली वर्षी सबके चित्त को चुरा लेती है। जहाँ देलते हैं, चंचलता का

चमत्कार नकर पड़वा है । सर्वेत्र इसके गीत गाप वा रहे हैं । कवियों के काव्य में भी इसी को क्या मिलगी है। एक साहब करमाते हैं----''ती पुँचट को कोट करो, पर बंचत तैत

हिएँ न दिवार !" तो दूसरे शायर, जिन्हें चंचलता की पा पढ़ गई है, कहते हैं—"कुछ भी मता नहीं तो वार पुतपुत न हो !" यह सब छुछ माना ! किंतु किसी ने यह भी कमी

खयाल किया कि चंचलता को सब इतना क्यों चाहते हैं ! ये नेत्र सदैव नाचते ही रहते हैं ! राव में, नित्रा में भी ये चुप नहीं रहते । स्वप्न-संसार में दीड़ सगाया करते हैं—पानि

से पैठना को ये सीखे ही नहीं । इनको पंचलता के कारण ^{करी} बहों की नाक में दम है । काव यह निवम है कि वो जैसा होग है, ससको पैसा ही इचका है । काव नेत्रों को पंचल बस्तुर्मों से पड़ी मीति है, क्योंकि वे खुद स्वमाव से पंचल हैं । पाठ^हें

चपलता की चाह श्राप समफ गए हॉंगे कि चंचलता के चसके का क्या भेद है। चपलता के फारख ही हमें भूग छलाँगें सारता हव्या व्यच्छा

38

लगता है। इसीलिये मीन जल में तैरती हुई सुंदर लगती है। इसी चंपलता के कारण चमकते तारे खाँखों को खच्छे लगते

हैं। चंचलता के हो कारण हमें वालक माते हैं। वंचलता के ही

कारयः इस चिड़ियों को चाइते हैं।चंचलता के प्रभाव का कहाँ

^{'च'} यमनमा रहा है, अया—वंबलता में 'ब', तो वपहता में 'व', तो पुतबुतापन में 'ब'—'च' की अच्छी बत रही है।

सक वर्णन करें: इसने 'च' अचर तक को ऐसा अपना लिया है कि चंचलता के पर्यायवाची राज्यों में जहाँ देखते हैं, पहलेपहल

प्रेस का प्रभाव

पिय पै जाइ कीन, कानन पडले सेई के: पान प्रेनरस सीन, सिवि आए प्रिच बैस बारे ।

नायिका के नेत्रों ने पहले कानन का सेवन किया। वर्री

पकांत में बास करके उन्होंने उदाटन, बशीकरणादि मंत्रों स सापन किया, जिससे उनमें जारू की-सी अथवा चु बढ़ की-सी भाकर्पण राकि भा गई। चन्होंने पहलेपहल इस ताइत को अपनी

प्यारी सस्ती नायिका के त्रिय पति नायक पर ही कायमाया। **छन्होंने प्रेम-रसरूपी पान नायकजी को खिलाया, और आप**

पाठक ! जापने कामरूप देश की आरचर्यजनक क्या-कहानियाँ सुनी होंगी। वहाँ की कामिनियाँ आहु-होना करने में बड़ी मराहर हैं। वे जिस सुदर पुरुष पर बासक हो जाती हैं, उसे पान खिलाकर वोता, बैल या मेंहा बना सेवी हैं। चनको नित्य व्यपने पास रहाती हैं और अब इच्छा होती है, तब एन्हें पुनः पुरुष बनाकर प्रेम-केति करती हैं। बनके बार् के आज में फॅसकर वेवारे मनुष्य फिर कभी बाहर नहीं निकन्न सकते। भाजन्म जानवर ही बने रहते हैं । यही हाल हमारे

एसको लेते ही बैल बनकर सिंच बाए।

नायबजी का हुआ है। कान तक वही, सुंदर-सुंदर कॉर्सों ने, कन पर भरना प्रेम प्रकट काके, वनको वैला-तैसा सीधा-सादा और भोला-भाला पद्य पना लिया, और वे वनकी हच्छा और खाता के भासुमार ही सब काम काने लगे। चाप कहेंगे कि वन्होंने कपने

प्रेम का प्रभाव

४१

प्रेमी को पैल बनाकर बड़ा युरा काम किया, परंतु क्या चाप मही जानते कि बैल धम का काबतार है, उससे संसार की यहा कायरा पटुँचता है। उस पर शिवजी की बड़ी कृपा है। परंतु हाँ ! एक बात का डर अधरय है-जो कहीं वह पारवात्य सभ्यों के द्वाप लग गया, तो बेचारे की बड़ी दुर्दशा होंगी। देखते नहीं, श्वाज इन धर्म-शोरों की इस धर्म-भूमि भारत में साखों की संख्या में हत्यायें होती हैं कौर इस पूँतक नहीं कर सकते। जिनकी माता गायों के दूध, दिश भौर पृत से हमारा बीर्य बनता है, और उससे हमारी रोतान करपम द्रोकर किर वही अमोल अमृत समान रस पीकर पलती हैं; उन्हीं हमारी प्यारी माताच्यों और प्यारे भारमें की हत्या हम अपने ही देश में होती देखते हैं, और दर या लालय-वरा गुलामों की वरह सदे जाते हैं। मला यह इत्या इमारे माथे नहीं, हो कौर किसके माथे हैं ?

हिंदुभर्मावलंबियों को चाहिए कि वे व्यवने कीर व्यवने पूर्वजों के नाम को सार्वक कर हिसावें। व्यव भी समय

है। क्या इन्हारों का सामना करने की इनहीं हिन्स मरी ?--श्यवस्य है ।

हे हमारे ध्यारे मोत्रान ! तू मोडर्बन मिरि घर गार्रे पाने,

बंशी पर सील मान्साकर गोरियों की गमरियाँ घोड़ने की गोरम महत्त करने कीर इस मुन्हार सर्वेत्रिय गोपन के

मानकों के दाध में बचाने कब बारेगा ? जल्द बा ! बर

हो यह मितम हममे सहा नहीं जाता !

चित्र से चिढ

18

सासि सुसमा निज रूप की, नैन फॅपत हर बार : शिम को उदियं में न तठ, लेवाहि तुरत उतार।

नेत्र जो बार-वार में पते रहते हैं, इसका कारण वह है कि ये प्रपने सौंदर्भ को देखकर इरले हैं कि कहीं कोई इस सुंदर सीनरी', इस नायाय नजारे को देखकर तुरंत व्यपने दिल के रॅंडफैमरे में इसका फोटो न ले ले। मगर माल्स होता है, इन रेचारे भोले-भाले नेत्रों को यह पता नहीं है कि ये चित्रकार भी पड़े राजव के लोग होते हैं। ये व्यपनी चातुरी से खुद **भाँ**लें नहीं, भाँलों के अक्स को पानी में देखकर जसी वक्त हस्वीर ले लेते हैं । मुराल-सम्राट श्रकवर के राज्य-काल में, उसी के दरवार में के वित्रकारों में से, एक ने इसी मकार एक विश्र तैयार करके वादशाह सलामत की भेंट किया था।

यह दिल ऐसा-वैसा कैमरा नहीं है कि जिससे कोई वचकर निकज सकता है। आखीं काहा क्या, इसमें तो यार लोग सारे यार का ही छाका श्लीच लेते हैं। और फिर उसको

खानप दिल में लगा देते हैं और तबियत में जोरा आते ही

एक नवर कार फेंक देते हैं—"दिल के आईने में है तरीरे यार, जय वारा गर्दन मुकाई देल ली।" इसी दिल के मार्दने में दुसाई देते हुए कोई कहता है—

"बेमुख्यत बेहली से शीशर दिल की व तीर : मह वडी फाईना है, जिसमें तेरी तस्वीर है।" धात: नेत्रों को चाहिए कि चपने नायाय नमकीतपत पर व्यव इतना नाज करना छोड़ हैं। इन वैचारों की शायर वर्ष माल्म नहीं है कि एक-दो नहीं, हजारों की तारार में इनके फोडो की कॉपियाँ तैयार होकर व्यव वाजार में विक रही हैं। एफ गात और है, जापने नायिकाओं को देखा होगा कि जपने र्सकोने मुख को दीठ से क्याने के लिये वस पर दे होती 🕻 देव-सगर मनोजा क्या होता है-गड़नी है सागन सगी रिए दिठीना दीठ।" यही हाल इन चाँरों का है। ये तो बार-बार इसलिये फॅफ्ती हैं कि जिससे कोई इनकी तस्वीर न से से, सगर बार-वार फेंपने के कारण वे चौर पंचारा ख्यसूरत माल्म होने लगती हैं । नतीजा यह होता है कि सोगों की समीर सेने की क्वाहिश कौर दुगुनी हैं। वाती है।

दिय जन मेरिर मीन है, पलक प्रकृट दुरि जात 🕫 दुवकतः हिकासन चहत, ताही में प्रति जात ।

इ.सु'दर सरोवर पर किसी का प्रमोद-प्रासाद—कानंद-प्रवन हारी पर पैठी हुई नाविका पानी में माँक रही है। उसके नेत्रों विशिष, पलक व्युलने स्पीर फेंपने स्टी किया के कारख, कभी में दिखाई देता है और कभी अदृश्य हो जाता है। नीचे की जिमानी दीवानी के बहकाए हुए नायक महाराय विराज-

ै। घापकी नचर जलाशय में पहते ही बापने देखा कि ए मद्रलियाँ पल-पल में प्रकट होकर जल में गायब हो हैं। वेबारे को ऐसी महतियों का कभी दरान तक नहीं

रा, इसलिये मन में पाप समा गया। आप तुरंत जाकर । चाप, जात पानी में हालकर कर बंचन बहतियों को

क्का या तो इनको और ज्याना बेक्क्रूक बनाने के इरादे से नहीं हटी ; और यदि उसे यह मालूम न हुआ होगा ारी भारतों के प्रतिविध को ही महली समग्रकर पक-हरें हैं, वो शायद वह चनके शिकार करने के चातुर्य को

का प्रयस्त करने असे ।

प्रेस-पाश

ही देगने के लिये वहाँ हटी रही । युवक महाराय में ही मान थे। दिन-भर बीन गया पर महती ही भापकी सबक में कुद नहीं भाषा । सोचने

भाजीय महाजियाँ हैं-सामने दिखाई देती हैं, प

नहीं फैमवी। इसी वरह इन मद्मलियों के जार

केंग्रे से ।

बात में हारकर आपने उत्तर की और रहि केंब्री में प की कमी स रही। इसको नाविस के नेपीं क

को जाकर खुद ही बलफ गए। इतनी मेहनत का

मिला ।

समगढ़े ही बाप वाविका के नवनरूपी मीन के व का फॅसे—प्रेम-पारा में दलम्ब गए । देखा आपने !

काम की कसीटी

केंग्रिन हृदिधि कान में, तिरक वस्तु सुर्यदेन ; श्वेदरता को जॉविके, रचे कमीटी नैन ।

विधि ने स मार में करो हूं। सुरात्त्रचक बस्तुओं की सृष्टि कर के कर है सींहर्य को जांचने के लियं नयनरूपी कसीटी यनाई है। सम्मुच पद्दी महिया कहीटी है। जिस सींहर्य को पाहों इस पर काकर देस को, वसी वहर यह वतला देगी कि करा है या कीटा। पर करूं, के शावर ने इन नयनों को काँटा बनाया है। सिप-

भीरत तो एक जीहरे जुदिया बसर का है।
प्रकार है किममें हुत्त वह बंदर जबर का है।
यह नवर का कौटा हुत्त तीतता है, किंतु कसीदी के मुकाको में यह कीटा नहीं ठहर सकता। किंट में बीटों बस मरावा
परता है। खगर कीटों के रखने में बोही भी रातती हो जाय, तो
सीत जुद-च-कुद्ध हो जाय। खगर किसी को बीटों की पहचात
न हो, तो चुद्ध-का-जुद्ध समस्य हो। इससे अवितिस्त विर किंट
में योही-सी भी कान हो, तो यही मारी अवतकहरमी हो
साने का दर है। कसीदी में इस क्रियम की कोई शिक्ष पररा

84

र्शन-गर्ना मेरी का मकती। बम, बलु को निया कीर तम 🛚 🖽

भीर ममी बक्त सम्बियन को पहुँच गए। इस क्सीटो है

न्धाता !

विषय में अधिक कहते की कोई आवरयकता नहीं है।

क्योंकि विभिने द्या करके हम सबको यह कसौटी ही है। फमीटी देकर विधि ने यह बड़ा बुद्धिमानी का काम किन, बरना वसको सृष्टि में रूप और हरूप दोनों एक मा पिकने । यहा आरी चान्याय होता । अहाँ इस कर प्रम के पाचार में आप चहल-पहल देखते हैं, वहाँ आप एक्स समाटा पाते और सींदर्गोपासना का किसी को स्वप्न भी नहीं

चतुर चकोर

चमक रहे सारे नहीं, ये नम में नहीं और ; पतिथन की हैं क्षाजित, निरहिनि मयन-चकीर ।

ये जो मम में चमक रहे हैं, वे तारे अहीं हैं, किंतु विरहिमी जियों के नैज चकोर चनकर अपनी नाविकाओं के पतियों को हैंद्र रहे हैं।

कप तो कालिं कप्यती उड़ान लेने हागी हैं। कहाँ पहुँची हैं, बासान पर! का पति कहाँ किए सकते हैं? बाब तो भीं कपर से दूरवीन की तरह प्रणीतक व कोना-कोना देख केंगी। पति होंगे तो प्रश्री पर ही, किर वपत्रद कहाँ जा सकते हैं। काँकों की इस हालत को देखते हुए तो कपार पतिजी सहा-र यह पूर्वों को होड़कर खालतं चास्तान पर पहुँच जाय, त पहाँ से भी हुँकार ये उनको निकात जार्पेगी।

फाबरपकता ते ही नए-नए काबिपकार करफा होते हैं। यदि यद फाबरयकता न होती, तो बेबारी नायिकार क्यों कपमी प्यारी काँकों को तारे अनाकर, इतनी कॅची चढ़ाकर, रात कें समय कपसे पतियों को चतसे टुँटवावों।

इम इन तारों की सुंदरता को देखकर वड़े प्रसन्त हुन्या

1

करते में । फिनु इनकी सुंदरता का रहस्य तो इमें कब मादें हुम्मा है। ये तो नाविकाकों के सुंदर नेन हैं। मला फिर क्लें न सुंदर दिस्तलाई हैं। ककसोस ! इस बंद्र नहीं हुए, बरना हुए राज-भर उत्तर से ही इन कहिंसों के सींदर्य का निरीक्ण किंग

रति-रानी

40

करते । सींहर्योपासक तो दो सुंदर नेत्रों हो ही हंसका डाप हो जाते हैं, फिर मला जहाँ हकती बड़ी तारार में जूपत्रत भौतों देखने को मिल जायँ, तब तो कहता ही क्या है ! हमार्थ भौतों सदा राज को ताराओं प

कारत सदा रात का तारामा पर जाकर पहला दे रणा कारत कम मालूम हुका है। हमारे नेत्र व्यपने सहमारियों को देखकर प्रसन्न होते हैं और प्रेमवश बार-बार वपर री देखते हैं।

मोहिनी मछलियाँ

फोइयत चरिता शीन हीं, जाल कंताबत लीम ; विच सुख चरिता शीन चुन, वै कॉर्से वच सीम । इस देखते हैं कि कुछ सीम मदी के जाल में जाल समाक्रद

महतियाँ पकड़ते हैं। इन बेचारों को कापने इस पेरी में बड़ा द्राख होता होगा। पहले को जाल बनाना, उसी को बहुत समय भीर परिश्रम शाहिए, फिर दसको ले जाकर नदी के किसी पेसे स्थान पर, जहाँ खूब मछक्तियाँ हों, छोदना । सदुपरांत धैर्ये रखकर परमेश्वर के कासरे घंटों तक बैठे रहना । जय इतनी मुसीयत चठाई, तो कहीं दो-चार सहलियाँ हाम लगी। फिर इस पर भी मुसीबत बह कि इन महालियों का हाथ भागा भनिरियत है : कभी वोन्वार हाथ क्षय गई, वो कभी एक भी महीं; क्योंकि पकड़नेवाले कोई ईरवर के घर से ठेका तो ले ही नहीं रेहों-कि निश्चित संख्या में महातियाँ मिल जायें। फभी-कभी यह भी होता है कि चतुर मछलियाँ जाल के फौस में धादी दी नहीं और कई-कई खाकर भी निकल जाती हैं। मतलब यह है कि बेचारे घीवर को महालियाँ बड़ी तकलीक से नसीब शेती हैं।

42

परंतु खरा गौर कीजिए। कविजी ने कड़ी सोज के गर पता लगाया है कि वियन्द्रविरूपी सरिवा में, विसमें प्रेम-अत श्रमाध परिमाण में मरा है, चचुरूपी दो ऐसी वृत्र महत्रियाँ रहती हैं, जिनकी कार्यवाही देखकर अक्त दंग हो जाती है। कहाँ तो कुछ धीवरों का यह काम या कि महलियाँ पकर है। परतु यहाँ तो जलटी माथा हो गई । प्रेम-सलिलपूर्व ना में रहनेवाली इन दो ही महालियों ने समता ससार के मनुष्यी की फँसा क्षिया । और, फँसाया भी किस बाजीब दग से ! क्या कोई जाल फैलाया, क्या कोई अच्छी जगह दूँदी, नहीं रिकार मचुर परिमाण में हो, क्या इनको भी घंटों ईश्वर है आसरे बैठे रहना पड़ा, क्या इन्होंने भी अपने कार्य में परि-भम किया चौर मुसीवतें चठाई, चौर क्या इनके प्रयन्नका मी परिएाम अनिरिचत रहा ? वहीं-नहीं, ऐसा समर्भना हो भारी भूल होगी । जाल की जरूरत नहीं—इनको विना 'बाल समस्त . जगत् को इस खुबी से फँसावा ब्यावा है कि फँसे हुकों का निकलना मुरिकल हो जाता है । अच्छा स्थान कीन हुँदे, यहाँ तो अपने आप ही खिंचे हुए सब लोग शिकार-रूप में भा चपस्यित होते हैं; हनको शिकारी के चंगुल में फँसने में ही कानी होता है। पंटों मैठकर बाट ओहना तो दूर रहा, एक पर्ल-भर में ही यहाँ तो लाखों मन फेंस जाते हैं। ईश्वर के बासरे

मोहिनी मद्यलियाँ 48 की बात तो दर रही, यहाँ तो दाने के साथ सब कार्य होते हैं, ईरवर का इस मामले में इराल नहीं है। इन दो महालियों को तो सद संसार को फँसाने में कोई प्रयास नहीं होता । उलटा चानंद होता है। इस पर भी तुर्री यह कि यत्र का कल निश्चित होता है। निरिचत संख्या से ज्यादा भने ही फैंस जायें. पर कम की संमावना नहीं। धन्य, कविजी महाराज, चापने तो यह स्रोजकर संसार का यहा उपकार किया है। आजकल का जगन् छतझ नहीं, नहीं सो निरचय ही आपको कोई-न-कोई ऊँचा और सन्मानित पद मिलता । आपका यह संदेश हम संयको धुनाकर कह देते हैं कि भाई, सावधान रहना, बरना यचाय होना सुरिकल है।

पड़ा च्यापारी

तिवा रूप वावार में, सवै विकास वित दाय ;
नैन होविं विच बड़को, वह स्थानार काय ।
सस्य है, भारता रूप-बाजार में खरीदने जाहर कीन नहीं

षिका ? फिर जहाँ कायदेव-जैसे क्यापारी हैं, जो वरि कपैर दार कुछ न कपीरें, तो धतुष-बाख लेकर बन्हें मारते तक को वैयार बैठे हैं; क्षीर यहि विकलेवाले विकला न पाईं, हो कनका भी यही हाल होता है। परंतु इसमें बेवारे काम-या-

पारी का क्या क्यूर है। यह तो इस रूप-बाजार का सर्हे पदा व्यापारी है, और विना दास लिए-दिए ही छरीद व फरोफ्त फरता है। इसमें ग्राती है तो छरीदने और विकनेवार्ती

फरांचन फरता है। इसमें राजती है तो खरीदने और । वकननाथां की। यहाँ तो लोग बिन हाम ही आहकों के द्वाय कि जारें हैं और उतरे उन्हों को कुछ पेशांगी देते हैं। और भुग सीशिष्ट, गीतने के लिये बाँट कैसे अच्छों और रमसाती हैं। इनसे जीला जाकर कोई कम या प्यास नहीं

स्तर सकता । पूरी-पूरी जील जोत्र होती हैं, तब कहाँ सौरा होंग हैं। परंतु सौरा पंसद बाने पर तो माहकत्री श्वयं सौरा हों हैं, बौर रूप के सौदागर केहाम जलटा कुछ गाँठ का देकर पक जाते हैं। कभी-कभी को ज्यापारी के बौटों को देराकर ही स्पीरदार सहू हो जाते हैं और सम ब्रुद्ध मृत जाते हैं। फिर नो कहीं इनके मोटीहून ने बोटीहाल गए, तो आनंद की सीमा को रहते, जिसे ने बौट, खुद बजुद, बात-की-बात में बोलकर ता देते हैं।

भीर कीन रहरीद हैं। ज्यापारी शोग इस फ़िल्म के व्यापार से

बहा ह्यापारा

यह सट्टायुरा है—इसमें सबको बट्टा लगता है—कभी चरीद॰ हार्पे की सरम्बत बनती है, तो कभी चेचने-विकलेवालों की हजा-त ! यहाँ तक पता नहीं रहता कि किस बक्त कीन विक जाय,

षकर ही चलें।

सम्मान के साधन

इन नयनन के रूप हो, वह सी करी बगान : इनेन कविना कामिनी, पाक्न है सम्मान ।

"इन नयनों के रूप का कहाँ तक वर्णन करूँ । करिता और

षासिनी इन्हीं के कारण बाहर वाती हैं।" सत्य है। इन नयनों के बानुपम रूप का वर्णन धाना ष्ठित है। कारण कि---"गिरा धनयन नयन विनु वानी।"

इरकामल बड़ी मुसीयन है। कामिनी की शोमा पराके गु'रा

मैत्र हैं। यदि ये न हों, तो उमे कोई पूती चाँख से भी न हैंगे। एक नेमों के किना जमका शाग रंग-अप धूम में नित्र आप

मेप्र सियों के इथियार हैं। जब दिनी के इथियार दिन गए, पिर क्या है, फिर क्यमें कीन बरेगा है बरना तो हुए गई, षरिक सीम क्रमे चौर जयरकृती बम्प्येंगे। नेत्री के विना नाविक

के निये धापने जनमन्तिद्ध स्वत्यों की रक्ता करना भी करिन ही आयमा । विना तीमें के कमान किम काम की । भीर नीर

भी ऐसे कि—''बस बिन बेधन चुक्त और है' ये वे इधियार है, सी--- "बक्, पत्ते पूर्वे नहीं, कान साम में बीट।" जिर मना इनकी अपूर कर्यों न द्वीपी इदमकी नाईंद ने सीय वरित, जी मैदानेजंग में इन इथियारों से चख्मी हा चुके हैं। जरूम भी इनका ऐसी-वैसी दवा से नहीं भरता । नैन यान के चान की, एकडि कही। उपाव : भुत्र पट्टी कुन पेंटिला, व्यचरन को सिकंदाय ।

सस्यान के साधन

40

षाहिए उस जरुम के लिये । श्रम रही कविता। सो यह भी सब तक शोभा नहीं देती, जब

हक कि इसमें आँखों का बर्णन नहीं पाया जाता, अथवा यों कहिए कि भाव-रूपी नेजों से ही कविता-कामिनी की कमनीयता बढ़ती है। द्यमिय, इलाइल, सद सरे नेवों पर वो लाइन का

एक छोटा-सा दोहा कवि को व्यमर वना देशा है। फिर नेप्र ही वो नेचर-निरीक्षण करके हमको नृतन और नायाब भाव नजर करते हैं, और सदा हमारे रिक्त अंबार को उनसे भरते हैं।

सारोरा, नेत्रों के विना कविता और कामिनी दोनों की कमनीयता में कमी का जायारी।

प्रेम-प्रकाश

वे नाही समीन की, निश् में इत दव भाव : धाँस वियोगिन पतिन को, बहेनाई बूँदन आव ! ये जो हात्रि में इधर-चधर छड़ रहे हैं, को खगोद नहीं हैं। बो

क्या हैं ? ये को क्रियोगिनी क्षियों की कांसे हैं, जो जहाँ औ चनके पवियों कों दुंद रही हैं। वियोगिनियों ने पनियां को दुंदने की खंद में कपड़ी उरहीं।

सोची है। बालन में ब्यांश्नों से बहकर बूँदने का काम कीन कर सकता है, क्योंकि सुमकिन है कि कोई दूसरा को पहचानने में भी मूल-कूक कर है! परंतु क्योंकें तो ऐसा निशाना सगाया करेंगी कि

पति महाराघों को, जहाँ कहाँ होंगे, लाखों में से हुँदर विश्वति लापेंगी। और क्यादा करसा गुजर जाने से यदि कोई पति परें का रास्ता मूल जायगा, वो ससको राह बतलादेगी। पह की

स्पयदा है। रात के समय ये काँचों महालों का मी कार हैंगे बरता कोंग्रें, में कोई पतिदेश किसी गहरें में गिर जारें, वो की भुष्कित हो जाय। एक बात यह भी है कि किसी हुत के होंग

मुस्कित हो आय। एक बात यह भी है कि किसी दूव के धंग संदेश भेजने से पति न भी चाते। दूसरे यह भी चा कि डासिर नापिका की विशह-क्या का वर्णन करने में समर्प न होता। ष्टींबों के इस फाम को ब्रांजाम देने से इस तरह की कोई कठिनाई नहीं रही। ष्ट्रांश से बहकर महा नायिका की विरह-वेदना नायक को कोन ग्रुना सकता है। इसके ष्राविरिक्त व्यक्तिं ष्रपना प्रभाव भी फन पर दाल सफती हैं। यहा जो ष्टार्लि पतियों को इतनी

ग्रेम-धकाश

49

प्यारी हैं, थे खुद कट पाकर कॉयरी राखों में बूँदने निकलें कौर पित न कामें यह तो कभी संभव ही नहीं। जब वन सजल नेत्रों को पित देखते होंगे, सो मामृत्ती नो क्या बड़े मानियों के मान घूड़ जाते होंगे। इस दक्त वियोगिनियों ने यह ऐसा दूत बूँद् निकाला है कि स्त यह समक कीजिए कि वनसे वितर-ज्याग अविष्य में बहुत कम हो जावगी। हाँ, बेचारा विरुद्ध मारा गया। उसका कब इतना भय नहीं यहेगा। सच है—"काउ के रहत नकम् सब हतन भय नहीं यहेगा। सच है—"काउ के रहत नकम् सब हित एक समान।" भीजा है, इतने दिनों एक विरुद्ध की जूब सकती थी। बाब वे ह्या स्वारी,

शिकारी की शिकायत दर गाँद वान दसान, नेना दानन जात है।

चैने व व है अन्त, मूख वने सारत मूगन हो।

में नर सदसद शिक्षांग नैन, कटायक्षमी कर्तान तीर भाग चौर भू-स्पी समान को लेकर कानस्पी वन को जो

र । नीतिए, यह चौर मुनिए-कानन को जाकर ये रिकारी गुर्गों को घोत्या देकर मोदित करने के लिये खुर ही मृगक आते हैं। मृश बेचार उनके बासली रूप को न पह्यानकर मन-सुग्ध की तरह इन नवागंतुकों की बोर टक्टकी लगाकर

देखने कारते हैं। परंतु फिर भी माया-जान में कॅसे ही रहे हैं, और शिकारी को शिकार करने का प्रान्या अवकास है। हैं। ये अयमे में जाकर इचर-उचर देखते हैं, परतु समक ड़ा

फाम नहीं करती । इतने में शिकारी इनका काम तमाम करने इनको भापने साथ लेते जाते हैं। यही हाल इमारे युवकों का होता है। वे मृग-तैसे नायिका है

नेत्र देखकर उन पर मोहित हो जाते हैं और कटाल वाणों से विधकर भी नहीं टलते। उन्हें धायल होने,में ही भवा मिलता है।

स्वर्गका स्रख

लाज और रति रेच रेचे, स्वर्धनेह स्रो प्रा त्रे निरमन ऐसे सबन केलि-कला में सुर।

सज्जा से भरे हुए, प्रेम के रंग में रॅंगे हुए और स्वर्गका

ष्मानंद जिनमें महतकता हो, ऐसे सु दर नेश्रों के दर्शन चन्हीं भाग्य-रााली चीर पुरुषों को होते हैं जो केलि-कला में कुराल होते हैं। यह रित समय की चाौजों का कर्जन है। की में थैसे ही

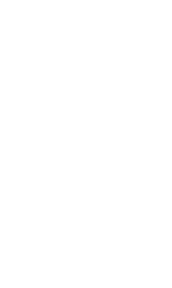
सजा होती है, फिर रति के समय का वो कहना ही क्या है ।

सजा का होना स्वामाविक हो है। प्रेम तो है ही, विना प्रेम के

मिलन ही कैसे हो सकता है, सायक रति-रीति में बड़ा प्रकीश

है। प्रतः नायिका नायक के साथ स्त्रर्ग का सुरव भागती है। वसी स्वर्गीय सुख का सुखद कोटो नायिका की काँखों में दीख पहता है। एक सो नारी के नेत्र वैसे ही सुंदर होते हैं, तिस पर चनमें

करता मरी हुई है, प्रेम में परो हुए खलग हैं, और वहीं पर ध्यातमा नहीं द्रध्या है, बल्कि स्वर्ग के सस्य से परिश्त हैं । बास्तव में पैसे अन्हें नेत्रों को देशने का क्रिकारी वही पूरुप हो सकता 🖁 जिसने केलि-कला युद्ध में अपनी श्रारवीरता का परिचय रेफर विजय प्राप्त की है।



कर दिया। नेतां के स्वरक्षतिपन क्योर सींदर्य की सीमा न रही। वे हो मतुष्यों के स्वर क्यों से सुंदर गिने जाने लगे। ऐसे क्यों न होते, जन्होंने तो क्या-प्रत्येग को पालत कौर पोषण करनेवाल सुखरान की महद की, और चनके कहां को काटा। यहि इस पर भी सुख बन पर विरोध कृषा न रखता और चनका सबसे च्याहा सम्मान न करता, वो यह इस सुख की मृह्येता गिनो जाती।

पुष्प ने इन्हें इतना वश्य प्रशान किया और इन्होंने इतना रूप-रस पिया कि इनमें से भी रूप-रस टपकने लगा । इन्होंने जो रस टपकाया, वह सधुरता में चायल से खुन्द कम स था। इससे बहुत-दे लोगों की छोला होने लगी। वारों कोर प्रेम-रस का प्रवाह बहुने लगा।

इसको इन नैनों का बड़ा क्रवक होना चाहिय, वर्चोंकि इन्होंने परेपकार के लिये ही इस सामग्र में जन्म किया, और स्वार्य को साक में रक्कप जितना रस स्वर्ध निष्मा, उससे सहस्तुना, ्रा स्वारा पिकाया । यन्य है, ऐसे निःस्वार्य वरोपकारियों को । क्र स्वारा पिकाया । यन्य है, ऐसे निःस्वार्य वरोपकारियों को । क्र स्वारा पिकाया । यन्य है, ऐसे निःस्वार्य वरोपकारियों को । क्र स्वारा पिकाया । यन्य है, ऐसे निःस्वार्य स्वीर्य और महदगारों को सारोवाले कृतच्च इनसे सवक सीर्यों ।

काम के कमल

का कुराम केन्द्रम सनदूर, प्रेस-वनायाकाः ; इंडप्टेनाम दुः बसम दे, इन्ह् दिन्दिन सारः

दायर्च दा कारोगरी की कला-दौराल का क्या की सक करें। उसने कीन-सो ऐसी बीज बनाई, जिसे देसकर लोग बाह-बाह न कर कठे हों। एक कमल-नामक कोमल बीजा लेकर, कमल का मखाला लेकर कौर कमल ही को नमूने केती पर रलकर उस काम-कारीगर ने क्या न कर दिलाया। इसी एकमाज सामगी से उसने कर्णकमल, करकमल, सुराक्षण, नैनकमल, कुषकमल, पर्कमल इत्यादि स्त्यादि क्षनेक कर्रे साविष्ठार समग्री कारों के कारों कर दिलाय।

इस फाम-फारीगर के कर की करावारों में से हो कीवसनें कीवस कमल लेकर कामिनी के कान बनाने की करावार ही को कविनी यहीं कह रहे हैं। कांता के दोनों कमनीय और कोवल कान इस प्रकार रिखाई देते हैं, आनी ने प्रिय प्राच्यति के प्रेम-प्रताप के संपुट हैं, जिनमें प्रेममलाए-नामक रख बड़े यत्र के साय रक्खा जाता है, और कमी प्रकट नहीं किया जाता। या के ऐसे मालूम होते हैं, माना महन ने दो खुकीयल, सुगंधित, मुंदर

•

ंगों को चपयुक स्थान समक्रकर, चन पर, भूलकर सटको-ले राहगीरों को राह दिखाने के लिये दूर-दूर कर प्रकास गोनेवाली सो मंखियाँ रख हो सी। व्यव भी यदि परिकों पर न मिला तो उनके दुर्माग्य का दोव है।

मदन का मोह

कुव बीलहिं साली सदन, निशि में तीन बाहि ; बीलेयन सिन सिर चहत, समुक्ति हिए सक्रपारि ।

ह अरत सदन माली का देश बनाकर रात के समय की की तरह कुमरूपी बील-फल को तोड़ने जाने हैं। वर्षनु वर यह खयाल होता है कि यह कसी कुल के फल हैं जिसके परे

सीमहादेवजी के सिन पर पड़ते हैं, तथ उन फर्सों पर रोगं की छपा समक्रकर जीर 'मदन-यहन' की याद करके, तमी याद काने लगती है, जीर पेट में खंडी का दूध तड़ माँ पचता। हृदय में बहा भव जीर संकोष होता है; परंतु कार ठहरे थोरों जीर कड़ैनों के सरताज---मका हते देंचे हाइटिल होक्डर होकर कहीं काम में बिना हाय कोने रह गड़ी हैं। कहें चाहे सकता हो या न हो, परंतु यहने ही हिम्मा हार

देने से बनको सात थीड़ी तक सामित न हो आये। अन में सालच भी है, कौर यह जानकर कि सात में सातो के देश ^{हैं} कर्ते कौन परकानेगा, कुछ पैनें भी है। को ! चापने दिग्यन करें क्योंन्यों द्वाप तो बड़ा ही दिया। परंगु हुए खालिर निराण ही: रिपर्यों की कुला से नीम को नहीं हुटा, किन सनीस की रकाता को घोखा देना व्यसंभव है, तो क्यों इतना दुःख ग्राता । परंतु याद-बाद! वंभोले भी बड़े कुपालु हैं; उन्होंने पने कुपा-पात्र योल-फलों पर सदन का इतना भीद देखकर ते फलों की सोइन-किया में ही इतना व्यतुप्त रहा भदान कर या कि वसे उन्हें तोइने की इच्छा तक न ग्री। वह नित्य हैं देखकर ही व्यलंड कानंद का व्यतुप्त करने लगा । पीत-फल का बड़ा शीकीन माल्य होता है, नहीं तो बनके हैं व्यपनी जान तक जोलिस में क्यों वालता। गढक! यदि विरक्षंत्र को प्रसन्त रक्षना है, तो वाप इन फलों वीइने का कमो ज्यबं प्रयास न करें; जहाँ तक हो सके

ने बचकर ही चलें—इन्हें देलें तक नहीं—नहीं तो, लेने रेने पड़ जायेंगे। शंकर हमेरात तो भंग के नरो में रहते हीं, जो मदन की तरह चापको भी माक कर देंगे।

w.

पर्यं चा भाह ९९ म ही दूरा। पहले ही यदि यह सोच खेता कि महादेव-जैसे

वेग-पथ किसी रिय के बाबन त्रेश की, बहुन बीच असवार ह इरम साहि के मनह है, क्षेत्रे बागम कराएं। कविजी के करपना-राज्य की भूमि को वर्षेश बनाते ही-सायन-मारों की चरपराइट करती हुई, गहरी नदी बद रही है इसका माम ग्रेम-नर है। बौर-कीर नांश्वी वर्ष का मैली श्लोकर रजःस्वला हो जाती हैं: परंतु वह नदी वी 'वि के पाथन मेम-जल' से ही बारहों सडीने शरी रहती है। ^{व्या} क्यों जलपृद्धि होती है, त्यों-त्यों शुद्धि होती वाती है। इस प्रेम महानष् से गहरी नदी शायद ही संसारमें और कोई हो। गई शक्त से भोतमीव नदी रहने पर भी निर्मेश है। मल से इसे खू तक नहीं गया। चितिए पाठक ! हम भी इस नदी में स्नान करके कापने पापों को वहा दें, और कवि को धन्यवाद दें। यह ती मानी हुई बात है कि नदी जितनी ही क्यादा वेज बलेगी, ^{ब्रह्म} ही करारों को काट-काटकर डेंबा बनाए जायगी। किर याँ प्रेम-नदी का प्रवाह तो,ऐसे ऊँचे करारे बनाता होगा. जो बेचां ष्टसरे सोगों को तो क्या-'कांवनामध्यगम्यम' हैं।

नामिका के डेंचे करे हुए कुच की मानों इस नदी के हैं।

胡仁素 医乳腺性脓性 解性素 清晰性 医生育素 医线 在1000年 1000年 1000 Bond of the Re of States are \$ 400 400. 明时、秦 斯特、皇 张广、张东上 佛儿 南山山谷 海 being secured must be some time of a new security a 医鼠巴纳氏 一直, 医红斑 前 数4人类 " 我可 微小 在 管 1976分 撤 就的 翻筒片 動匠 动脉性小点性 華 动性 数 医腹上层 A state of the Bridge of Both Acres Services Services Services Services

4 m Anglian I

\$ 5 At the work was of \$1 \$1 To the war and the second second second second A Har just, the law where the service shows much the will to be 本1へ すなれた な mo お ま マル 省 mo not partill 京 跡 t we seem a series as

भाश्रयहीन के भाषार

ाव वर्ष बोर कारत में, बृद्धण सन नेकपर; तत्रकत बाको देखि दिखि, किर कुर्यन कापार। इस इंद्रियों में शारीर चना है, कीर सन इंद्रियों

राजा है। फिर, यदि राजा ही हुए गया, तो प्रजा के हुकने यया बाकी रहा ? प्रजा-पति सदि पड़-पड़कर होस्ता परंतु वे ससी के बनाय हुए, की के शोमारूपी सागा में इ भाते हैं। यह देखकर वह हैगन हुका, परंतु दोनों में एक को भी उसने नष्टन किया, क्योंकि दोनों ही उस^ब सृष्टि थीं। करोड़ों इसी तरह से तहफ-तहफकर इस धरा छवि-सागर की वरल-वरंगों के बोच में हबने तगे, परंतु वि कों कोई खपाय नहीं सुमत । मालूम होता है. छम्होंने बांत है द्दारकर कामदेव की सदायता ली। काम महाराज हो पर से ही पुराने याथ थे ही, आपने तूरंत राय ही होगी..."इह समुद्र में दो ऐसे आधारस्वरूप पर्वत बना दीतिए, जिन इसका सौंदर्य भी बढ़े, और वेचारे सरीकों के मन भी न दुवें।" विधाताती आपकी चाल में आ गए और इव

रूपी दो व्याचार बना दिए; परंतु यह नहीं जाना कि यह

गुर पंटाल महनराज की चाल है, जिससे पहले मुश्किल से ह्वनेवाले मन अब सहज ही में हुब जायेंगे। पहते इस समुद्र से दूर आगनेवाले मन भी अब इन जायारों को देसकर मोहवरा चकर में आ जाते हैं। वेचारे मझा की समक्त में कुछ नहीं जावा; किवा तो भने के बास्ते, हो गवा और भी मुरा।

वेय-गर्यापर

वित्र कर्जु के लगि श्वन हिन, राज में वर मार्च । नेहरीय वह चमक का, उत्तर मार्ग मह मार्च । राजा माजक कहीं वकांत में नित्ते हैं । सामा निकारवार्य करी मेमार्चेश में राजामी हॉट के हृदय से लिपट गई हैं। बसी मां की बनकी निमाली कुक-शोमा कर वर्णन कवि ने किया है कमा कभी आपने किसी का माना में स्वर्ण-पट मार्

देशा दे शियाद नहीं, तो थोड़ी देर के तिये करणा है कर सीत्रियः। पनस्याम का स्याम इत्य बड़ा विशात है, भी यसुता के पाट की मीति मानुस होता दें, कातः वसमें रह रहना माइतिक ही है। कवि ने वसे स्नेहरूपी मीते जब

का नइ ही माना है। राधाबी के कपुकीरहिंद क्रण, ⁽⁰) समक-दमक और ब्याकार से, सोने के बहे-बहें पहेंगी प्रतीत होने हैं। कुल-कुल क्लटकर पहें का मुस बल में सगाने से पड़ा भरा जाता है। राधाजी भी भेग-वह में

लगाने से पड़ा भरा जाता है। राषाजी भी भंग-गई " मस होकर कुछ फुककर हाषीले जैल की द्वारी से लगी हैं। बस देखनेवालों को प्रत्यव यही माद्यम होता है, मार्गी वे भागने कुषक्ती कनक-कसस कुछ-कुछ दलटकर, कृष्ण के प्रेमरूपी नीले जल से भरे हुए हृदयरूपी नद में भरती जा रही हैं।

परंतु हमें तो यह आश्चर्य है कि राघाजी को प्रेम-जल भरने की क्या आवर्यकता थी! लोह-सलिल तो स्वतः जनक्का हमके कुच-कुमों में भर आया होगा। और वे चलको नदवर के नेह-नद में अपने यहे उलटकर मिला रही होंगी।

राधाजी को प्रेम-जल में पड़े भरते देखकर हमारे कविजी को भी कैंच्या हो ब्याई, जीर क्व्यूंनि भी क्व्युनावरणी सागर को क्युने लेहेंक्यो गागर में सर दिखाया । किर कहाँ हो रामाजी का सागर में गागर भरता, जीर कही हमारे कविजी का सागर में सागर भर दिखाता!

कार्लिडी में कनक-कल्ला

में भ क्षत्र हो होर दिया स्वद्रिय सेवा वाहि। रिवम बमुज्यस दजदन्यद, बनुन्दम् बृहत् मार्डि ।

निया की नीने रंग की कंचुकी ही मानो यमुना का निर्मेष भौर नीता जस है। दस बंबुई। में में दमके संदर, मुंदर भौर समर्थाने कुष इस बचार शांधा देने हैं. मानों जह मारे

समय किमी की के दायों से धुटकर मोने के पढ़े यमुना-उत में कुद-कुछ हुवते जा रहे हैं।

भगर पाठको ! इन पहाँ के भरोने चाप नायी के नेह-

रूपी नद में न कृद पहना, जाप देल चुके हैं कि ये दूरते हुए

पहें हैं। धतः आपको भी साम से इवेंगे। धाप शमध

सहारा तकते हैं । मगर वे क्या सहारा हेंगे, वन खुर की जान भाकत में है। वे तो ख़ुद हुवते हुए की नाई दूसऐं का सहारा एक रहे हैं।

नयन-नैया

सागर रूप श्रापार में, नयन-नाव टकराहि : इन्जिगिर वै दीनक बरत, तक साहि दिशि जाहि ।

की का सींदर्य जापार और काग्राय सागर के सदश है। इसकी शोमारूपी तरल करंगों में पड़कर रसिकों की नयन-रूपी नाव इचर से उचर टकर खाती फिरती है। समुद्र में मगर-जगह बहान और भावर्त हुआ करते हैं, जो नावों को नष्ट कर देते हैं। समुद्र के किसी भवानक स्थान पर, जिस प्रकार कोई परोपकारी यात्री खन्य यात्रियों को भय से सावधान कर देने के लिये 'लाइटहाउस' बना देता है, उसी प्रकार यहाँ इस तूकानी सींदर्ध-सागर में पड़कर दुःख पाए हुए अनुभव-रीत यात्री विधि ने कुच-गिरि की ऊँचा स्थान जानकर असकी दो बोटियों पर चुविकाओं के रूप में दी दीपक ऐसे जना दिप हैं, जिनकी अ्योति असंह है। जिससे भूते-भटके भोले यात्रियों को मालूस हो जाय कि इन पहाड़ों के बीच का समुद्र अत्यंत भयंकर है: वहाँ पर बहुत-से भेंवर पहते हैं. जिनमें पहका नयन-नाव चकर लगाने लगती है, परंतु चागे नहीं बढ़ सकती; कौर कांत में बेग से दोनों पहाड़ों की क्षेत्र का जी

घषत डाकर महाकर हुए जातो है। वेबारे महियों के इसी नगद सुरत में जान जाती है। इसी बाने हैं पम परीपदारी बाबी ने वडी वाम-दी-वाम दी 'शार-दारम' बना दिए हैं, लाड़ि दूर ही से इनको देवा पविच्यान व्यवनी-व्यवनी जीहा को क्वाने का प्रवत्र कर हैं। परंतृ पाडक ! चापका यह मुनकर चारवर्ष और मेर द्रीगा कि बेचारे ऐमे पुल्यात्मा उदार पुरुषों का यह प्रयत्न दिन

इस निष्मत होता है। बचाने के बताब ये शेपक हो यातिये की चमटे फेंमाने में सहायक होते हैं। क्योंकि जैसे दीनक के देशकर पर्धग अपनी मृत्यु को कुछ किक न कर, अंपे की तरह, वसकी चमक-इमक पर सह हो, बसमें गिरकर जर मरते हैं, बैसे हो ये नयन-पश्चिक भी जब इन क्रच-स्थानीं की देखते हैं, वो इनकी सुघरता, शृति, भामा भीर सौंदर्य ^{यर} मोहित हो, मंत्र-सुराव की तरह इनके बीच में का फैसते हैं। फिर जीवन से हाथ घो बैठते हैं। मलाई के बास्ते किया हुआ यह कार्य बुराई का साथक बन जाता है। इससे ही अच्छा यही था कि दीपक रखने का वृथा प्रयास ही न किया आता । क्योंकि शक तो उन्हीं को इस दुर्दशा का सन्ना क्लग पहता, जो मूक्त-भटककर वहाँ पहुँच आते । परंतु धार तो इन दीपकों की दमक में, श्रंग की सु'दरता को देसकर कई



दोनों स्रोर से सीमा का उल चन हो गया। दोनों का प्रेम इस प्रकार एक दूसरे में समा गया कि 'दो कालिय एक जान' हो गए। दोनों ने दिल अबके केलि को। प्रेमावेश में नायक ने बना दिए थे, वे दिन में विचित्र झटा दिखलाने लगे। कविजी लिन्य शरीर पर पड़ं हुए, दिन में मानों स्वर्णा करों की तरह शोभा देते थे। रात की प्रेमदानलीला की, भविष्य :के लिये,

मायिका के पूल की पंखुड़ी-जैसे कोमल गात पर, जो नख-तत में चनके लिये एक उपयुक्त उत्प्रेचा की है। प्रेमावेश के फल-स्वरूप वे नल-शत, पत्र-सदरा नायिका के सुकोमल और एक खासी सनद मौजूद थी।

प्रमन्द्रन-पत्र

रात केन्ति विश्व गीव सन, नता झत दिन होने मीहे । दानवार्य का प्रस्य के, हेसल्ब्यूट मतु होति !

काम का कावेरा भी शतक करता है। इसमें ही मा ऐसा कीश जाता है कि जिस करने को बहु धरने हृदय है पयादा जिय समकता है, उसी को स्तृत पहुँचारे हुए मा हुए भी संकोष नहीं करता। संकोष का तो सदात ही

है; यह तो बेचारा चपने आदेश में ही हवना सस्व रही कि चपने प्रिय के हानि-साम का वसे विचार तक नहीं रही सच है, मदन महाराज के प्रेम-साम्राज्य में सभी स्थान कारोज़े हैं। वनके कीवित्य-कारीवित्य का विचार करना मा

स्तेर, सुनिय, हाल यह हुचा कि नायक और नायिका क

स है।

बहुत समय के बाद भिक्षत हुआ। बेपारे विरह-बेरवा व्यपित थे। अब भी बरणे वास्तविक प्रेस को सीमा के ^{की}र रसने की कोई सवाह है, वी सरासर बन्चाय है। और यह है भी कैसे सकता है। बस्तु। मिस्त-टरय वैसे ही जोरा का रहा तैसे सरिवा का समुद्र के साथ समायम होने पर रहता है। भीर मनाल मरसिज लेकर सहज ही में डिगुफिन कर दिय हों।

पाटक ! इन कमलों की क्रियत की दूसरे कमल तरसने होंगे। दैयते महों, कभी-कभी भीसोत्तल जाकर बनमे बार्तालाप कर व्याने हैं ; जैसे कापने बंश के उद्यपदाधिकारी के पास उस बंश के बहुत-में लोग चारलुकी करने जाया करने हैं और क्रम्यान्य मजनों की मृद्रमृद्ध चुराली तथा शिकायत किया करते हैं। मालम होता है, नीने कमल इन्हीं लोगों की शेखी में से हैं। ये कर्ष कमलों को मिला देते होंगे कि वृक्षर जाल, पीत और रवेत कमल तो चापको समता करना पाहते हैं। कर्ण कमल भी इनकी बान सानकर जीर धोले में बाकर इन्हीं की नित्य ध्यपने पास रागते हैं। धन्हें चाहिए कि वेचारे दूसरे -परीब कमलों को भी बात मुनें और सस्य-भूट का निर्णय करकें जी चार्चे करें। पचपातरदित होना ही वहीं की शीभा रेंग है।

कामिनी का क्षत

मंत्रम नामि सभीत त्रियः, साथा-कृष सृष्ट् । सन प्राचा तृष्ट परितालोः, समात्रम जिल्लीनेष्ट ।

कुम में पिएना कोई लेन नहीं है। बहुी हो, को गिरे हैं, कराये से विकट्ट की में निन्यानने किया में बाव को देशों हैं। वर्ष चाप करेंगे कि कमा कुंची कोई जेमी सवाबनी रामधी है हैं जिसमें क्याना सर्वया शुरिकत है। कारका कम बता है। हुँ हैं

हो बचना बहा सदस है। बरा-सी सावधानी--वैतन्यता में चरुरत है; किर तो कोई वर नहीं। बरंतु शास्त्र है हमाए से कर्य है कि किसी खलरव मध से बारको सावधान कर हैं।

सुनिए, की-कींएये-संसार में यक बानूता क्य है। वर क् ऐसा-वैसा नहीं कि साधारण नियमों का वातन कर वाने धुटकारा या वायें। वह तो माचा-निर्मित है। वसके कोमों दूर-दि तक का स्थम ऐसा सुंदर कीर मनोहारी है कि संसाधि वीव कसके आकर्षण से नहीं क्य सकता। कालित विदार करता-करता कसके पास ही पहुँच जाता है। किर तो ऐसी गुरुग्धी, पामकीती कौर विकनी हालू कमीन काली है कि कितना है।

बचाब क्यों न करें, पैर रपटने-स्पटवे नसी माया-कृप में गिरने

भैम-आहरी ६७ पुलिस में नौकरी करनेवाले, चीरों का तो विक्र ही क्या है, खुद चपने चापको सुकरमों में फैसा लिया करते हैं। इनकी रातन्दिन सबक ही ऐसा दिया जाता है। इनका विश्यास करना

खुद अपने आपको मुकर्यों में फैसा लिया करते हैं। इनको यात-दिन सफक ही ऐसा दिया जाता है। इनको विश्वास करना अच्छा नहीं है। इसलिये तु पहले से सैंसल जा। कराचिन् हुक्ते वा सैंसल जा। कराचिन् हुक्ते वा संस्का जा। कराचिन् हुक्ते वा खाता है कि ये लोग जुक्ते नारी समम्बद्ध हो हैं में, तो तु सकर ग़लती करती है। वह जमाना गया कि जब कियों के साथ करियागत का बरताब किया जाता था। आजकल जानीमत हिंद और जाला क्रीजदारी की तृती योक रही है— आजकल दे ही इमारे धर्मरामत हैं। महस्स्ति का जब यहाँ मान नहीं है।

ग्रेम-ग्रहरी का डेन शह हो, त्या का का के है।

बाज पहाची प्रदेशका, विशेश मीत पर्दा हैंगे। हें नाविका " मुहम देमर के मोनी को हम तरह कर माच का बाल म बना । कामी से सावधान ही जा । इसे १६ सिर अन नहा । असा, वह भी कोई बान हुई कि वह हमेर नैरे अपरी पर ही कटकता रहता है और तेरे <u>स</u>ब से दक्षा शम्य ओ निष्क्रमा है, बसको नोट बरता है। वेरी हर व्य इरफ्त को देखता रहता है। देवियाँ स्वमाथ से ही वही मोवी • माली होती हैं। चतः पुरुषों की विकनी-मुपड़ी वार्तों में बा वारी हैं और इस प्रकार व्यपने हाथों से धरना ही सरगनार करती हैं। बावरी ! यह योठी कामरेव का मेजा <u>ह</u>का पर्रे-बार है, जो राव-दिन तेरा पहरा देता है और तेरी पष-पष ^{बार} की मीट करवा रहता है। यू इसको इतना साइ-प्यार करवी है। किंतु इसका मौत्र्य सगते ही यह तेरी मृठी-गृठी शिकावर्डे करेगा ।

क्या यू नहीं जानवी है कि पुलिस में नीडरो करनेवाले पूर्य अपना कर्तेच्य पासन करने में बढ़े पसे होते हैं।

Ęu

खुद अपने आपको गुकदमों में फँसा लिया करते हैं। इनकी रात-दिन सबक ही ऐसा दिया जाता है । इनका विश्वास फरना व्यच्या पहीं है। इसलिये तू पहले से सँगल जा। कदावित्

तो त् सरुत राक्षती करती है । वह जमाना गया कि जब कियाँ के साथ रू-रियायत का बरताव किया जाता था। आजकल वाजीयत हिंद और जान्ता फीजदारी की तृती बोल रही है-

तुमें यह खवाल हो कि ये सोग तुम्हे नारी समककर छोड़ देंगे.

भाजकल ये ही हमारे धर्मशास्त्र हैं। मनुस्मृति का अब यहाँ मान नहीं है।

विचित्र वैध

ाद्र भेर के स्थान, भगवात्र वर पत्र । प्राम्त नेत्र चेत्रम नर्ग, रिन्हों सेवर्ग भाष ।

इन गं श्यमं ने वार (ker pe) के हिल्मांनरों की मी माँ कर दिया। वेपारी भोगी-भागी देश को भोगा देश कान इस्यू मीया करना वे जुब जानने हैं। जग सारको गु^बार वे मुस्तित्वा करमाइन। साच करमाने हैं—'चे भीरे कैने निदुर हैं। क्योती पर इन्होंने गमी बंदहमी में इक भारे हैं कि मार हो गप हैं। इसना में इस (स्थान) रहना है। सो स्थान गार्ग को मेरे सामने करें। मैं इन्हें चूस लेना हैं। सभी मिनरों में सारा खहर जगर जावगा। यह एक सकसोर दश है।'

सातुम दोता है कि पीतमधी को उनकी परोपकार-वृष्टि की पीत कोमनेवाला कभी कोई नहीं भिला है, बरना ये सारी दिक्यन पूर जाते । दूसरों का इलाज करते-करते कभी कही ये लुद मर्ड मेंज म ले हीं । पीतमती कप्यदी तरह समस्त हों कि डिलोमेरी हमेरी काम नहीं देती हैं। क्या में क्यकलमा क्षवस्य होती है। कौर किर यदी दुर्गीत होती हैं। हिंदु इस बक्त पीतमजी हमारी नसीहद क्यों स्मानने सारे हैं । इस समय तो इनकी चालें खूब चल रही हैं।

मुग्ध मधुप

कंपन सरम करोल पर. तिल द्वीम शीमा पात ; पा शुक्ताल कंटकरहित, एशिक मधुर तिपदाल । सरस कोमल कपोल पर तिल इस प्रकार शोमा देता है, मानी फंटकविद्दीन गुलाय से रसिक अगर तिपटा हणा है।

मीर यहे रसिक होते हैं। रस के लिये कौटों की कोई परवा
नहीं करते हैं। उनको जन कौटों से विहरने में ही मचा
चाता है। रिक्स-इट्टय पुरुष हराके सावाधी हैं। असर ने प्रेम
के तरक को समम लिया है। यह कौटों से तो करें ही क्या,
रख्य तक से मय नहीं जाता है। प्रेमी पुरुषों का स्वामा है क्या,
राख्य तक से मय नहीं जाता है। प्रेमी पुरुषों का स्वमाय है के वा
नात पर तोककर भी अपने प्रेम का विराम्य देने से बाज
नहीं चाते। से लोग विद्या-मायाकों से नहीं प्रवस्ते। किंद्रा
माय से, बिना प्रयास किए ही यदि च्यानलिय पदार्थ की प्राप्त
हो जाय, तो और भी चाच्छी बात है। हमारा रसिक भीरा ऐसे
ही मान्यसाती जीवों में से हैं। इसे बिना कौटोंबाला गुलाय
मिल गया है। चच्छी तकतीर सुस्ती है। च्या निर्मित्त होकर
पुष्तालिय करें—सोनों हायों से बी शोळकर रस लूटे।



मुक्त मुक्ता

सफल जनम तथा जग सयो, बेसर मोती सेता: राघा श्रह नैदलान के, श्रापरन की रस लेता। है वैसर के रवेत मोती ! तेवा ही इस संसार में जन्म लेना सफल हुआ है, जो तू राधा चौर नेंदलाल दोनों के अधरों के रस का पान करता है। जिस व्ययर-रस के लिये कृष्ण के सटरा योगीरवर राधिकाजी के चरण-कमलों में सिर नवाते हैं, उनके परणों की रज अपने मस्तक पर चढ़ाते हैं और रूठ जाने पर पंटों उनको सनाते हैं, उसकी प्राप्ति विना प्रयास ही हो जाना महें सौभाग्य से हो संयव है। तिस पर भी तारीक यह है कि भकेली राधिकाजी के अधरामृत का पान ही नहीं, हजरत कृष्ण से भी नहीं चूकते हैं। वेचारे कृष्ण को तो वह कोरा ही रख देते हैं। जो हुद रस कृष्ण पान करते हैं, उसको तो तुरंत दी यह वनके कावरों से चूस लेता है। फिर कुच्छ के पास इन्द्र नहीं रहवा । क्याचित् यहो कारण है कि कृष्णजी कभी तम नहीं होते हैं। इस बेसर-मोती की वजह से ही उनको राधिकाजी की बार-बार खुराामद करनी पड़ती है। यदि यह बेसर का मोती न होता, वो मनमोहन को इस तरह बार-बार राधिकाती मान का हर न



बहरंगी बिहारी

सालि बहुरंगी रूप गिय, रावा तहें हैसि दीन ; दंतासा पदि स्थास बपु, चन विद्युतयुत्त कीन ।

दंशसा पहि स्थाम बद्द, चन विद्युतपुत कीन । प्रेम-साम्राज्य के सम्राट् मगवान् ओक्टप्स की प्रेम-लीलाकों । सनकर काल विकार सम्बन्ध की कारणा अर्थ फनक जरती ।

हो सुनकर श्राज किस सहृदय की श्वात्मा नहीं फड़क वडती। वैषिय प्रकार से प्रेय-कीड़ाएँ करके प्रेय-रस का इन महाराय ने जो मजा चलाया था, श्वाज वसको याद कर करके प्रेसियों के

हरय सलक उठते हैं। कभी गोपियों के साथ रास-कीझ, तो कभी राभा के साथ बन-विदार, कभी त्रिया के संग फूला स्कूना, वो कभी जल-विद्वार। यही नहीं, कभी-कभी वो इनको चन्नद

लीकाएँ रचने की स्मूमती। कभी-कभी काए रूप बदलकर प्रियाजी के पास जाये कौर जनको खूब छकाते। परिणाम यह होता कि इन होतों पेरियों का रोग कामाण रूप से जिन्सीय बदला ही

हन दोनों प्रेमियों का प्रेम काबाध्य रूप से दिन-दिन बढ़वा ही जाता। इस दोहे में नदवर जजबिहारी की इसी बहुरंगी सीता का

वर्णन है। आंपके मन में बाई कि वेश बदलकर त्रिया के पास वर्षे। वेरा ऐसा सजाया, वाल-टाल ऐसी बदली कि किसी मकार से पोल न खुल जाय। परंतु क्या बाग भी कमी कपड़े बर्तन में डाला जाता है, तो कभी उस बर्तन में; लेकिन यह

इस बेचारे रस की तो जाकत ही समन्ते। कमी यह हर

किसकी दुर्गति नहीं होती ?

क्रस्र इन रसराज का ही है। इन्हें सोच-समस्कर इन

रवि-रानी

नारियों के चकर में पढ़ना था । इनसे ऋधिक सर्थघ रखने से

बहरंगी विहासी

सालि बहुरंथी रूप विच, राधा तहें हैसि दीन ; र्वताभा विष स्वाम बहु, चन विद्यातपुत कीन ।

मेम-साम्राज्य के सम्राट् भगवान् बीकृष्ण की प्रेम-जीताओं को मुनकर जाज किस सहृदय की जात्मा नहीं फड़क वठती।

विविध प्रकार से प्रेम-कीड़ाएँ फरके प्रेम-रस का इन महाराय ने जो मजा बलाबा था, जाज छसको बाद कर करके प्रेमियों के

हरप लक्षक उठते हैं। कभी गोपियों के साथ रास-कीड़ा, दो कभी राभा के साथ वन-विहार; कभी प्रिया के संग भूला भूलना, वो कभी जल-विहार। यही नहीं, कभी-कभी वो उनको का ग्रस्त

जीजायँ रचने की स्तुमती। कभी-कभी ब्याप रूप बदलकर प्रियाजी के पास जाते और उनको खुब इकाते। धरिखास यह होता कि इन दोनों प्रेमियों का ग्रेम व्यवाध्य रूप से दिन-दिन बढ़ता ही जाता।

इस दोहे में नटवर ब्रजिवहारी की इसी बहुरंगी लीला का वर्णन है। श्रांपके मन में चाई कि वेश बदलकर प्रिया के पास चर्जें। वेरा ऐसा सजाया, चाल-टाल ऐसी बदली कि किसी

पत । वेश ऐसा सजाया, चाल-ढाल ऐसी बदली कि किसी प्रकार से पोल न खुल जाय । परंतु क्या भाग सी कमी कपड़े

इस वेचारे रम की तो चारत ही समस्ते । कमी यह इ

किसकी दुर्गीत नहीं होती हैं

रनि-सनी

क्रम्र इन रसराज का ही है। इन्हें सोव-समम्बर इन नारियों के चकर में पहना था । इनमे व्यथिक संबंध रहते हैं

बर्नन में बाला जाता है, तो कभी उस बर्तन में; लेकिन म

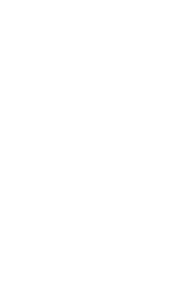
बहुरंगी विहासी

साथ बहुरंगे रूप सिय, राषा तहूँ होते दौन ; रंतामा पढ़ि रवाम बयु, यम विद्युतयुत कीन । प्रेम-साम्राज्य के सम्राट् सगवान् श्रीकृष्ण की प्रेस-सीसाकों

सुनकर जाज किस सहदय की कारमा नहीं फड़क चठती। विभ प्रकार से प्रेम-कीड़ाएँ करके प्रेम-रस का इन सहाराय जो मंत्रा चलाया था, जाज उसको थाद कर करके प्रेमियों के एर लक्षक चठते हैं। कभी गोपियों के साथ रास-कीड़ा, वी

भी राघा के साय बन-विहार, कभी प्रिया के संग कृता कृतना, कभी जल-विहार ! यही नहीं, कभी-कभी तो दनको ष्य-द्रत लाएँ रचने की सुकती। कभी-कभी खाप रूप वदलकर प्रियाजी पास जाते और धनको जुब डकाते । परियाम यह होता कि

र दोनों प्रीमियों का प्रेम कावाच्य रूप से दिन-दिन बदता ही हा। इस दोदे में नटबर मजबिहारी की इसी बहुरंगी लीला का छैन है। कांपरे मन में कार्ट कि नेसा बदलकर प्रिया के पास है। देसा ऐसा सजाया, बाल-दाल ऐसी बदली कि किसी कार से कील



ग्रभ सीप

इसत राधिका दंतदाति, मेन्हन मनहिं सुभातः, मनर्तुं स्वरून दारवीं फटी, कियुं फटि सोनि सुहात। हम यह नहीं बता सकते कि राघाजी कौन-से मौक्रे पर हँसी हैं, क्योंकि उनका हँसमुख मुखड़ा सो निस्य हँसता-सा ही जान पक्ता है। परंतु यहाँ कुछ-कुछ ऐसा मालूम होता है कि मोहन

षनके मन की मोहने के लिये चन्हें गुदगुवा रहे हैं, श्रीर दूसरों मोहने जाकर उनके खिलखिलाकर हँसने पर खुद ही मोहित हो गए हैं। इस उनको ननमोहन न कहकर मनमोहित कहें, तो अच्छा हो । लोग फहते हैं कि मन देने से मन मिलता है, परंतु यहाँ

कि पहले एक प्रेमी सन देता होगा, तभी न दूसरा खेता होगा। यदि दोनों ही पहले से ही ऋपना-ऋपना मन दे दें, तो लेनेबाला वीसरा हो चाहिए: नहीं तोवे मनबीच ही में टकराकर चक्रना-पूर हो जायँगे। प्रेम की हार में जीत होती है, इसके अनुसार

तो पहले मन लेकर ही मन दिया है। लोगों को यह मासून नहीं रापाजी ने पहले द्वार की हँसी हँसकर कृप्ण के मन को जीव लिया। यस, एक कड्कहे में गुरामाहकजो खुद ही विनदास

100

विक गए । नहीं-नहीं, बिनदाम तो नहीं विके, उस फटी सीप में

में भी स्वार्य और लोग !

श्रमृल्य चमकदार मोतियों की लड़ी को देखकर श्रापको लोग

रति-रानी

हो आया, अथवा पके अनार को फटते देखकर आपको उसश खनुपम रस चखने की मन में काई । यह क्या प्रेमनाय ! प्रेम

रसना क रस पट रस रसना चासिकें, नवरस देत चलाव ; अवर अप्यरम पान करि, रस ही देत पिलाय ।

कडु, तीला, अस्ता, मधुर, कपाय कौर लवण ये झः रसं लकर, यह रसना श्रंगारादि नवरसों का रमास्वादन करां रती है। बहारता का कानुपम वदाहरण है। झः के बदले मर्क देना कुछ होटी-मोटी बात नहीं है। फिर 'पट्रस विधि की

स्ति में के कानुसार छ: से क्याना रस न होने पर भी वह नवार स्त प्रश्नात करती है। अलाई का बदला किसी को जुकाना हो, हो इसी तरह जुकार। यदि इतना न हो सके, तो कमन्तै-कर्म कपरों की तरह, जितना रस पान करें, काना तो विश्वा हो देनां पाहिए। यदे प्रेम के साथ इस हंग से रिक्ताना वाहिए कि पीनेवाले को प्यास न कुनने पर भी तृति हो जाय, और वह पही समने कि में हो नके में रहा हूँ। अब बहुत से ऐसे भी हैं, तो केवल लेना ही जातिय ! बात वहन नहीं लेते ! नाक हो जी तीनार ! बात वहन मही लेते ! नाक हो जी तीनार ! बात संसार के सुरस्के सुरंदर और सुगीधित-ते सुगीधित सुगनों की सुगास सुंपकर वहने में कुन तहीं सुगीधित सुगनों की सुगास सुंपकर वहने में कुन तहीं सुगीधित नी सुगीधित सुगनों की सुगास सुंपकर वहने में कुन तहीं सुगीधित नी सुगीधित सुगनों की सुगास सुंपकर वहने में कुन तहीं सुगीधित नी सुगीधित सुगनों की सुगास सुंपकर वहने में कुन तहीं सुगीधीत । पाठक कहीं—

60

"पिया के श्वास में सुरोध का खाशाम तो खवरय रहता है", परंतु यह बामोर उनके मुख-कमल में निकलनेवाले शीनत

एक कोने में जमकर रसना के सुनाए हुए नवरसों को सुन लेवे हैं। फिर सुनान की तो बान डी दूर रही। सुनानेवाले को बस्साई तक नहीं देना जानते । चाप बड़े कुनव्न और सूम 🧗 इसीलिये तो कवियों ने आपको अपनी कविता में बहुत कम स्थान दिया है। आपका बहत कम गुरुगान किया है।

चय कान की जरा और सुन लीजिए। त्राप सिड़की के

रवास में ही होता है।

सवा संदेह

गालन कहें भवनीस कहि, चितुकहिं बाम बसाहि ; पढे दाल द्यावरन समुस्ति, माघी चालन चाहि। घन्य हो माधव ! तुम्हारी महिमा कौन कह सकता है । हे शुरकीपर, तुम कभी तो ऐसे सुकुमार बन जाते हो कि सुरस्ती वक नहीं सेमाल सकते, और कभी गिरिधारी बनकर वर्षत-का-पर्वत कतिष्ठिका पर धारण कर लेते हो। हे जगजाय, तुम जगत् की रचा करते-करते, धककर गोपीनाथ बन बैठते हो; कभी पुरुषोत्तम धनकर समस्त संखार को वपदेश देते हो, तो,कभी गोपाल बन-कर ग्वालों की तरह धनका-सा आधरण करते हो । तुन्हारे जिस मुक्ट की एक मलक के लिये देवपि तक वरसते हैं, वह धी पुण्डाय मुक्ट मानिनी राभाजी के चरखों में यों ही पड़ा चुन्ना करता है। तुम सबसे बड़े दाता और सबसे बड़े याचक हो। हुम सबसे क्यादा शुरवीर और सबसे बढ़कर कावर हो। गीता का गान गानेवाले तुन्हीं और गोपियों का गोरस ६रण म्दनेवाले भी तुम्हीं हो । तुम्हाय कहाँ तक वस्तान करें। त्रिमुबन में ऐसी कोई बात नहीं, जो तुममें न 🗗 । तुम प्रकृति के प्रवर्तक जो ठहरे। तुम सबसे बदकर सममदार और

12

८२ र्वात-राजी सर्वज्ञ तो हो ही ; इस जया तुम्हारे मोतेपन का भी बगान

करना चाहते हैं। गोरियों के गालों को माधन, उनके निवुकों को भाग भौर

चनके चोठों को पढे दास बनाकर ज्ञाप बसना बाहते हैं। है बेचारी ,भोली-माली ललनाएँ तुम्हारे इस रहस्यमरे मौतेपन को क्या जानें ? वेवारी सोचती होंगी- ''लस्त्रश्री वहे मीले हैं भौर इन घातों से अभी अनभिज्ञ हैं। अपना क्या आता है इनफा हठ पूरा हो जाने दो", परंतु वे यह नहीं जानवीं कि इस धासन में घुंचन छिपा है, जो चनुर गोपियों के चंचल विध की पुंचक की तरह अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। पर् इस नटखट, नटबर नंदनदन को 'ना' कहें भी, तो कैसे करें है यदि कहीं से दाख या जाम मिल आर्य तद तो उसे दे भी दें। परंतु वह सी ऐसे समय में इनकी बाखना वाहता है, जब कि इन फर्लों का समय ही नहीं है। यदि मालन कहीं से लाकर चदाएँ भी, तो इचरत फरमाते होंगे--''नहीं, यह मासन इतना साफ, विकना चौर स्वाहिष्ठ नहीं हैं, इसलिये में तो तुन्हारे इसी

पहलेवाले मासन को चल्ँगा।" फिर वेचारी प्रजन्मालाएँ कहाँ तक बहानेवाजियाँ करके बच सकती हैं हैं

इंद्र की ईच्ची

ø.

प्यारी की मुख देखिके, परी बाह के फद; माही सों निस दूसरें।, होत बापुरें। अंद । इचरत चंद्र तो कुरे फर्वे में फँसे । किसी नायिका विशेष के सुंदर मुख को देखकर खाह के गर्ज में मुवतिला हो गय। दर्भेण बठाकर थार-थार मुख देखते हैं। नायिका के सींदर्भ के मुकाबले में धापने सौंदर्य की फीका पाकर बाह से जले जा रहे हैं। युरे चक्कर में पड़ गए हैं। "चिता शली चिंता सुरी।" इसी चिंता के कारण वापुरा चंद्र नित दुवला हो रहा है। पाठको ! यन सके तो शीघ कोई इलाज करो । रोग जो कहीं भसाम्य हो गया, हो हमें भी मुसीबत उठानी पहेंगी। जो कहीं इसी पिता में चंद्र इस संसार से चल वसे, तो यस समक लो, संसार में धेंथेरा ह्या जायगा । चाँदनी रातों के लिये फिर रोते दी रह जाकांगे। परमात्मान करे, ओ कहीं इस तरह की मीयत पेश का जाय, तो हमें भी घोरिया-विसतरा बाँधकर चंद्र के साय कूच करने को वैयार रहना चाहिए। मखा इनके विना सो यह सारा संसार शून्य प्रतीत होगा ।

सुनते हैं कि विलायत में बड़े-बड़े चोर रहते हैं। किसी से



कोपका कारण

राष्ट्र न प्रस सकि बंद को, विधि सों वैठी कीर्प। तियमश्र पटतर श्रानता, लखि न सकडि मन गोपि । चंद्र सोंदर्य-जगत् का जीवन-प्राया है। वह तो विधि की कारीगरी का उत्कृष्ट नमुना है। अपनी कारीगरी का सबकी व्यभिमान होता है और अपनी बनाई हुई सु दर कृति सबको प्यारी लगती है। किर भक्ता च'ह विधि को प्रिय क्यों न होगा ? धन्दोंने को इसकी रचना में व्यपनी प्रतिमा का खुब उपयोग किया होगा। सभी सो कीज भी येसी सुंदर बनी, जो सुंदर परतकों में सबसे चल्कप नहीं, तो धनमें से एक कावरय है। भावः भागर इस प्रिय वस्तु पर दुःख पहे, हो विधि से सहन न हो सकेगा। परंतु विधि तो सृष्टि के ब्याधार, कर्ता-धर्ता ही ^{ठहरे}। किसकी मजात है कि अनकी चीज पर श्रांख गडावे रै वन दो यह स्पष्ट है कि राहु द्वारा चंद्र के मसे जानेवाली किंपरंठी निस्सार और वेसिर-पैर की समग्री जानी षाहिए। मला राहु ऐसे तुच्छ जीव की क्या मजाल, जो सृष्टि के ल्ला विधि की, जिनका सोहा सब मानते हैं. चीज

को दुख देने का दुस्साहस करता। यह तो कल्पना के भी

35 रवि-रानी

याहर है। तब तो काल्पनिकों की उटपर्टांग क्याओं ने घोसा दिया ।

यह तो ठीक है, किंतु हम जो चंद्र महीदव को कभी-कभी गापर

और कमी-कमी विकृत रूप में देशते हैं, इस शंका का समा-

पान कैसे होगा ! लोजिए, कविजी ने इसी का समापान कर दिया है, जो मन में सोलहों बाने ठीक जॅब जाता है। यह पर है

कि चेत्र का राहु द्वारा बसा जाना निर्नृत है। यह चेत्र वे भौर-भौर मनुष्यों की तरह कभी-कभी कोप में आकर अपने स्वामी विभिजी से रूठ जाता है। रूउता है इसलिंगे वि संसार की सुंदरियों की मुख-युवि करने से भी बड़कर देख, इसके मन में ईर्प्या-भाव पैदा होता है। पाठक ! जय सोकी पर मालूम होगा कि इस ढाइ का कांतरिक कारण क्या है। कारण यह है कि वहाँ चंद्र को पत्त के अनुसार चीएक्स होने, और क्रमरा: धटने-बढ़ने का क्षमाध्य रोग लगा हुवा है, यहाँ मुदरियों के मुखबंद की आभारूपी कता परते के बजाय दिन-दिन बढ़ती ही है। वहाँ तो घटने का नाम धक नहीं है। वहाँ वो 'नितप्रति पुन्यों ही रहै।' इसरे, चंद्र में कर्नक है। पर तियमुराचंद्र में कलक का नाम नहीं। यह हीनता मला मानियों में व्यवगरय चंद्र से कब सही जो सकती थी। दब कोप किस पर करें। इसी विधि पर ही ब, तिसने ^{कहते ही}

तो रोनों को परापत रहित होकर बनाया, पर किया बास्तव में सरासर चन्याय कि स्त्रों को चंद्र की व्यपेता यह विशेष गुरा दे दिया।

मला मान की कान पर बलियान होनेवाले सुधांगु इस गर्व-संदन को देख, कैसे चुप रहते ? बातः जी में सोया कि विधि को इस कापरवाही का सका चराना चाहिए। षापने बाजकल के सम्बन्धसार के कींभिलरों की तरह मानहानि के भौद्रों वर प्रत्याग करना ही खबित समम्मा, जिमसे समल संसार सटिव विधाताजी को भी वह तो शल्या हो जाय कि चंद्र महोदय भी कोई चीज हैं: चनका चापमान चनको करापि महीं करना चाहिए। बाब भी प्रभानाय करके उनको क्षमा-मार्पना करनी चाहिए। परंतु विधिजी क्या करें १ उनकी यो जान क्यारत में है । वे क्या जवाब दें 1 कर्टीन धान-पूनकर लो यह घोरोबाबी की दी नहीं बी, जो दोपी टरावे । स् दरियों में स्वभावतः ही बोहिनी शक्ति होती है: बहीं राति चन पर भी कास कर गई। दनको यह आल तक न इमा कि उन्होंने बया राज्य कर बाला । हाबि-रचना करने-करते ही पागल की सरह विना सोचे-विकार यह विरोध गुरा रित्रयों को दे दिया। यह दुव्या चंद्रमहरू कर व्यवसी रहस्य ।

मयंकों की मानहानि

चार चमक मुम्बदंद की, दोबी स्थाम पट क्रीटि; ऐसी दिव में बस सर्व मान न आला महि कोटि।

ऐसी हिय में बस गई मात न शारी मुद्दि कोटि।

नायिष्टा रयाम चीर बोट्टे हुए है। उसकी बोट में से बर के मुखबंद्र की चार चमक मेरे हिय में ऐसी समा गई है हि एक-यो नहीं, करोड़ों चंद्रमा भी उसके मुख के मुकाबते में सुने

ष्मच्छे नहीं लगने हैं। करोड़ों चंद्र भी अच्छे न लगें, तो कोई अचरत की गर्व नहीं है, क्योंकि मुलचंद्र की कुछ निराली ही शोमा है, चंद्र

नहां है, क्यांक अलब्द को कुछ निराली हो शामा है; पर बास्तव में बसे नहीं पहुँच सकता । श्याम पट है, वरी श्याम पन है । बसकी कोट में से नाविका का मुख जो शिव पहता है, वही चंद्रमा है । किंत यह सुखबंद शशि से अपिक

शोभारााती है, क्योंकि यह निष्कतंक है। फिर अता इष्टरे सामने फलक-पूर्ण बंद्रमा, बाहे करोड़ों ही क्यों न हों, हैसे ठहर सकते हैं? खाप क्या नहीं जानते हैं, "त्यारी को

विधि घोए हाय, ताको रंग असि सयो चंद्र, हाय
 सारे हैं।" तब वापुरा चंद्र इस नायिका के मुल की

े पार है। "तब वापुरा चहु इस नावका के उस न फैसे कर सकता है ! क्या ही बच्छा होता, बारे विधि

68 कारा में कोई देसा ही निष्कलंक चंद्र बना देता, जिससे को ऐसा बानुकम सौंदर्य देखने को मिलता ।

मयंकी की बानहानि

सम का नीलम नांत पर तक स्थाप देश, राक मुख रांत्र गीरिः

नाल पट ताल स्थाप एवं, राफ मुख इस पानः निलय फरोबे फरोडे यनु, यंद अमुन वन जोहि ।

इपर राधाजी ने नीली साड़ी पहनी है। साड़ी पर वर्षी हैं तारें जड़े हुए जान पड़ते हैं। इस साड़ी पर वनका हुए ताराजों से भित्तमिलाने हुए बाच्छा में चद्रमा की तरह प्रवेट होता है। क्षीकृष्ण का रंग नीला है ही; वनका विशाल वर्ष

स्थल मीले जल से भरे हुए यमुना के चौड़ चाट की तरह जान पहण है। रामाजी प्रेम-पूर्वक कनके स्थास हृदय को देख रही हैं। स्थर चाँदमी जिली हुई है। निशा-नायिका ने नारा-चटिन मीत गगन को ही साड़ी की तरह यहना है। चंद्र ही तिशा का हुल है। यह स्थाने जिय यमुना के नील अलक्सी हुए में मौड़

रही है। या वों कहिए कि इघर तो वरी के तारास्त्री गाँगों से जही हुई साईरिस्पी नीलस के सतोरों से शाया का दुसर्पर रूप्य के हृदय में और उपर शासास्त्री नगां से जटित सांवार्ग रूपी नीलग के फतोस्त्रे से बंद्र यमुना-अल में माँक रहे हैं। यही सब टर्स इगारे किंव की करपना-च्छा के सामने पूम गरे होंगे। वसी समय सापने यह सान्द्री छठोसा की होगी। काप कहते हैं—"तील रंग की सादी में से स्वाम के हुर्य को देखती हुई राजाजी का मुख ऐसा प्रतीत होता है, मानो काक्सरूपी मीलम के करोखे से माँककर चंद्रमा यमुना के जल में प्रतिविधित होता हो।" राजाजी का नीला गूँपट ही मीलम का मरोखा माना गवा है। रेले-पेले सुंदर भवनों का ऐसा ही मगमदित पीलम का मरोखा होना चाहिए। देरा कवित्री को खापने! मीलम को मम में चढ़ाकर खोगा। पता गहीं कवित्री किस चीज के मरोखे सं माँककर खोगने जल में स्पना मतिवंद देखते हैं। हैं, खवाल खाया, खार शायद झान-रूपी मीलम के मरोखे से माँककर कर्यनारूपी जल में स्पना मिलाएंगी प्रतिविध्य देखते होंगे। खेर, हम भी खाज से इस महार देखता मीलोंगे।

संदर सुमन

पह बेली मुख सुमनवर, श्रीवा नतिका मात ; कार कोमल कर प्रपुत, नाई श्रीवा पात ।

मायिका का घड़ तो मुंदर लगा है। वसका मुख-मंडल पुष्प पुष्प है। वसकी मीवा वस मुखक्जी पुष्प की सुमग निलंहा है। वसके काले खोर कांमल केरा इस प्रकार शोमा देते हैं, मानी

पसक काल चार कार पुष्प पर भीरे बैठे हैं।

सण्युष बद्दा ही सु दर खुमन है। यह पुष्प तो हिंद को प्रेम-बाटिका का मालूम होता है। क्या कच्छा होता, यदि किए दमके इस वाटिका की सुलयुल बना देता। सु दर-सु दर सुमने के सींदर्य का खूब निरीचया किया करते। पुष्पों को मोठे-मीठे हर्एने सुनाया करते, और इस मकार खुद शाद होते और वन सुमने

सुनाया करते, और इस प्रकार खुद शाद होते और वन सुमर्नी को शाद करते । उनके द्वारा सींदर्शेपासना का पाठ भी पद लेते।

स्तर की लपेट

तिय कुच मलय पहार पे, यल चंदन तरु जान ; लट कारी है के मनहु, नायिन लिएटी कान ।

भी के छुन हो सलयानत पर्यवादकी के दो वचन श्रंग हैं। इन पर कासिनी का चंदनवर्षों का कलितकंठ ऐसा प्रतीत होता है, मानो चंदन का इक्त लड़ा हो। इसी को स्वर्श करती हुई वसकी काती, टेड्रो क्षीर लंबी लटें ऐसी साल्स होतो हैं, मानो गांगिन का लिपटी हैं।

किरिय, कैसा रूप्य रहा ? सब तो यह दै कि बहुत योड़े भाग्य-गाती पुरुषों को यह रायावती देसने की सिलती है। और कर पोड़ों में भी कई ऐसे होते हैं, जो इस राय को देखकर भी रिष्ट को पवित्र नहीं करते हैं। वे जन-हर्य होते हैं। करतः किवती ने वहीं क्या कर सर्वसागरण रिसकों के लिये, त्रिनको यह सोमाग्य नहीं प्राप्त होता, परंतु जो हरव से प्रेसी हैं, यह वधी के समान राय दिखला दिया है, ताकि जब तब वे क्यानी कारातामा के पर पर इसका वित्रय कर भाकृतिक सींदर्य कर-सा हों मका करतें। कहते हैं कि सलवायल पर चंदन-मुख बुद्ध हैं। इनकी विरोधता यह दै कि साँव वनकी कालियों पर

लिपटे रहते हैं। यह उन वृत्तों की प्राकृतिक शीवलवा और मुगव के ही फारण होता है। नहीं वो मला साँग-वैसा दुए बंतू किमका सामी हो सकता है ? वह तो दूध पिलानेवाले अपने खानी

पर भी मौका पाकर चोट कर देता है। उसकी भी आन नहीं मानता । यह तो घदन की शीवलवा और सौरम की ही शिन है कि उस शैवान की शठना को शांव कर उसके स्वभाव की भी भुला देती है।

यही हाल है नायिका की सटों का। वे भी तो चोट करने में कुछ सर्प से कम नहीं हैं। चनको वो देलकर ही प्रेमी धरने ब्याप मरने लगते हैं। परतु देखिए, इन्हीं सर्टों ने नायिका के ^{गति} के संसर्ग से चपने दुष्ट स्वभाव को मुला दिया है। तायिहा के गले की सुपरवा, कोमलवा और जवानी में चंग से निकरने षाली सुगच से लटें मुख्य 🛍 गई और **चससे जा लिप**टी 🕻 l समय-समय पर जानंद-नृत्य कर-करके अपने इपे को प्रवस् करने लगी हैं। पाठक, चार आपको इन नागिनों से हरत नहीं चाहिए, क्योंकि जब तक प्रिया के चंदन-पृत्तरूपी कंट है

इन लट-नागिनों का संबघ रहेगा. वब वक इनका दुष्ट स्वभाव

प्रकट महो सकेगा ।

प्रेम की प्रवीसता

रात गदन बन भेंबत लाखि, पश्चिति होस प्रबोत ; कुच विर्दि स्थेग उर्तग में, लुग सनि बनु चारि दीन । इस बन में कीन पश्चिक नहीं सटका ? क्या किसी ने इस-

का पार भी पाया ? इसके अंदर प्रवेश करके क्या बहुतों ने निक-सने की ब्यर्थ चेष्टा ज की ⁹ कवि कविता कर हारे, परं<u>त</u>—'जाको वर्णन करि धके, शारद शेप महेरा'--- उसका मला बे फैसे वर्णन करते १ वितेरों की तो कुछ न चली। वे इस वन को वित्रण करने बैठ ख़ुद ही चित्र वन गए, या वंचलचित्त होकर शुप रहे। सच है, इस वन के नित्र को वित्रित करके-भएम केते जगत के चतुर चितेरे कृर ।' जिस बन के हायियों की महमाती चाल की समता संहरवन के हाथी भी नहीं पा सके। जिसमें निवास करनेवाले सिंहों की कटि के काट को दिमालय की तराई में रहनेवाले सिंह तक तरसते हैं: अहाँ मानसरोवर के इंस मौजूद हैं; जहाँ शुक्र, पिक, संजन, क्पोत इत्यादि यसी; मीन इत्यादि जलचर; सर्प-सर्पिटी इत्यादि यसचर नित्यप्रति निवास करते हैं; जहाँ कमी न दुन्द्रतानेवाले कनलीं तथा बन्यान्य फूलों पर

×

मर में मल मृग अन्यान्य वन के निवासी मानी मृगी का मान भंग कर देते हैं; जहाँ कदली, पंचा, स्सात, चंदन इत्यादि एसों के यने कुंज, सोनजुदी, बमेली, लामवरी इत्यादि लताचों से द्वाप हुए तथा गुलाव, आनार, चंगूर इत्यादि पौदों से पिरे हुए हैं; जहाँ बामृत, बाठली, शंस, चंद्र, ऐयवर, भनुप इत्यादि समुद्र से निक्ते हुए रज्ञ तक मौजूर हैं। वहीं अनेक मकार के टेड़े-मेड़े नहीं और नाले हैं; अयाह कृप र शालाय हैं; जहाँ पहाड़ों में बराम दरें और शांतियाँ हैं; वहीं कभी-कभी क्वालामुखी पर्वत से ज्वाला निकलकर सन्हें जलाती है; तूफान चलते रहते हैं; वर्ण होती रहती है; जहाँ मतबाले सीएों बौर हरावने हाकुकों का दर है बौर जहीं बैठे हुए शिकारी, जानवरों का शिकार व करके वेचारे भूते^{आहरे}

की मुसीयत का तो कहना ही क्या है ! यह आरचर्यंजनक जंगल प्रेम-नामक राजा के राज्य ^{हे} **है।** प्रेमदेव यहे मुद्धिमान हैं और प्रजा की रखा करने में वसर जान पड़ते हैं। देखो, मद छन्होंने कुचरूपी पर्वतों हे देंवे

बदोहियों का ही शिकार खेलते हैं। अला ऐसे बन में अमण करके किसको भय-भ्रम नहीं होता । फिर जहाँ पहले से ही क्षेत्रकार है, वहाँ रात के घोर कंपकार में चलनेवाले यके-माँदे पविकी

से ही गति होंगी। इन् के अंदर का दरय तो देखकर दिमारा पकर खाने अगेगा। माया ने शृद अकल खर्चकर उसमें ऐसे- ऐसे कोगले, मुंदर और मन लुमावने भीर फैलाए हैं कि गिरते ही जीव वनमें भीर पहला है। अववंव कोशिसा करता है कि निकल आर्डे, पर वे सब यक निप्पल होते हैं। तेली के वैत के सहरा पूम-पामक आलिर क्सी जगह जा विकता है ते वा अगुले में हो ते में के स्वारा पूम-पामक आलिर क्सी जगह जा विकता है ते अगुले में हो अगुले में हो अगुले में हो अगुले में हो सावपान हो जाहर, हसके देवा है। स्वाया हो जाहर, हसले कोसों दूर रहिए बोड़ा भी पैर पर वहाया कि जाह भी पुठली की तरह अपने आप लिख आर्से, और कंत में वही हाल होगा, वो सकदा होता है।

छुवि-छुन्ति इच-पर्वन स्थि इस्त हा, परो पेट के मार ;

कारों मो मन फॉस रचों, मक्त न कोऊ कार।

मधु मास में मुदित मन मधुप को सुदु मंत्ररी पर मत होकर मेंडराता हुआ चौर मंजुल मालती तथा मजिका है मुकलित मकानों के अध्यक्तकार के दिने स्टाम हुआ देव-

ग्रकुलित ग्रकुलों के सञ्च-मकर'द के लिये सरना हुका देव-कर, मतवाले भन महाराज मोहित हो गए, और उनके गर में काई कि किसी महीचर-माला पर चलकर मलयत मकरर

सय, मंद साहत का लेवन करें और सनोहर सहिरों में मन को एकाम करके साधव की सान-लीलाओं पर मनन करें. तथा मन-मंदिर में अनमोहन की सनसीहिनी और मानिन के मान-मदेन करनेवाली सनुर सुरक्षी की मीठी शान

मौन होकर च्यान-पूर्वक मुनें । यह मन में काते हो का मैल-ट्रेन से भी तेख, मानसिक ट्रेन पर सवार होकर पढ मापकते संसार के समस्त शैलों से सुंदर कुष-प्रवेत-साला प

जा पहुँचे । इन पर्वतों के तीचे क्याज करत्यका थी । कि पुर-पुर तक मैदान में मर्थक मयूकों के मीठे खीर मी मकारा में व्यक्त फकार के दर्शनीय हरवा होटगोवर होटें

छवि-स्राक थे। दो सुंदर और सुघर पर्वत अपनी गगन-चुंबी बमकीली षोटियों को गर्व-पूर्वक ऊँचा चठाए खड़े हैं। दोनों रंग-रूप, पमक-दमक, कोमलता तथा काठिन्य में एक ही जैसे हैं। दोनों पहाड़ों के बीच में बड़ी गहरी घाटी है। इस पाटी में से होकर कलकल करवी हुई, कलकारिणी, प्रेम-पय से . भरकर उमइती ऋौर इठलाती हुई, त्रिवलीरूपी सु'दर वन में से होकर पेट के सींदर्य-समुद्र नाभी में जा गिरी है। मुख-मलय से मलयज आहत, मंद्-मंद् गति से सीत्कार के रूप में बहकर, कुच-पर्वतों पर सैर करनेवाले शीकीनों के मनों को मोहिस कर रही है। फिर मन महाराज तो लुर सन ही ठहरे, इनके सन कहाँ था; ऋतः जाप स्वयं ही मन होने के कारण कुच-गिरि के छवि-छाक से छककर भीर मलय-पवन के सुगंधयुत शीतल भीर मंद प्रवाह पर मुग्ध दोकर लड्बन गए, ब्लीर लगे लड्बी तरह यूमने। भाषको यह यादन रहा कि ज्ञाप पर्वतों की लाल-लाल चीदियों की एक चट्टान पर चड़कर बैठे हैं। मनन होकर भाष सुच-मुच विसर गए। वस फिर क्या था, पैर डिगर्ट ति विन पैरका सन डिग गया चौर उत्तंग शिलोचय शृंग से लवालव भरे हुए पेट के पाट में गिर पड़ा और उसके पानी के प्रवाह में प्रवाहित होकर समुद्र के सबसे गहरे स्थान

नामी में जा रहा। फिर मला हाथ-पैर पटकने श्रीर पर फरा-

फड़ाने से क्या द्दोता या शबहुतैरा शेया-विज्ञाया, पर वर्डी कीन सुनता था ? अति सुदम होने के कारण, और इतने

फीन जावे र इसरों को वहाँ से निकालना तो दूर रहा, जुर ही उसमें प्रवेश करके कोई नहीं निकल सकता । ष्माजकल पारपात्य सभ्यों की सभ्यता की नकल करनेशत्रे हमारे पर्वत-प्रेमी भाइयों की भी यही दशा है। उँचे पहनर गिरे हुए, चनको पारचात्य शिका के गाद से निकालना करिन ही नहीं, असंभव-सा जान पहता है।

गहरे पानी में शर्क होने के कारण, इसको कौन देख पाता !

फिर जो कोई देख-सुन भी ले. तो हिम्मत करके निवालने

स्रगम स्र्णव

तिय श्वि अवसागर निवे, की करि सिक्टि पार मन सोइन कहें त्रिवलि जह, लोभ, मोद श्रव मार । पंडितों का मत है कि यह संसार एक माया-जाल है, जिसमें मामा ने ऐसे-ऐसे प्रलोभन रक्खे हैं कि जीव-पथिक उसके चंगुल में फेंसकर भूजमुत्तैयाँ में पड़े हुए अजनवी को शरह चक्कर खाने सगता है, परंतु रास्ता नहीं पा सकता। बीच-बीच में लोभ, मोद भौर काम इस प्रकार से छा उपस्थित होते हैं कि वेचारा जीव-पियक इनकी ऊपरी तहक-भड़क और मनमोहक खिव देखकर इनको अपना हितैयी समग्रकर इनके फंदे में फेंस जाता है। एक बार फेंसने पर फिर निकलना महिकल हो जाता है। इससे बबाना तो बस परवड़ा की ही सामध्यें में है। बसी की भक्ति से इनका बास्तविक रूप समन्त्र में का सकता है, ब्रीट वभी इनका स्याग भी हो सकता है। परंतु जरा सोचने पर मालूम होगा कि इस संसार को भी सफलवा-पूर्वक पार करना कोई मुरिकल बाव नहीं है। मगबद्धांक इसके लिये एक व्यच्छा उपाय है। वह , कठीर हो, तो हो; परंतु वासंमव तो कदापि नहीं है। किंतु दूसरी भोर बसकर देखिए। नायिका के ख्विरूपी बृहत संसार को

पार करना बड़ी टेड्री शीर है। इसके अलोभनों से वो बंध निरुतना मानो धनदोनी होनी हो जाना है। संसार में जब जीवारमा जाता है, और ध्यपनी लंबी याग

गुरू फरता है, तो पहले तो उसकी यात्रा विषयों द्वारा बाधि नहीं होती। परंतु यात्रा के बीच तक पहुँचते-पहुँचते वह उनके फेर मे फेंस रहता है। इसो प्रकार इस तिय-छवि-संसार में पहले तो जीव को यात्रा सुख-पूर्वक व्यतीत होती है, परंतु जहाँ भीव यात्रा में पहुँचा, तो ऐसे जाल में फँसता है कि एक बार तो प्रश् भी पचावें, तो मुश्किल है। त्रिवली के मनमोहक, चमकीले और सुदर जाल में इस सुरी तरह से फेंस जाता है कि फिर वहीं वर्षे खाता रहता है। बचानेवाला भी कोई पास नहीं रहता र अजनवी जानकर कोई रक्षा के लिये नहीं दौड़ता। चलटे निकालने के मिस कोई और ज्यादा भले फँसा जाय। बेचारा इस शोचनीय दशा में पड़ा-पड़ा खिदगी बिताता है। आये बढ़ने धी षाकी मजिल तय करने की खाशा, निराशा-मात्र हो जाती है पाठक ! सावधान हो जाइए, भूलकर भी इस राह पर ह जाइए, बन्यया बुरा होगा । बढ़ने पर रोग ऐसा बसाप्य ही जायगा कि डॉक्टर भी छत के भय से दूर भागने लगेंगे। परमेरवर तिय-छवि संसार के इस चावर्त से बचावे ।

कलई किया काँच

तिय करतल मेंहरी दिए, वर्गो चाकति इटलाति : बत्तर् विए से क्षंच ित्रत, कराई निरस्तति जाति । काजकल संसार में नई-गई खोजों स्त्रीर साविष्कारों की मरमार हैं। भोड़े हिलों से विद्यान-विशारहों ने तो इस स्त्रीर जूब

क्पमाद दिलाई है। कभी छन्होंने बंदरों से बादचीत करना सिलाभा, तो कभी मनुष्य को आकारा में उद्दना बताया। चीचें भी बदी-पदी आरवर्यजनक बनी हैं। भता, आविष्कार का बाबार जब इतना गर्म था, तो अवेजी हमारे कविबर ही किससे पिडारें। वे भी अपने कल्पना-पूर्ण सरकरूपी खीचार को

सेंडर भाविष्कार करने बले। श्रृष भटके। श्राविष्र चलते-बलते भारने एक मायिका को मस्त बाल से, इटलाठी हुई, पसते देखा। रैसकर इसके इस प्रकार चलने का कारण खोषने लगे। मला मितफ के सामने ऐसी कौन-सी कठिन समस्या है, जो इल म

हों सके। विस पर भी थे तो कबि ठहरें ! इनका वो कार्य हो यदों या कि विविज्ञता के पीछें सिर सचावा करें। हाने खुष प्यान-पूर्वक विचारने। सोच्छे-सोच्छे सिर पर पसोना हो च्याया, पर कारण न सुम्ध। चंद लें हैंस्बर की कृषा हुई; च्यापको कारण मिल ही गया। नाविका की हवेली पर लगी हुई लाल मेंदरें को देशकर एक साथ सुन्छ। नाविका भी कपनी दंगेलें को निरस्तती हुई जा रही थी। क्षत्र क्या या, कदियी कपनो जरिए स्रोज को या गए। उन्होंने दुनिया में बहा मार्च कमाविकार कर हाला।

बह यह या कि जिस प्रकार काँच के पीड़े लाल रंग के
प्रकाई लगी रहने से ही कस पर अनुष्य का प्रतिविष पर
सकता है, और वह उसमें कपनी स्व-योगा को देख सक्य
है, उसी प्रधार नाथिका के, कररूपी काँच की हमेजी पर,
मेंद्रशिरूपी लाल कलाई किए जाने पर, हाय की सुनि और
कामा इतनी बढ़ गई कि नाथिका का सुंदर सुखड़ा उसमें प्रके
पिषित होने लगा । कातः कपने कररूपी वर्षण में कपना
स्विप-सींदर्य देश-देसकर वह इठलाती हुई चली जाती थी। या
सी आविष्कार खूब हुक्सा । बहुत-से होटे-सीटे सुंदर की

की जीनकार पूर्व हुआ । वहुत्यक शामाना वार्य पर है की तुक्षीताइक दर्गण निकते, जेबी दर्गण कीर कायरी पर है वर्गण निकते । यहाँ तक कि शासन करनी के पूर भी देखी पालिसा करके समझीते बनाए गए कि दर्गण की शासर की न रही । जब चाहो, तब उनमें मुख देख जो ! सब इन हुआ, परंतु इस मकार का दर्गण चाव तक नहीं निकता था । वरिमों के इस दर्गण ने वो सब दर्गणों के दर्ग को दलित कर दिसाया। उपर कई काँचों को तो प्रयत्न-पूर्वक साथ रसना पहता है, परंतु यह काँच तो क़ुद्रस्ती तौर पर ही हमेशा साथ रहता है। यह तो भूता भी नहीं जा सकता। फिर हस म्हार के किसी कांच को च्याजकल के व्याप्ता में व्यक्तत भी तो पत्ती भारी थी; क्योंकि च्याजकल फैरानेवल' संसार में रूप-पोमा निरस्का को काँच च्यावत च्यावरक चींच हो रहा है। च्याची तरह 'प्रियर सोच' से हुँह रगड़ा गया हो, 'पोमेड वैसलिन' मला गया हो, फिर नए हंग की 'च्य-यु-वेट' मीग सेंवारी हो चीर च्याविश्व महार के 'लेबंडर' लगाय हों, परंतु पक रर्पण के विना वह सच प्रथा हैं।

पण देपय के विजा यह सक पूर्वा है।

कियों ! आपके इस आविष्कार के लिये समस्त जैरानेविक संसार प्रक्री है। आपने तो नायिकाओं के लिये दी

कावाय था, परंतु कव तो नायक भी इसका गुरू समक गय

है। वे भी इसे प्रायण करेंगे। निरुष्य है कि माँग जरून है

के मेंगे। अतर इमारो राय है कि आप शीध इस जरून है

के स्मारार राले तीजिय। वीवायह पणीस हो आयेंगे। इम वो

भाषते सावधान कर देते हैं कि आप इसका 'पेटेंट राहट'

करवा लीजिय, नहीं तो और-कौर लोभी ज्यापारियों के चेत

जाने पर आप इस प्रायदे से हाय यो मैंठेंगे।

सरस सैनिक

हिनम्भ गुलाबी नख थेई, तिय कर पर इमि दांग : बिधि खबिपुर रच्छाहिनै, किए मुनैविक मीम। करपना कैसी बढ़िया है ! किस युक्ति से 'छविपुर' को रही फे लिये बीस मिपादी सैनात किए हैं, ठीक है। ऐसा तो हो^न ही चाहिए। ब्याजकल कलियुग का जमाना है। विखास दिन दिन संसार से उठा जा रहा है। जिथर देखो, उथर सब कोई ख्रपना-चपना स्वार्थ साधने में लगा है। अहाँ कहीं किसी भरतित, बस्तु को देखा, तो मटपट उस पर एक साथ ही बहुत-से मत्पट पहते हैं। ऐसे कठिन सत्तय में कतार छविपुर का गढ़ अरक्षित रहता, तो आरचर्य नहीं कि क्रटिस हृदय उस पर भौंख गड़ाते चौर मौका पाकर उसके चंदर का माल इरण करते। इस वास्ते पहले ही से सजग हो जाना ठीक है। ख़बिपुर तो कोई ऐसा-बैसा कंगाल का गढ़ है नहीं कि **इस**र्में चीरी होने का डर ही नहीं। चसमें तो व्यनत परिमाण में रह भरे हैं। फिर उसको सूना क्यों छोड़ा जाय । परंदु प्रश्न तो यह होता है कि उसकी रक्ता का विधान करें कौन विद्या न, जो उसका मालिक, कर्ता-धर्मा है ?

1-,

विधि ने ही बड़ी कारीगरी के साथ, दिमाग छर्चकर इसकी सर्वगुणसंपन्न बनाया है, और वही इसका स्वामी है। द्यतः उसो पर इसकी रसाका सार पढ़ा। रसा काजो विधान जुटाया. हो उसे देख-देखकर संसार चकित हो गया। पाठक ! सौर से देखिए, किस आपूर्व ढंग पर, किस प्रकार के सैनिकों द्वारा इसकी रक्ता करवाई है। पहले हों नख-रूप सैनिकों को ऐसे-ऐसे चरचित स्थलों पर नियत किया, जिससे धूर्तों का चचु-माक्रमण सहज में न हो सके। प्रम: एक ऐसी थुकि निकाली कि आक्रमण करना वो दूर रहा, आक्रमणकर्ता इन सैनिकों तक आकर, इनकी रूप-सोभा चौर सहदयता को देखकर ही पानी हो जाते हैं, भौर चपने कृटिस चहेरम को भूल जाते हैं। गुलामी, स्वच्छ, चमकीली चौर चाभापूर्ण वर्दी पहने हुए इनको देखकर कपटी इत्यों का कपट और डोंग दूर हो जाता है। फिर ये सैनिक सरस भी हैं। इनकी लिग्भवा राजय दावी श्री भागकल के सैनिकों की तरह थे भाहदय, लहुमार. रुखे मिश्राज भीर शिष्टता से शुल्य नहीं हैं। ये सो हृदय में स्निग्ध हैं —दया-पूर्ख हैं। निस्संदेह, इन गुर्खोबाले ये बीस सैनिक जरूर इस छविपुर की रचाकर सकेंगे। क्यों न करें। रनका सरदार हो वही विधि ही है न !

पहोसियों का प्रमाद

क्व क्योल कहे बहुत लिख, बहे निर्तंब कुव नैन : कही छोन भह जान है, मैनहि नही बेत । नक्योबन का पहार्पण हुआ है ! उनके नवामन

में कारण क्षेत्र-प्रत्या में हर्ष का संचार हो रहा है। आते पौपनराज से कपनी नई प्रजा को पारिसोपिक प्रदान किया है, और उन्हें ऊँचे-ऊँचे खोहदे और पर बच्चों हैं।

> ध्यपने ध्रम के जानिके, येखन नुपति प्रवीन ; स्तनसन नयन निनव को, वही इत्राफा कीन।

केश कमान से कुमेदान बना दिए गए। करोकों को बार सिरोपाय मिला है। वे उसको पहनकर जाली लिए डुए, इधर-उधर, जगर-बगर, जाहोस-पड़ोस में, जालों की निराशी जामा फैला रहे हैं। पड़ोसियों की बदवी देलकर डुप, क्रितंब और नैन फूले नहीं समाते। बड़े प्रेमी प्राणी प्रविध होते हैं। वृद्धारों के दु:स्व में दु:स्व और खानंद में आनंद मनाने बाले पड़ोसी खाजकल कम पाए जाते हैं। किर डुप, निरंध और नैन-जैसे पड़ोसी तो संसार में विरत्ते ही हैं, जो अपने पद्मीसियों की बहती देलकर, बीगुने बहु जाते हैं।

अब दूसरी चोर जली-कटी कटि का प्रमाद देखिए। इससे पड़ोसियों की यदती न देखी गई और यह ईर्ष्या की व्यक्ति से जल-अनकर दिन-दिन चीए। होने लगी। मला इससे उनका क्या विगड़ता, उल्टा इसी का द्वास हुआ। सनमुच, ईर्प्या यडी धरी बला है। पाठक तर्क कर सकते हैं कि कटि पड़ोसिनों में श्रेष्ट कड़ी जा सकती है. क्योंकि शायर उसने हपिंत होकर अपने पड़ोसियों की बढ़ती की यभाई में अपना सर्वस्व दे डाला हो। परंतु पाठक ! क्या दानी भी कभी क्षीण हुए हैं। गीवा में भी कहा दै—''न दि करवायकत करिचत् दुर्गति तात गच्छति।" वे तो क्यों-क्यों दान करते हैं, स्वों-स्वों फुलते ही जाते हैं। चतएव कटि की दाहवाला चनुसान खकाट्य है। चय एक मुर्खा-संद और बाको रहे। आपकाः नाम है मदन महाराज। भाप 'महा' होने से यौबनराज के भी सरवाज ठहरे । आपको 📭 संबंधी बढती देखकर चैन नहीं है। ब्याप इन पर जितनी अस्री हो सके, कर क्षणामा चाहते हैं । जाप कपना मनोरय साथे विना वेचैन हो रहे हैं। इतना लोम और यह जल्दवारी !

हंसों की हँसी

किहिन की मनकार मुन्न, हम गए तिहि और ; मोती बाके हेमत हा, लगे चुगन वा ठौर। यहे-यहे बुद्धिमान् भी बाज वक वंबक्ष वन वैठते हैं। वही दाल दमारे नीर-शीर-न्याय करनेवाने इसीं का हुमा है। कोई अभिसारिका नायिका व्यपने प्यारे से मिलने जा रही है। वड किसी सरोवर के समीप से होकर गुजर रही है। उसकी किकिनी की मधुर रटन सुनकर इसों के मन नाचने लगे। उन्होंने सममा 'कोई मुख्य मरासिनी अपने टांस से विश्व रहर १५४ भा निकली है।' सबके सब कामोत्मच हो वडे भीर इस नव-वपू को बरने की उत्कंठा के कारण विना कुछ जाने बने करे दौड़ पड़े : 'कहीं यह नवेली पहले पहुँचनेवाले की ही पर्राई करे।' यह खयाल करके वे अपनी असलो चाल हो दर पुरदौर दौरे ! पर'त पलक मपते ही घोले की दही रूट गई। धागे जाकर देखते क्या हैं कि कोई संदर की सोलहीं रहें गारी से सज-धनकर मरालिनी की तरह मतवाली और धीमी पाल में चल रही है। सोटे और सुहौत नितंबों पर कटि से लटक-कर पढ़ी हुई किंकिनी उसकी पीन जंघाओं के आगे और

इंसों की हँसी 820 पीडे चतायमान होने के कारण इंसिनी की-सी मधुर स्टन लगाए है। नायिका ने, मालूम होता है, पहले इनकी समम्त की बड़ी

सराहना सुनी थी । जातएव ऐसे सममन्दारों को मोहवश भेवकृत्रवना देखकर उसकी हुँसी न ककी । यह खिलखिलाकर **फोर से हैंस पड़ी।** उसके हैं सते ही चारों कीर मीतियों की-सी वर्षा होने लगी। इंसों ने अपनी खिंदगी में ऐसे मोती कभीन देखें थे। इसतः वे बड़े ही ज्यन होकर मोती जुगने क्रो। परंतुपाठक, बद्दको, वे एक दक्ताठोकर खाकर भी न चेते च्यौर फिर धोस्त्रे में फँसे। आइए. इस बार हम तुम मिलकर इन इंसों की हाँसी उदाएँ।

å

षड़ों की यहाई

 स्थ स्थास कामाई बोड, कुच कठेम होते मैत; निर्नेषन मोटे होन ती, होन न कॉट कहे बैन। वय की युद्धि होने के साथ-साय केश, कुब, युदि, नैन और क्योल भी बढ़े। केरा लंबाई और विकनेपन में और कुर सुटाई सौर काठिन्य में बहें । जिघर देखों खबर ही रोय-रोम है कांति मलकने लगी। कांलों में हर्प, चपलता और प्रेम की एडि हुई चौर कपोलों का लालित्य बदकर जी को ललचाने लपा। अपने मित्र और सहायकों को यों हो बाहोड़ी बढ़ते देख नापिय के मन में निवास करनेवाला मनसिज भी बढ़ा-कार्यात् इसकी कामेच्छाभी बड़ी। फिर तो कात्यत वन की बृद्धि होने से जी सपद्रव दोते हैं, वे होने लगे। कवाली काम की क्षेत्रण से कठिनता से कमाए हुए क्षीमठी रत्नों को दोनों हामों से, कहने दी के कंगाओं को, लुटाना शुरू कर दिया। फिर तो अवाना खाली होने में क्या देर थी।

पाठको, ऐसे रखों को बड़े यन्त के साथ रखना थारिए। जो कल कुछ भी नहीं थे, वे ही ब्याज धन के सद में चूर हैं। कर, अपने निकट रहनेवाले भित्रों से बोलते तक नहीं। वर्षे

सहायता देना तो दूर रहा, चल्टा दुःख ही देते हैं । इसी मद में मस्त होकर कुच इत्यादि ने मोली-माली, लचकीली श्रीर कोमल कमर पर जुल्म करने को कमर कस ली। वे उसे नुरी तरह से पावों तले क्चलने लगे। कठोर-द्वदय काम से कहकर ष्प रारीविनी की सूत्र दुर्दशा करवाई। वह बेचारी मुश्किल से ट्टती-ट्टतो वची। देखा चापने, जो कल उसी पतली कमर से पाले जाकर बढ़े चौर जिनका वह चामी तक भला ही वाहती है, वही ब्याज उसके वैरी हो गए। पाठक ! क्यांजकल ज्माना बहुत शुरा है । परंतु इस संसार में सम ही कुच इत्यादि की वरह कृतव्न नहीं होते।

^{बहुत-से} सज्जन ऐसे भी होते हैं, जो अपने मित्रों की भरसक मदद करते हैं। सच है, वहें लोग व्यपनी बड़ाई को नहीं होड़ते। नितंबों की भी इन दिनों बड़ी युद्धि हुई थी। वें इतने समृद्धिशाली हो चले थे कि कुच इत्यादिकों को भी वनके सामने नीचा देखना पड़ताथा। परंतु इन्होंने व्यपने इस वत का दुरुपयोग नहीं किया। इन्होंने चीगा कटि-जैसे रीन-हीन ध्यक्तियों की यहती सुनाई की और समको अपने सर पर स्थान प्रदान किया । ख़ुद चनको सहारा देकर चनको दुष्टों के घत्याचारों.से बचाया। सच है---"बढ़े बड़ाई ना तर्जें।"

अनोग्वा श्ररविंद

स्र देखि फूले कमल, साम पढ़े कुमलाहै: चाद निरसि पिय मुरति करि, सुभग कमल सिन जारि। सुर्य को देखते ही कमल खिल जाते हैं और उसके श्रल हो ही सकुया जाते हैं। सब बाखियों को चाहिए कि इसी प्रश अपने पोपक और मित्र के सुख और दुःश में हुए तथा शौ प्रकट करें । जैसे सूर्य अपने अधीन कमलों को ख़श करता है यैसे हमें भी अपने अधीनों तथा दूसरे व्यक्तियों को प्रसन्न रहना चाहिए । इससे समार में सुख की समृद्धि होकर धानंत्र मी अतिपृद्धि होती है। देखिए, सूर्य को सुसी देराकर सर्रामा पृक्षा नहीं समाना; कमल का विकास देगाहर भ्रमतें के हर्ष होता है, और इन सबको देखकर मसार के अधित प्राणिये को काकथनीय कानंद काता है। इसीतरह राशी शुर वयुर चत्तरोत्तर बदर्श जाती है। चतएव हमें इमेशा इपिन गरहर स्वर्गानंद की प्राप्ति सहज ही में कर लेनी चाहिए। हमें ग्रं है समान संसार के किसी-ल-हिमी कीने पर निरंप प्रति प्रमन्त्रकार शासने रहना चाहिए ।

धार तक वो कमल दिन में ही खोगों का चरकार करने थे.

959 परंतु अब कविजी ने अपने प्रेम-प्रकाश के प्रमाव से एक ऐसा पदापा लिया है, जो रात को भी विकसित होकर, उन थरविंदों से कहीं प्रयादा जगत् का मला करता है। यह नायिका का क्रांतिमान श्रीर सुंदर हृदय-कमल है, जो चाँद की देखकर क्षीर नायक की सुरत की सुरति करके खिल उठता है, और षारों क्षोर हर्षस्यो मधुर मकर'द की वर्षा करके मन-मधुप को मोहित कर लेता है। यति के प्रमाद प्रेमरूपी प्रस्वर प्रभा-फरके प्रकट होकर क्रापनी प्रभाका प्रकाश फैलाने पर ही इस पवित्र पद्म का विकास होता है। सत्य है, त्रेम में थड़ी भारी शक्ति है।

प्रेम का प्रतिकार

गत्र लाखि कदरावन दरत, दरन दीन दुस मैन 1 जंघ जुगल कदरी किए, चलत गंत्रहिं दुस देंग।

श्राजकल संसार में चारों चोर चन्याय का संधकार क्षण हुआ है। 'जिसकी लाठी उसकी शैंस' बाली कहावत ब्रह्माराः परितार्थ हो रही है। रचक ही अचक वन गए हैं। निर्यंत की कोई नहीं सुनना ; किसी कवि ने सत्य कहा है --

सबै महायक नवम के, जिबन न की उसहाय। पवन जगावन क्यांग को, दीपहि देन बुकाय ।

मृत्य है, श्रवल में सब बरते हैं और उसकी महावना करने के लिये नदा सजग रहते हैं। बारवालों की वहरासी भीर जातिमों के जन्म का कुद ठिकाना नहीं। 'यह चंद्रमहि

ममै न राहु '-- राहु भी टेड्डे चंद्र का प्राप्त नहीं करता, हिंतु पराई सीचा होने पर ही, पूर्किमा में, शमना है। क्षेत्र के वृत्त वहें ही कोमस तथा निर्वेस होने हैं। चनः सदमस्त हाथी भाग्यान्य हरी,

मूर्य भीर मजदूर दृखों में सर नजहां कर बेचारे इन्हीं राधियी का नारा करने हैं। केते के बन-के-बन विश्वसित कर सार्त हैं। जितना साने स्तना साने हैं, बाफी का वों ही पड़ा गए

करता है। उन्हें निर्वतों पर अत्यादार करने में ही आनंद मिलता है।

परंतु संसार एकाँगी नहीं है. उसमें जहां ऐसे-ऐसे जीव हैं, वहाँ बहुत-से दुस्तियों का दुःल दूर करनेवाले दयालु भीर हारा दुरूप भी मीजुर हैं। हमारे महन महाराज भी दीनों के दुःख को नहीं हेल सकते। भागः उन्होंने करकी-रांगों को मार्थिक को नहीं हेल सकते। भागः उन्होंने करकी-रांगों को मार्थिक को जंपाओं का स्वरूप हिया, जिनके सीर्यं-भार से मूम-मूनकर पकते के स्थाप का निर्माण कर नाविका भागती मत्राला वाल से मार्थ मत्राला वाल भी मह पूर्ण करने लगी। वसने वाल से मार्थ भागत कर दिया। वनके दुर्प-परंद सी मीया न रही। यों करको-अपनी ने नाविका को जंपा बनकर द्वारियों से बनके सरवावारों का बरला, बरले में सरवावारा किय

124 /411

रणा का जातर जुल रुखन के कल कहें सामग्रीकृत काम बाद सेचल क्राप्त से हैं।

मारिका करन करियान के स्थान उत्तरीत हो देश हो गरी वी मेला ६ रेन दोने बात, बार्च अंतर महाराज एक प्राथित मुन्ति के विकास के विभाग कर सहस्र अपने देश सामा देश में मिल रे जा रहें हैं। यह ना स्वधायनंत्रत ही है कि यह किसी का कार्र स्वयं कार का बाग्य है, क्य वह प्रस न प्रांत हा शामें भिन्नी का फलाए वा वसके कार्यन शाला है। यह नी मगा का शासारण किनाम का कुमा । जम का मूर्ति मरागात मान के कि रे ना वर कावध विश्वन, किन्न बीका बाहिए। वर्षेष विभ भ्रेम का श्रेरणा बाग कर मिलना गुकरा बेंगी है। हमी प्रेय की तो धैन बदायब मार्ने दो है । कीर विश् ये महागर भी ही देनेनीन नहीं हैं, जा इनका निजन किसी रह की तरद चिना दिनी राजमा कार के हो ।

षण इनके शहर-बाट का भी हिस्तुरीन कर सीवित्र रे सम्मानित दिय दिन बसंत का हा है । इसको लिया हाने के तिये क्षाच्छी सुवर्ण-कारारी से साम हासी है, जिसकी एक बैठक पर ने बैटे हें और दूसरी बैठक खालो है। और यही है वसंत के लिये। मंगल समय है। खतः हागी भी खूल सजा हुआ है। पैरों में जो पायल पढ़े हुए हैं, वन्हों की खालाज नायिका के पैजनों की रच्य व्यक्ति के सहसा है। हायी बहा मुक्त-मृत्तकर मत्याली चाल से चल रहा है, जो पीन अंध-पुगलधारी नायिका की युवायस्था को मत्यलाली चाल की हुयह नकत है। यह बगारे जा रही है बतं क को लिया लाने के लिये, और बही बतं नायिका का छिए उपचन है। इस प्रकार जाती हुई यह कामिनी गक-भीठ पर विराजसान कासरेव से कमनीयला में हुक कम नहीं है। तभी तो किंपती ने बटलेखा करके हमारे हरद में आनंतिक थे ज्यादित कर दिया है। धम्य करिता-कर्य-कलानिक !

पहामुनि मन

रधी बरन तब धाय होसनीम निय छवि निराणि । सनमुनि नाहि पुणाव, माम रिमावन आसि गुग । मील गगन में विचरण करता हुआ, आशारा-गंगा में स्तर करके और उसमें उमें हुए चनुठे-चनुठे कमलों का रसाखान फरफं, मन-मुनि ऊँची-ऊँची चोटियोंबाले वर्वतों पर कर पहा। भीर वहीं से मीचे के मैदान की खपजाड उपत्यका को देस-कर नीचे उतरा और हायियों तथा सिंहों के निवासत्यान, पने वन को पार करके, पर-पदा के नीवेशाली साल और सुफोमल जगह पर चा दिका। किर सालम नहीं इतने ऊँवे से **एतरने को यकावट के कारल वा सिंह इत्यादि बन्य अंतुओं के हर** से व्यथका पदतल के व्यनुसाग के कारण, उसने ऊपर चठने का नाम तक न लिया। योगिराज की तरह हदासन मारकर वहीं बैठ गया । श्रांखरूपी श्रप्सराओं के लाख रिमाने पर मी नहीं से नहीं दिला, तप अंग नहीं हुआ। हमें नो यही माल्प होता है कि इस उत्तम स्थान को उपासना के उपयुक्त समग्र कर वहीं सिद्ध योगासन लगा जिया-समाधिस्य हो गया। हम हो इन यन-मुनि को सबसे सेष्ट योगियात्र मानते हैं।

महासुनि मन १३७ देखिए, जिन चरणतल को योगिराज ऋष्ण तक ने ऋपने

मतक पर सादर धारण किया, भवां वन चरणों की वपासना इरनेवाले चौर वन पर लुठनेवाले महाश्रुनि मन के महत्त्व की महिमा का हम कहाँ तक चलान कर सकते हैं। हमें सो कहीं हन चरणों के रजकण मिल जायें तो बस पर्याप्त हैं।

लयन की नानी श्या परिमाण पर, महे बह अहमान :

क्यं क्राप्त शोभव सबद् चल्य होत कामान ।

रापा साल रंगको नाही पहने हुए खड़ी हैं। बडी मुदर प्रतीत होती हैं। इतने ही में वहाँ कृष्ण महायव भा पहुँचे। विषा के रूप-नावल्य को देखकर मनमोहन

मुग्प हो गए: विरोपन: लाल साड़ी की शोमा का निरलकर खुद प्रेम की काली में नगवीर हो गए। प्रेम-विद्वल होक्र,

लरककर, प्यारी को गीर में उठा लिया। उस समय कृष्ण

की गोद में राधा इस प्रकार शोमा देती हैं, मानी सायंकातीन नम की लाली में सूर्य करल हो रहे हैं । क्रय्ण सायकालीन नम हैं। राषा की लाल साड़ी नम की लालिमा है। साड़ी

में से राभा का मुख चस्त होते हुए सूर्य के सहरा प्र^{तीह} होता है । नेचर-निरीचकों से यह बात जिपी हुई नहीं है कि

अस्त होते हुए सूर्य में चकाचींघ करनेवाली तेजी न रह^{कर}

लाली ही अधिक दिखलाई देवी है। उचर कृष्ण की गोद में लज्जा के कारण, चैसा कि कियों में स्वामाविक है, राघा दा मुख लाल हो गया है। ऋतः राधा के तत्कालीन मुख-इमत को ललन की लाली 139

श्रस्त होते हुए मूर्य की उत्प्रेचा वास्तव में अनूठी है। 'प्रेम' को अनेक धन्यवाद कि जिसकी बदौलत हमें राधा-कृष्ण की ऐसो सुंदर माँकी के दर्शन हुए हैं।

रंग में रंग

च'लकरका है शांबका, वेद आले कमेरीर : च'ल वाल जो बरल है, जिस जय अनुक्रांति !

भक्षा ! क्या ही सु दर भाव है । ये मियों को परमेश्वर ने न साने कैसा कोयल बीट कोट-निजय हृदय दिया है कि वे वाले ध्यारें की सरोक बरनु को वसी की मूर्ति के सहरा जातकर समझे हृदय में व्यान देते हैं। प्रिय की निजीव बस्तु को मी सजीव सातकर क्समें बीट अपने मिय में कोई भेद नहीं देखी। या यों कहिए कि वनके प्रेम में यह शक्ति है कि जिस बातु में चार्से, के प्रिय के दुर्शन कर सकते हैं। जिस निजीव को बारें सस्त्रीय सह समीव कर सकते हैं।

सब है, प्रेम की महिमा क्यार है। साचान प्रेम के बावता , भगवान भीकृष्ण को ही बीजिए। बनका न्यापार वो देखिए। प्रोम वनसे क्या करवाला है। प्राच्छियतमा राणिकाजी की सन-स्वि कनक के समान पीतवर्ण की है। ये तो वनको वही ही प्यारी सगानी हैं। पीतवर्ण भी चनको बहुत कचता है। क्यों न रूपे, यह वो चनके हृदय की प्रतिमा रामाजी का ही वर्ण है। यही कारण है कि इस पीले रंगे ने बनके हृदय में बांत वर्ष स्थान पाया है। वे तो इसी में सब सींदर्य सागर की मरा पाते हैं। जहाँ जाते हैं, पीत-ही-पीत पाते हैं। सचमुच, प्रेम का पेय निराला है।

पाठक, आपको अब यह तो माल्म हो ही गया होगा कि रयाम मंदलाल को पोतवर्छ क्यों अस्यंत रुविकर है। स्वय भाप छनके पीतांबर धारक करने का रहस्य भी समक्ष जायेंगे। भौर, भौर रंगों के सामने उनकी भाँख का पोला रंग ही चच्छा सगता है। जहाँ उनको कोई योकी वस्तु मिली कि चारमा फड़क ष्टती है भीर मन प्रेम महानद में साते खाने लगता है। उसी समय राधिकाजी की मनमोहिनी मृर्ति, चाँखों चागे मुसकिराती हुई, खदी हो जाती है। यस. उनको स्वीर स्वा चाहिए। यही कारण है कि कंसारि पीले वस्त्र घारण करने में ही सुख पाते · है; उन्हें ब्लीर रंग के बल ही नहीं ठवते। भला क्यों रपें ? ये तो पीले वस्त्र के रूप में ही शिषकाजी को ध्यपने चन से क्षिपटाए रस्तते हैं। घल्य देशें म, तूधल्य दे; तेरी महिमा कहाँ तो वस्तान करें। क्षय तो केवल यही जपते हैं---में स, प्रेम, प्रेम !

कीं वं की क्याब रण पुरावनों उसे अंग्रहर में साथ,

विकास ते क्षा तिलेश तर हरण अन्तरी **द ल** र

सात का वह साथ का १६ शवका इन्हान है। भी, वह चैपरा ता शृह है। यान यान से हैशका नेतान हो ता है। कात तब तक हा थोड़ सेशत से खाका जिल्ला मेरण या, तक तक कि कम किल्ला हा कर न वा । वर्गन सम में उसे सा इस तककात कात के चार वर्षक तान के स्तो वह रहें हैं। सी, दमारी में तान कथा ' तक तक वह रात के स्तो कात नकार न किए सी, तक तक दमे सी, चीर वालें से नितर जाना महिए। हम योग वाहें जिल्ली आलगाल निकान, चारे वहानी सामात बहुते या ता बहुते, हमें सामायाल कहाने बीर बाल की स्त्रा सीवने का सम्मा सबकारा मिता है। यां, सारी की साम

सबसुब बर्जि ने इस दोहें में कमान बर हिया है। इसके सार्यने युरुमने कदियों की दो दान होन यनती होती। बान वहना का सपकीता रागिर, गंभीर जाभि-कुए, सुंदर सहर सारी हैं विवती, पेट पर की तीसी और चमकीतो रोमानती तथा पर

देखी जायनी । किर कीन कर सकता है, क्या हान होगा है

583

^{तृत सक तटकते} हुए बेखी के बालों ने कवि को मालामाल करके निहाल कर दिया है। निराले हो ढंग की कमान है। मला जव शिकारी इस कमान पर बेखीरूपी, कमी 🖩 टटनेवाली प्रत्यंचा चढ़ाकर, रोमावलोरूपा वार्खों से भरा हुआ त्रिवली-रूपी निपंग लेकर मतवाली चाल से चलेगा चौर काल की देखते ही रोम-शर को नामी नली में डालकर और धनुष पर चढ़ाकर कान तक खोंचकर तानेगा, चौर जो कहीं काल के भास को ताक-करतीरको छोड़ देगातो फिर उसका यचनाकठिन ही नहीं, भर्तमव हो जायगा। फिर वेचारे मनुष्य, जो थोड़े काल में ही फराल काल के जाल में फँस कर चसके विशास गास में रार्फ ही जाते हैं, कहाँ जावेंगे ? घस, यदि वह बान तन गया सो समक्ष लो इन सरीव जीवों का तो अकाल सा पड़ आयगा। रहम करे इन के हाल पर नंदलाल !

ञ्चोस या श्राँसृ

श्रोम बूद वे हैं नहीं, वो दत-उत दिसतात ; श्रोस गिरत गुलाब के, निरम्बि प्रिया को गान । गुलाब के पुष्प पर इधर-डधर जो बूँहें पड़ी हुई हैं, वे श्रोस

करा नहीं हैं, किनु नायिका बिरोप के शरीर की सुंदरता देश कर, बाह के कारण, उसके जाँसू का रहे हैं। यह पह देश कर बशा दुखी हो रहा है कि नायिका सींदर्य में उससे यही-चरी है। बहुत समय है यही बात हो; परतु कोई बस गुला से दरयाक्त तो करें कि दरअसल माजरा क्या है? सुमन्ति है, ये हों

के चाँच हों। गुलाव को च्यपन हो सहजातीय दूसरे गुलाव की देखकर बड़ी आरी जुरी हुई हो कि जिससे चाँकों मे प्रेमाई ट्रयक्ते लग गए हों। लेकिन चागर ये चाँच हा के कारण चार हैं, तो यह गुलाव को नात होंककारी है। यह सरासर चसकी मूर्कता है। चकेले गुलाव हो ने सुदरता का हैका

धोहं ही ले रकता है। इस प्रध्यो पर एक-से-एक बहुकर पुंरि जिलते हैं। कभी बचारे गुलाव ने देखा-माला ही वया है। यों दूसरों की मुद्राला देखकर यदि वह रॉने समंगा तो क्यानी मुद्राला से कीर हाथ यो बैटेगा। मान आओ, नियाँ गुलाव! श्रीस या शाँस् १४% यह रोना-पीटना बगा सीसे हो ।" हवा के साय खून श्राठकेलियाँ करो श्रीर मने वहाशो । योड़ा-सा हमारा भी स्वार्थ है, इसलिये घटते हैं, बरना हमें क्या मतलन है । जैसा चाही वैसा करो । इस, केनल हन्ना च्यान रखना कि रोने-रोने शाँसुओं के साथ श्राप्त हो हा चहा हैया, बरना दूनरे घरों में श्राप खा जावता । तुन्हारी सुपंत्र के प्रीययों के लिये मामला नाजुक हो जावता ।

मयंक का माँह

रात केनि डिय थाय इड. सरिता बल गई नार ; भयो सुग्व खेंबि निरस्ति शार्शि, सेवित रूप प्रशार । क्या आपने कमी शुरूपच की रात्रि को किसी सरिता सट पर साहे रहकर देखा है कि कोई चमकीली बस्तु वीत्र गति से इधर-उधर दौड़ रही है ? और देखकर भी कभी सीवा कि वह है क्या ? जगर नहीं, तो सुनिए । ये यह महोदव 👫 भेम के मारे हैरान हुए इघर-उधर बाबले-से फिर रहें 🗓 इन्होंने इसी सरित-जल में अपनी एक प्रिय वस्तु शो ही है। जसी की तलाश में ये दौड़ रहे हैं। मात यह है कि एक धर्मि को एक चंद्रमुखी नायिका मखियों सहित इस सरिता में अ^तः फीहा करने आई थी। चंद्रदेव की इसकी सींदर्य-शोमा पर भौस सग गई। वे इसकी छटा पर दिलोजान से किया हो गए। वस समय को अपनी प्राण-प्रतिमा को देखकर मन**ी** मन पस स्वर्गानंद को खुटने लगे, जिसको शिरले सीभाष शाली पुरुष ही वाले हैं । वे इसकी बाठरनेलियाँ देशका पागस हो, निस्तक्य भाव से, चानिनेष नेत्र इसकी हरि हो निरपने क्ये।

880

इथर समय बहुत हुआ जान, नायिका जल के बाहर निकती धौर सस्तियों सहित अपने स्थान को चल पड़ी। चंद्र महाराज का दिल लेकर वह चली गई। यहाँ ये महाराय षभी तक तसी के व्यान में सम्न थे। इनकी दुःख की पड़ी भामी ग्रुरू नहीं हुई थी। इनको तो यह मी खबर नहीं थी कि जिसकी सुधि में ये लीन हैं चौर जिसकी प्रतिमा मन में देसकर येमन के मोदक उड़ारहे हैं, वह तो कभी की वहाँ से चल दी। व्याखिर इनकी मोइ-निद्राजागगई। जब तो इन पर दु:स्त्र का पहाड़ टूट पड़ा। कहाँ आयें, कियर जायें, भिया को कहाँ हुँहें ? ध्यान में ऐसे चूर थे कि जाते वक् प्सकी राइ भी नहीं देखी। इनको तो इतना ही स्मरण था कि **वह** जल में केलि कर रही थी। वस, अन्य क्या था, लगे विजली की गति से इघर-छघर जल में दौड़ने। सन सरिता द्रान दाली, पर बहुन मिली। क्याकिया जाय ? वेचारे चंद्र की इस दयनीय दशा पर दया हो व्याती है। व्यगर किसी ने नायिका को जाते देखा हो, तो बतावें, जिससे इस सुषांतुकी प्रेमतृषा अुके। देखो, ये इस शोध गति से इपर-उधर भागते हैं कि यह पहचानना कठिन है कि एकरूप होने पर भी अपनी द्रुतगति से अनेक-रूप ससित होते हैं, या वास्तव में ये अपनेक रूप घारण किए हुए स्त्रोज कर रहे

186

हैं, जिससे स्रोज में सुपीता हो चौर समय मोड़ा सरो । य

भृति प्रकट करनी चाहिए।

सोपना भी व्यववार्य नहीं है, क्वोंकि चंद्र तो मावानी हैं है।

को **वस समय जाते तो किमी ने न** देखा होगा। यदि ऐसा ही है, तो ये अपनी धुन में मर मिटेंगे। इनको इस मंतन्य से कीन इटा सकता है। इनकी दुली बसा पर हमें भी सहाउ-

वे जब बारें तब सारनें रूप घर सें 1 वर, ''बीती ताहि विसारि दे, भागे की सुचि लेंद्र।" इनको राह कौन बताने; नाविध

र्शिकाती

छविकी छुदाम

विधि के हाथों सकल श्रवि, सारह व्याने दास ; मिली प्रिया कई राव सब, जग कई एक हदास।

विधि के हाथ में पूरी सोलह बाना शुंदरता थी। बसमें से उन्होंने सारे संसार को एक छदाम सींवर्ध देकर बाली सब कृषि प्रियाजी को दे हाली। फिर मला श्रियाजी को सुंदरता के सब क्यों न शीत गार्थ। जग के हिस्से में केवल एक हराम छवि बाने पर भी खुबसुरक्षी के वे नायाब नमने नकर

हराम हांवि ज्ञाने पर भी जुनसूरती के वे नायाव नमूने नजर ज्ञाते हैं कि जिनकी कोई तारीफ नहीं की जा सकतो। किर मता जहाँ एक हदाग कम सोलह ज्ञाना रूप है नहीं की

रोमा का तो क्या कहना है। तभी वो कष्ण सहरा घोमी-रवर पियाओं के बरखों में शीश घरते थे। इसी रूप के बत पर तो प्रियानी ऐसा मान किया करती थीं कि मनसोहन के बास मनाने पर भी नहीं मानती थीं क्यों मानतीं, जब थे यह

जानवी थीं कि र्जात में मोर-मुकट उनके चरणों में लुटेगा । सच है—''है प्रमाव चींदर्य को सब पै एक समान !'' प्रियाजी में सींदर्य इतनी प्रचुरता से पाया जाता है, यह

ानवान म सादय इतनी प्रचुरता से पाया जाता है, यह सुनकर रूदाचित् इमारे नई रोरानीवाले भाइयों के दिलों

इतिनानी 104 में भी दियाती को मींदर्गोरामना की सरत से देखने की

इण्या हुई हो । सगर ये बेचारे सींहर्य को क्या परहेंगे।

इनकी भौरों में तो 'बीनम दी, मायली', 'हैलन' भौर भेरी कीन चात्र स्काट्स' की मु'दरता समाई हुई है।

खजीव खोचिं

विधि को यह प्रचरन सहा, तिथल्ली सं प्रकटाय: नयन-वान चायल करें. अघर-सुधा हरवाय । पाठको ! स्वायने बड़े-बढ़ें की तुकागार देखें होंगे; उनकी सैर की होगी, परं<u>त</u> क्या आपने कभी विधि के इस संसार रूपी

ष्टितीय पृहत् कौ<u>त</u>कागार की विवित्रताएँ देशीं ? अगर

नहीं, तो चाइष, कविजी ने क्रपा कर इस क<u>ौत</u>कागार की एक विचित्र वस्तु दिखलाने का बादा किया है। समस्त कीतुकागार को तो देखना कठिन काम है; परंतु लीजिए, जाज तो इस ^{'न्}यृजियम' की एक ही चीज देख सीजिए । उसकी विरोपता पर विचार कीजिए और तब अनुमान कर पीजिए कि इसी प्रकार की व्यपरिमित्र वस्तुकों की

सुनिय, भापने संसार में बड़े-बड़े वैदा, डॉक्टर, हकीम, देखे-हुने होंगे; भिषक्रबों से भेंट की होगी; 'एलोपेथिस्टों' श्रीर 'होमियोपेथिस्टों' का नाम सुना होगा। इनका कार्य देखकर यह भी जाना होगा कि ये अपने-अपने अनुभव के अनुसार

भागार, यह क<u>ीर</u>कशाला क्या ही कारीगरी का नमूना

होगी ।

१५२ रति-रानी

भोपियाँ देकर बोमारों का मर्ज दूर करने की कोशिश करते

फोई ऐसा वैचराज देखा है, जो चति पहुँचानेशला भी हो

हैं। परंतु क्या, जापको याद भी पड़ता है कि, कहाँ आपने

श्रीर फिर चोपधि-प्रयोग द्वारा चच्छा करनेवाला मी हो । हमें निरचय है कि व्यापने ऐसी बस्तु सजीव और निर्जीव सृष्टि में कहीं न देखी होगी, जिसमें मारण बीर वारण के विरुद्ध गुरा एक साथ हों । अच्छा वो ध्यान देकर सुनियः आपकी इस चल्कंठाको कविजी पूराकरते हैं। वे कहते हैं कि अब इन डॉक्टरों का पेशा नष्ट हुआ समन्त्रो, क्योंकि सब काम विरोपतापूर्वक एक ही दवा से निकत जायेंगे। यह दवा की के सुमुल रूपी शोशी में रक्की हुई है। इसकी अजीव गुरा यह है कि नयनवाओं द्वारा घायल कर यह इथर मारण का कार्य करती है, तो उधर बुरत ही ब्रधरसुर्याः पान रूपी भरहम को उस घान पर लगाकर बनाने का कार्य करती है। अच्छा हुआ, जिस विधि ने इस प्रकार का रोग धनाया, उसी ने साथ ही साथ, यनुष्यों पर दवा कर, झच्छी और अच्क स्रोपधि भी बता दी। यही नहीं, उन्होंने दवा हो इतना सुलभ कर दिया कि विना प्रयास ही, पास ही ^{मिल} जाती है। जिससे कि रोगी को महुत काल तक दुःस नहीं भोगना पढ़ता । ऐसा न होता, हो भला नवनवालों से घायल

ń



१५५ पर आप ही फिदा हों गई हो। यह बहुत संमव है, क्योंकि यह **बटरूपी नागिन षड़ी बुरी होती है । कोई श्रारचर्य नहीं, यदि** इसने चपने चापको उस लिया हो। यह चनरय कोई खास

श्रात्म-श्राधकि

सागिन होगी। सामृली नागिन का तो यह काम नहीं है। जो नायिकाएँ इस प्रकार खटरूपी नागिनें पालती हैं, चनको चाहिए

कि इनक्षो क्रपनी निगरानी में रक्खें, क्योंकि ये बड़ी खतरनाक

हैं। ख़ुद खपने खापको इस लेती हैं। फिर मला सैर तो इनसे

षच ही क्या सकता है ?



भान-माचन

नागिन री प्रिय रैपीठ थै. बोलि श्रेठ धनश्यास : हरदराय रुद्धि मान लखि. पिय मों निपटी बाम । धुनते हैं गुरु विना झान नहीं चाता। इसी बात को शास्त्री ने भी पुकार-पुकारकर कहा है। जहाँ कहाँ जाप किसी पंडित को देखें, तो पूछने पर पता सरोगा कि उनके कोई-न-कोई माइरणीय गुरुजी कावस्य रहे हैं। परंतु इसके विपरीठ, महाकदि प्रेम के प्रेम-साम्राज्य में विद्या विना गुरु के ही भच्छी तरह क्या जाती है। ज्ञाप पूछेंगे कि यह तो बड़ा भारवर्थ है; भक्ता, विद्या भी कहीं विनागुरु के का सकती दे । चाप एकसञ्य का स्प्रांत देकर प्रमाण भी देंगे । परंतु म्या हो, आपके ये सब प्रमाण यहाँ किसी काम के नहीं हैं। भव सुनिय, नीति, चालवाची और चतुराई ये ऐसे विषय हैं कि प्रेम-साम्राज्य में विना सिखाए ही आ जाते हैं। हैंकिन इन्हीं विषयों को सीखने के लिये आजकल बड़े-बड़े पुरुषों के पैरों पर शीश मुकाना पड़ता है। इन्हीं की प्राप्ति कें तिये देश देशांतर घूमना पड़ता है। इस विद्या को आज-इल लोग डिप्रोमेसी के नाम से पुकारते हैं ; और इसका १५८

द्यान्ययन बड़ी धूमधाम के साथ इँगलैंड की एक से एक कई जगहों में होता है। तम कही जाकर यह विशा पर दराल कर पाती है। परंतु इतना करने पर म

रवि-रानी

षड़े-से-बड़ा डिसोमेट प्रेम की चाल देखकर चकराने लग देश्विए इसी प्रकारकी एक चाल का यहीं भी ६। राधिकाजी ने कृष्णजी से, प्रेम-कतहकर,

ठान लिया है। ये प्रियकी सेज पर, तत छीन मन म मुख का तथ बदले पड़ी हैं। इच्छाजी से प्रियाण वर् सहन नहीं हो सकता । परंतु वे बन्हें सममार्थे भी ती । सुन्य से। वे दी नो इनके कोप के कारण थे। धाग: एक प

ऐसी यक्षी जिसमें सामका इपर-दा-क्यर हो गया। चाल को तो सुनकर ही बहे-बहे शिश्चित नीति-बुशल मन् भर मुजकाने समेंगे। दिया यह हि सुख वेश हुई गांखी की पीठ वर पढ़ी बेली को देश, शांतिन की गुरिका,

यक्तम बोल कडे-- "नागिन ही दिव ! वीठ पै।" बाब बन या । मना गेमा बहने वर स्थाव-भीर बीमव-17¹ रायाजी हिम अदार चुप काती है वे तो सार दर दे वर्णे र्याने, चीर वदर्प विना गोचेनामधे मात थी थान थे हैं मानकर शीयना से मुख केर कृष्णनुती के बांद की शार्त सी। मान सब इट त्या। वृत्ते के तेम की भं^{ति}

मान-मचित १५९ मान के मंजन से साफ होकर और प्यादा जग-मगा उठी। पाठक, देखा, इसे कहते हैं चतुराई;। इसे ही क्हते हें मस्तिष्य की कार्य-उत्परता। यही है उचकोटि की डिप्लामेसी या पालवाची। अन सोविए, क्या कृष्ण ने यह विद्या कहीं सीसी थी, जो इसमें ऐसे निपुण निकले ? नहीं। दो फिर धन्यवाद दीजिए प्रेम को, जिसकी बदौलत यह षनायास ही प्राप्त हो जाती है। 2.

कलामाध का वालेक

केंद्र करना दिन है में दिन, हन मा दिनाई देत । नो नमान बद मान करि, विद्यान के दुख देन । रामान में जोद्रोज ना सम्बंधिक देशाचा विद्यार कर हो नाविका करनो यानि नेज के साथ बद्धान करा निरीधण

रही है। चौड़नी हिड़क रही है, साने दलत का विश्वीत दिया है। नारिका चंद्र की खाँच नेसकर बड़ी प्रधान में है। शारित चौ सोमा की सरसने हुए वराने नायक से पूर्व पढ़े प्राराजाव ⁹ चंद्र का हुएय स्वास दिस कारत से दिव नेता है ²⁹ नायक बड़ा चतुर या। यसने समान दिव बड़ काम्या कामध्य हाल नाम है। नेबार की नारिका

भूगते बहुत नम हिला करती थी । बान भर, ताते भन्त शुनाने थी मी में सातकर शात से इस प्रथा, भी भान में बाला-भागते स्वारं ! बात तेर बी सभाग तात की

दिरही जाते की बहुत हुन्त देश है। धरी या वर्ष प है कि करदा द्वरच बाला हो मगा। मान घरों में बहारी सान दोन्य है। इस्ट मान कही घटना था की स्टरनी हैसा काम क्षम है। इस्टा मान कही घटना था की स्टरनी निसं तरह त् मान करके सुके दुःस देवी है, इसी तरह यद विराहीजनों को, जो बेचारे विराह के कारख पहले ही से दुवी होते हैं, मान करके जलाता है। इसीलिये अब अपने कर्मों का फल भोगता है। मान करना महाचाय है। और अपरामों को चाहे परमाला जमा कर है, परंतु सुनते हैं

भन्तपा का चाह परमातमा साम कर द, परतु सुनत ह कि मान-ऐसे घोर पाप को बह कमी समा नहीं करता । करा: भाज से तूभी भविष्य में मान न करने का प्रख कर लें।?

भाज ते तु भी अविष्य में मान न करने का प्रण कर ले।"

पूर, नायक महाराज! जो कुछ कहना है, दिल स्रोतकर

कर सीता । किर ऐसा मोजा नहीं मिलेगा । इंतर के प्रमाद करदेश का कासर हो जाव । हुमने लेक्चर तो खूब ही

प्रकार देरे, मततब की सत बातें कह बाली हैं। च्यार किर भी नाकास्यारी हुई, तो लाकरोर की बात। किंतु ऐसी हालत में नाकास्यारी हुई, तो लाकरोर की बात। किंतु ऐसी हालत में नुम मान को एक निराला ही च्यानंद समक्ष लेता।

वाम विध

चवती सर्वाई नगर विष, देल या दे है प्रागः बाढे कप्ता है गया, चेह कपूरी क्षा ।

सुनने हैं. राजनीति बार प्रकार की होती है-साम, १९३ दंड भीर मेर्। इन्हांके यन पर शजा चर्ना शांव व र्पार्यस्यति ठीक रख सहता है। परंतु क्या बाप समगते हैं यह नीति संसार के राजाओं में हा हाती है। बचा पर्वति है

इसका ठेका से रकता है ? खगर बारका तेना खगात है। ये च्याप राजना पर है। च्यापका व्यनी धमन्याद्याप का पत मरी है। वहीं ना इस नाति का अगढ बमा पुरा ज्ञाता होता है। बद्दी पर यह ब बुर परिमाण में प्रयाग में चार्ग है। परी ना

वर्ष यह नोति सहा सकत हो होती है। राजामी के राष में पड़ी हुई यह क्यों-क्यों दिक्सप्यान मी ही जारी है। भी

नीति के प्रशासकारणा, प्रथम के हीरे से बालकी मार्च राग्य कि बेम में जीति का क्या ब्वान है, कीर प्रमाने क्या भीत. भौर प्रचार की मेर्डिन से क्या बातर है।

मानगरिंग नारिकाको विश्वनयाने क्या कि वे ध्वारी

बार १० इंगा बान की होड़ है ; ईसरी वरी, इन बार ने

वाम विघ कितनी-कितनी द्यानियाँ पैदा की हैं। इसी के कारण तो वेचारा सींदर्य-जगत् का सिरताज सुघांशु वक-रूप हो गया है। जय

863

इसने भी तुम्हारी तरह मान किया, तो यह दशा हुई । मान बहुत सुरी चीच है। तात्पर्य यह है कि ऐसा कहकर नायकजी नेयह ध्यनित किया कि मान से जिस प्रकार धह टेवें हो गए, उसी प्रकार तृभी विक्ठतांगी न हो जाय । यह कहकर वो नायकजी ने काजीवनस्थायी भय का वह कंकुर नायिका

की हरपस्यली में जमा दिया, जो व्यवस्य फलीभूत होता। इनको नीति-निष्काता का यह नायाव नमृता है। दंढ अर्थान् पमकी चौर सवा के सहारे राजा न्याय करता है, परंतु इसका न्याय कभी-कभी विलक्क्त निष्कत होता है। पर यहाँ तो घमकी षा फल ब्याजीवनस्थायी ब्यौर चट्टेस्य-साथक हो गया है। एक ही बार की सृदुधमकी ने बह काम किया कि मविण्य में घनेक सुस्र में विध्न डालनेवाले कार्ये। का कारण मिट गया। बाइ नायकजी, नीति इसी को कहते हैं।

हो गया है, परंतु नायकजी अभी नहीं पधारे हैं। देशारी के हृदय में रह-रहकर भ्रमेक खवाल उठते हैं और तुरंत 🛈 शांत हो जाते हैं। उनके न चाने का कारण सोवती है, पर्

चाज तक तो उसका यह दिवार था कि मेरे प्रेम में 🎹 चाकर्पण-राकि है, जो उन्हें जब बाहे मेरी चोर सींय ण सकती है, परंतु बात इसके विपरीत होते देश, बगरो चारााचों पर पानी फिर गया । सोचते-सोचते वह मजा वरी भौर सगी भागक पर कोप करने । सोपा कि बाज बारी ही चनको ऐसा आहे हार्यो सुँगी कि फिर इस प्रकार की ग्रहना फर्मान करेंगे। फिर तो मुक्ते अवीका करने का कोई सीरा हीं न चायगा। चलने तो सोचा था कि चेवल चात्र है मंग्रा-सुरा करने चौर कॅवा-नीवा होने से सन्ना का मंगट चौर मी: दिन की प्रतीक्षा मिट आपगी। वर्ष हुआ क्या, सो गुनिर।

पियं धावत ही सान की, दियो लाल जिमि गारि।

नायिका त्रियतम की प्रतीक्षा में बैठी है। समय बहुत प्यारी

कुछ पता नहीं लगता ।

पिय धनह बाए नहीं, देहां काखां गारि।

मान-मर्दन

बार । इसर नायिका भी इस समय तक रोपान्ति से खूब संतम हो जुकी थी। परंतु देखिए, इन दोनों की चार व्यक्ति होते ही सब दरव ऐसे पदल जाता है, जैसे किसी चतुर मंत्रिक के मंत्र-कौराल से विच्हू के काटने से तक्कते हुए की टयमा एक-दम मिट जाती है। जिस सान खीर रोप के बल पर वह दम मिट जाती है। जिस सान खीर रोप के बल पर वह

नायक को सुरा-मला कहने का संकल्प कर चुकी थी, वसी मान कौर रोप को जसने इस प्रकार दिल से दूर कर दिया, निस प्रकार मञ्जय किसी पृथ्यित वस्तु का निरस्कार सहज ही में कर देता है। जिस प्रकार लाल बहुत अल्टी ही काग

ज्सका यह मनोरथ सफ्ल न हुआ । कुछ समय के बाद रसीले नायकजी मुसकिराते हुए दूर से इस आरे आने नजर

के संसाने से गल जाती है, बसी प्रकार प्रिय के समागम से ब्लाइग भी मान तुरंत गल गया । देखिय, इन्ड-का-इन्द्र हो गया। या तो ब्लाइन की तरह कोपानि से प्रकार कित-सी हो रही थी, या दूसरे ही एक में नायक की मिलकर इस प्रकार शांत हुई, मानो उस पर कुला हुट हो गई हो । सप्तान प्रेम की सीला निरासी ही है। इसने तो महुत-सी मानिनयों के मान इसी प्रकार

गला हाते । भगर प्रेम पृथ्वी पर म होता, तो यह समस्त संसार फलह- १६६ रित-सनी पूर्ण होता । सांति, स्तेह चीर सींहवीवासना का सप्ता में न चाता । घट्य है प्रेस ! तेसे सांति सहत् हैं। तभी से हीलें

मे कहा है कि प्रेम ही परमेश्वर है।

दतियों की दुष्टता

मान दन्या जो बांश तिय, पिय सन पान्यो चाहि : भौतिया दृतिया प्रेम की, सुग्ध साव समकाहि।

प्रेम में मानलीला को देख-देखकर बहुत-से रसिकों के इत्य में प्रयाल उपजता है कि इससे रंग में भंग पहता है; पह तो मैम का मजा मिट्टो में मिला देता है, और इस कलह से प्रेमियों के हृद्य चात्यत दुःश्वित होते हैं। पर तु उनका यह

विधार असरशः सत्य नहीं है। मली प्रकार विचारने से यह सिदांत निर्मृत और भ्रामक सिद्ध होगा।

दैपिए, संसार में गुणों के साथ-दी-साथ चवगुण भी न हों, हो गुर्जों का पूरा विकास नहीं हो सकता। व्यवगुर्जों के

भवरोध से ही गुलों की शोधा बढ़ती है। बागर संसार केवल सुरामय ही होता कीर उसमें दुःस का नाम कक न होता, धे यह दरव भी भारों को न रुपता ; पर्योक्ति मनुष्य का यह

ध्यभाव है कि एक-ही-एक स्थिति में पहे-पहे उसको जीवन भार-वहत्व प्रतीत होने लगता है, और उसका जीने का मदा चला जाता है। वह तो जीवन का वरेश्य ही अस जाता है।

यर्री यह कि प्रकृति भी विभिन्नता का ही प्रथम थाठ पहानी है।

अतपव गुर्णों के उत्कर्ष के लिये अवगुर्णों का विशेष आया-बरयक है। क्या जापको शाव नहीं है कि काले के शाप सकेर रंग प्रयास सफेर प्रतीत होता है। परंतु आगर नहीं सहेर ^{(ग} भौर किसी विरोधो र'स के साथ नहीं है, तो उस पर भौरा भी महीं जमनी । नैयायिकों ने तो उचकोटि के धनुमितिश्रम

रति-गानी

१६८

हान की प्राप्ति के लिये सपद्म और विषक्त का होना आयी: बरयक समन्त्र है, जन्यवा उस ज्ञान को ने भगोरगाइक्रसमधी हैं। अवगुणों की भाग में दोकर गुलक्षी स्वर्ण भीर प्याप चमकने संगता है। कामें नई सामा सा जाती है। वरी काररा है कि विषय-विद्यारों से आपून रहकर नगड़े भई को सह-सहकर जो सनुष्य सम्मार्ग पर चारूह होता है, वरी पूर्णेकर से संसार-यात्रा में सफताना प्राप्त करना है। इसीरियो यो मगदान भीड्या ने चपने गमा चर्जून को कारेश ^{[हण}

था कि संबार के विषयों से दिर रहकर, क्यों से निवाले 👯 मन्त्रय पर चतने को दी गका मोध और देखीय हार करते हैं। इसी का नाम ना कमे गोग है। पनका वर बागर इस इसीर्थ में प्रचट होगा-अनेन मुन्दर्शन देशा नदीराम मार्थ

erantherma aspett mass

मध्य पर व उद्देश विश्व वार्णव ह

बारान १४६ हन प्रजीहरूसराना।

षत: सिढ हुष्मा कि मान कोई बुरी बला नहीं है। यह न होवा वो मेमियों को मेमलीला में मचा ही न जाता और सादित्यमों को भेम की विरोधनाएँ ही न माल्म होती। मान-गाँवना नायिका के मान-कंडन के बाद मिलन से नायक को जो धानंर होता है, उस पर संसार का सब चानंद न्योदाबर है। हमारी नायिका मुखा हैं। उन्होंने बात-ही-बात में बिना सोचे-सममे नायकशी से मान ठान लिया है। जत: वे कोप-कर नायकशी से मिलना नहीं चाहती हैं। वे जनसे दूर-ही-

दवियों की दुष्टवा

१६९

कर नायकजी से मिलना नहीं चाहती हैं। वे उनसे दूर-ही-रूर रहती हैं। परंतु क्या आप समकते हैं कि उनका यह कीप विरस्थायी होगा ? नहीं-नहीं, नायिका ने यों तो ऊपर से मान कर रक्खा है, पर'त हृदय में नायक के प्रति गाव प्रेम है। एक बार सान कर लिया, तो उसे थोड़ी देर तो निवाहकर नायकती को यह छात करा देना चाहिए कि इस प्रकार की भनवम से उन्हीं को दृ:स होगा। श्रतः वे फिर कभी ऐसान करें, जिससे नाथिका को मान की शरण लेनी पढ़े। यह सब सोचकर नायिका इट-पूर्वक मान को, जिसना निभे, निभासा चाहती है। परंतु हदय का आंतरिक प्रेम, थोड़ी देर की रुशबट में ही हृदय को लवालय भरकर, आँखों की श्रोर से निकला पाइता है। वह बहुत चाहती है कि मान रक्खूँ थौर प्रेम को प्रकट न होने दूँ, परतु इतने पर भी प्रेम आँखों

१७०

में मलकता नबर चाना है । जिस प्रकार प्रेमी रंगी में दुनियाँ एक दूसरी की चुगली करने में कीर गा सम बताने में प्रवीख होनी हैं, बसी प्रवार हम चाँगों ने में हिससे कर सम्बंधित होता है, जारिका के हहाएस स्वास्त्री के

दूनियों का कार्य किया। नाविका के हद्यवय प्रेमभा भे भायकत्री में कह मुनाया। नायक बहत्य समम गणा है ते विवहत्येदना से शतने व्यक्ति हो चुके थे कि चाती हुँ श्रीकार कर नाविका से चनिवर अपदेव के हारों है-"समरगरसायकारणा सम हिरश्यासण्डत, देति पद्यालावगुगारी

रति-रानी

"असरास्त्रसम्बद्धां सम्म द्वित्तरसम्बद्धः वृद्ध पहाण्याच्याः स्वाप्तः स्वर द्वाराम्यः स्वर्धः स्वरं स

च्याविनियों विवधी से या निर्मा । फिर मां कमका इस्त की दुष्या, सो ब्यूचर के विवधियों से निर्मा वर्ग नेतीनिक का बादमुँ के मैदान से दुष्या था। नायक्षी ने क्यारिते पुर इदय को कहा कर निया। चन से गिरासन को हैं

हि नाविष्य को व्यवसा सान झोड़बर नावष के श्राम है। साननी पड़ी । इन्से में बेम-सीड हुई। बरआरे के बर दे नाविष्य को जुनन देना पड़ा । नावष्ट की सूप ,देरी। इन्से सानव व्यव्हा ना, भी इस ब्रह्मार कोनोर्डन सम्बन्धा वर्ग हैं।

थपानक शागमन न्द्रान चली जब तीय, जानि चले पियह तहीं ।

प्रकट अचानक कीय, बाख मृदि लजा दकी। चित्रस्वाभाविकता का समृता है। ईरवर से प्रेमियों के स्नारधर्य॰

चनकटयागर बनाए हैं। जिसको सब संसार बुरा समभे, उसी इ.व. में उनको सनोखा जानंद मिलता है । इनके वो रंग-इंग ही निराते हैं। देखिए, इसी निरातेपन का नमूना उपरोक्त सोरठे में भी दरसाया गया है। यह स्पष्ट दिखाया गया है कि

हिस प्रकार प्रेमी खपनी प्रेमिका को लिजित करने में ही बार्नद पाते हैं। वेतो ऐसे हाम कावसरों की खोज में लगे रहते हैं कि कहीं नियानी को क्षारकित वसामें पा जायें, सो खनको सजित .^{5.८}, बनकी उस समय की दशा से जानंदलाम करें। जनोखा

ष्यापार है। क्या कहीं किसी के दुःख से भी मुख हो सकता है ? परंतु पाठक, प्रेम-साम्राज्य में कोई बात चानोखी नहीं है। बहाँ तो ऐसे-ऐसे लाखों वृत्त देखने को मिलेंगे। यहाँ की तो माया

री भीर है। बे*चारे संसारी जीव उसका रहस्य क्या समर्*हे। सुनिए, प्रेम के ठेकेदार रसीले श्रीमुरलीधर भी बहुत दिन से

घवसर ताक रहे थे कि सथिकाजी के साथ भी इसी प्रकार मन-

707 रवि-रानी

गया । राधाजी एक दिन बारों कोर वृक्षों से पिरेट्टर

के एक सर्वतः सुरसित न्यान में स्नान करने गर्र । हुपा

भारांचा न कर, क्या बतारकर गदाने क्षणी। शुर तरा प्

देखने समे । मोजी-मानी सविकाती चतुर-सिरोर्मण (। की यह चाल थोड़े हैं। जाननी थीं। सहज ही हैं, सरकी

वहीं जा पर्देचे और कुज की बोट में दिए रहे। शेष

सम बाहर निक्रमी कीर क्यों के वान कार्र । इस इंध्यों भी अच्छा भीरा जानकर करने चारको सगानु प्र वी व में मध्य दिया। राधिकाशी ने जबर क्याकर देखा, तो गा सरकर संद्रभाग करें हैं। बनके मुख्य पर सुर् म्मारण मानक कीर कांगा से प्रेस का सन्त आप है। रागा ती सहम गर्र मी में यह आया कि सामावश वही गढ़ आगी। वर्ग कर की ? काश्वर सियों के स्थानविक क्याप की शाम ही। सत्रा के रुपल्कान कविंगे हो हैं। विवा । विव शहर में परिते हें देवने में जो खनुतम वस मग है, उसरा पर्टी का कालन क्रिए। इसका भी क्रमेंग (६वा की क्री में मरमा । इंच्यानी का हनेतन सन्दर्भ दूवा। ४८४) ^{हर्न} कारत दिन गता । वे कार्य आग्य का कल्पक्य बत्त वी

नहीं जाता। चाधिर बहुत प्रतीक्षा के बार् 👣 समय

मानी करके उनको सक्षित करें। प्रयप्त क्या हुमा

भौर बार-बार मन में यही प्रेरणा करने लगे कि फिर ऐसा

Ews

पर पाठक, ध्यान रक्षिए, कहीं च्याप भी इसी चाल का व्यनुसरण न करते लग जाइए। श्रन्यथा बेचारी नायिकाश्चों का अुरा हाल

होगा। यह तो सन रसिक-शिरोमणि को ही शोभा देता है।

अधानक आग्रमन

घवसर प्राप्त हो। बलिहारी है नाथ ! व्यच्छी चाल चली।

100

पुच-प्रेम मुतमुख देख्यो साहि लेय, प्रकट सु घाराय धीन्ह ।

कंत करो। रह बादरी, और हित वय दीन्छ। क्षियों का हृदय वड़ा कोमल, मोला-भाला और शुद्ध होता है। षह उस दर्पण के सदश प्रतिविवमाही होता है, जिसमें जो प्रतिमा उसके सामने आ जातो है, उसी का हुवह वैसा-का-वैसा चित्र वहाँ खिच जाता है। हमारी नायिका भीएक दिव पुत्रवती स्त्रियों के साथ बैठी-बैठी सोचने लगी—"मेरे भी पुत्र हो जाता, तो मैं भी इन बहनों की तरह सीभाग्यवती ही

जाती।" सोचते-सोचते अपनी पुत्रदीनता के कारण वह अपने भाग्य को कोसने लगी। वाद में खपने हृदय की इस बात हो नायकजी के सामने प्रकट को। नायकजी ने समक निया है हो-न-हो इसकी यह चात्मग्लानि चौर स्नियों को पुत्रवती है*त*-कर पैरा हुई है। इसने वो बालहठ की तरह इस हठ को ^{बार}

मारना है । निदान इन्होंने चसे समम्प्राने की ठानी, श्रीर देंपा

लिया है। अगर अपने सुख-दुःख, मले-मुरे का विचार करती,

तो कदापि ऐसा इठ न ठानती । अभीतो इसकी अवस्या ही ऐसी है कि इस प्रकार की व्यक्तिलाया करना, सब मुखों को लाउ

नीचालेकर कदा किए बावरी !तूने विना सोचे-समके इस रच्या को हृदय में स्थान दिया है। श्रमर चरा भी सोचतो, तो कु^{के} यह मालूम हो जाता कि यह नववय, पुत्रोत्पत्ति के लिये **४**९युक्त समय नहीं है। यह तो <u>सुख भोगने का सु</u>खनसर है ! यह सो हुन्मा उनका उपदेश नायिका को। परंतु पाठक ! षरा सोबिए, तो व्यापको मालम होगा कि इस उपदेश में परीपकार की अपेका स्वार्थसिद्धिका अंश क्यादा है। स्योंकि क्यों ही नायिका ने नर्भ घारण किया, त्यों ही नेचारे नायकजी को प्रिया-मिलन की सुख को घड़ी का कुछ समय के लेये बात हुच्या समको । वृसरे, पुत्र के पैदा होने पर सो सविकाका जो प्रेम पहले केवल नायक पर दी रहता था, यह रष पुत्र की चोर वेंद्र जायगा। यह तो नायक जी ही का काम । कि एक समकदार परिशामदर्शी पुरुप की तरह--"पक य दो काज''वालो युक्ति सोच निकाली। उचर नामिका की ^{पहा} का समाधान किया, तो इघर स्वार्यसाधन में भी कुछ कमी रक्सी।



येचारी ठहरीं शुद्ध श्रीर निष्कपट हृदय । उस चमकीले बात को देख, उसकी झटा पर मुग्ध हो, उसकी भूतभुलैयाँ में घुस ही जाती हैं। फिर जो सक्ली की हालत होती है, श्रीर

दर्दको दवा

800

मकड़ी को जो हर्ष होता है. उसका अनुमान आप ही कर लें। हुवहू इसी पाठ की लक्क कर हमारे नायकजी ने भी अपनी कार्य-सिद्धिके लिये युक्ति निकासी। आप पताँग पर पढ़े हैं, नींद नहीं आती। आँशों के सामने थिया के सुघर पूर्णीमत कुषयुगल चक्कर लगा रहे हैं। उनको देखने की प्रवत श्च्या है, परंतु कापना यह च्याराय प्रकट कैसे करें ? धोंक्री रेर सोचने पर एक युक्ति सृग्धी। क पट-पूर्ण संसार में तो आप रहते ही थे। फिर युक्ति भी कपटमय होती, शे ब्यारवर्य ही क्या था। सस्तक-राल का वहानाकर, पढ़े-पड़े कराइने लगे। जाल ऐसा विद्वाया विकास-पाश को भी मात कर गया। ष्मार भीर कोई बीमारी होता, तो लसर्खों से भी पहचानी वा सकती थी। परं<u>त</u> यहाँ तो सस्तक-पीड़ा है। नायिका से भपने भिय की यह दशा देकी ≘ गई क्यीर बढ़ मट उनके पास भाइर उनका मस्तक द्याने लगी । वेचारी भोली भाली (स इल को न जानकर कपट-जाल में फेँस गई। भला यह ष्या जानतीकि यह सो नायकजी का कपट है, जिसकी कोट रें वे घपना कुचर्रान-रूप कार्य साधना चाहते हैं। उसके

Fuc रवि-एनी नो हृदय में प्यारे की व्यथा देश-देशकर बेरना है

थी। परंतु जरा इन मोले बने हुए नायकजी की कार्या तो देखिए। नायिका का अचिल तो उनके मुरा पर परा

था। यस पत्ती की कोट से खुव मन भरकर का ⁵⁴

पहाड़ों की निराली शोभा देखने लगे। अब क्या था। बेर-

एकदम मिट गई। इत्य में शांति की ठंडी सहर डठ गां

शोमा को निरहाते ही गए। आखिर साविका में ही करें

कार्यको यंद्र कर दिया।

प्रेमपनी प्यारी

जल मेरि जावित नार, मारण में पीतम मिले । दीन्द गमीरेया कार, प्रेमपणी है कगमणी ।

लजा खियों में स्थाभाषिक है। लजा खियों का जाभूपण दै। इसके विना चनके चौर सब गुण वृक्ष के समान हैं। इस दोहे में कवि ने प्रेम के साम्राज्य में, लजा का भावमय वित्र सींचा 🖣 । भाष यह 🖁 कि एक दिन नायिका सरीवर से जल भरकर घर की बोर लौट रही थी। राखे में सामने वाते हुए बाजकल की नई रोशनीबाले नायकजी, हाथ में खड़ी स्तिय, तिरछी टोपी घरे, रिस्टबाच धारंग किए और आंख पर माहनस श्रीरों का परमा चढ़ाप, फैरानेवुलावायु साहव के वेश में मिले । नायिका ने इनको देख लिया भीर विचार करने लगी कि इनको न-आने फैसा मृत सवार है कि जहाँ में जाऊं, वहाँ आप भी चा दायिर होते हैं। जहाँ-सहा मुक्ते लिलत करते हैं। देखें थे और किसी राले पड़ आतेहें या नहीं। वरंतु नायकजी ठहरे पूरे तालीमयास्ता। **बनको और क्या जाहिएथा ? इसी मिलन के उदेश्य से तो ये** मन-उनकर घर से निकले ही थे। खतः छड़ी पुसावे-पुसावे एसी भोर चल पड़े। अहाँ पर मिलाप हुन्या, एस जगह का टरय तो

देखते ही बनता है। इघर तो वेशरमो का वाना पहने नायक्त्री ध्याए; उधर लजा और क्षियोचित सकोन से कंपायमान गातवाली, सिर पर जल-पूर्ण मगरी रक्खे, नाविका भी आ पहुँची। पास आने पर दोनों को आहिं चार हुई। प्रेम ने दोनों के हृदयों को जकड़कर प्रेम-सूत्र में बाँध दिया। नायिका के शरीर में इस मिलन से पैदा हुई जो धक्रपकी

रति-रानी

१८०

कॅंपकॅंपी शुरु हुई, तो उसी व्यावेश में मस्तक की गगरी हा-मगी और स्थानच्युत हो घरनी पर जा गिरी। वैवारी के दश सब भीग गए। भीग जाने के कारण मीने वस द्यंग से सर गए और उनके खदर से नायिका का सुवर्ण-वर्ण गात बद्धुन

ष्माभा दिखाने लगा । अब सभी हालत माल्म हो गई। पहरी ष्मगर कोई नायक-नायिका के इस श्राभनय को न भी देंग पाता, दो अन्य तो अञ्झा मौका मिल गया । नाविका शर्म हे

भार से इतनो दव गई कि कुछ समय तक वहाँ से दिलना हा सुरिकल हो गया । नायकजी ठहरे बेशमों के बादशाह । वे वो एक चतुर दर्शक की वरह इस टरव को देख-देखकर मध हैं: संगे। परंतु नाथिका का दाज बुरा हुआ। जिस समा के डाए इसने चाने चारको इस चवसर पर रवित रखना पा**रा** गी,

उसी ने प्रेम के बहुकाने में आकर उल्टी इसकी हुँसी इहुवा

दी । सब दै, बुरे बक्तु में कोई किसी का साथ नहीं देता।

सरोज पर शशि

नोविंबर में राधिका, लई कृष्ण ने खंक। कम्ना जल उत्पराहि चित्र, मनहु नर्गक परांक ।

राघा नीले रंग की संदर साड़ी पहने हुए है। सोलह शृंगार फिए खड़ी है, मानो मोतियों को लड़ी है। वड़ी ही सुंवर दीख पड़ती है। इतने ही में बजविहारी कृष्ण उघर व्यानिकले। राधा का सुख-मंडल भनगोहन को चाते देख मधुर मुसकिराहट की

भामा से त्राहोकित हो गया। दोनों ने एक दूसरे को प्रेम-पूर्ण एप्टि से देखा। सुख की सीमान रही। दोनों प्रेम के प्रवाह में

वहने लगे। फुट्या ने प्रेम से दाबाको गोद में बठा लिया। इप्ण की गोद में राघा इस अकार शोभा देती हैं, मानी कालियी में खिले हुए नीले कमल पर सशंक चंद्र बैठा है। कृष्ण सो

कालिंदी हैं। राधा को नीलो साड़ी नीला सरोज है। इस साड़ी में से राथा का मुख ऐसे प्रतीत होता है, मानो सर्राक चंद्र नीले कमल पर बैठा है। शशि सशंक इसलिये बैठा है कि

बह जानता है. सरोज सरस्वती का चासन है। इसीतिये वो वे 'कमलासिनी' कहलावी हैं। अतः चंद्र को खयाल है कि

कहीं सरस्वधी देख लेंगी, तो नाराच हो जावेंगी। सो हरते-

१८२

हरते बैठा है। उधर स्त्रियोचित सज्जा के कारण कृष्ण

की गोर में राधिकाजी सरांक प्रतीत होती हैं। झतः राघा के

रति-सनी

सत्कालीन लजा-पूर्ण मुख को धरांक शशि की उपमा सर-मुच वड़ी हो। अनुठी है। कविजी, वो माल्म होता है, ऐसी पैसी प्रेम-पूर्ण अनूठी काँकियों के खुत्र दर्शन करते हैं।

लजवंती लना जमुना न्हाइ अवेल, भीने पट घर जात ही ।

हुनत आँगुरी खेल, राजवंती तह विधि भई। संदेरेका सुद्दावना समय है। शीतल सुगंधित पवन मंद-मंद षठलेलियाँ करता हुच्चा चल रहा है। हमारे च्यलबेला छैला भी

.

बायु सेवनार्थ कालिंदी के कूल की चोर चल पड़े। वहाँ क्या देवते हैं कि स्वर्ण-सता-सी संदर ध्यपनी प्रेयसी यमुना में स्नान **फ**र रही है। उसके रूप-लावरय को देखकर आप ख़ुश हो गए श्रीर

क्षा पूर-पूरकर उसे देखने। भीगी हुई साड़ी में से उसके गात के क्रामात ने आप पर ऐसा जापात किया कि भ्रमण को मार कात, काप इस घात में लगे कि कोई बात करके गोरी के गात

है हाथ लगाया जाय । काप इसी उधेद-युन में लगे हुए थे कि ण्या देखते हैं कि नायिका स्नान करके भीगी हुई साड़ी ही में षपने पर की स्रोर चल पड़ी। ज्ञाप भी उसके चारो-स्थारो चुद-

पाप पत पड़े, मानो व्यापको उससे कोई सरोकार नहीं है। बंद तक मौका नहीं मिला, चाप कुछ कासजे से बिलकुल बेपर-षाहो से नाविका के जागे-जागे चलते रहे । हाँ, बीच-बीच में चतु-र्राइंसे बाप टेड़ी नजर से इस बात को देखते जाते हैं कि

१८४ रति-रानो

नायिका पीड़े में का रही है कि नहीं। बतते-वतने एक पेना कु ज का गया कि जहाँ पर और कोई नहीं दीम पड़ता था। सुरंत ही कानने अपनी चाल घोमों कर हो, जिसमे नारित्र बनको पहुँच सके। ज्यों हो नायिका पास से निक्ती, हों है कीरन् सनककर आपने उसके अंग को उँगली से हूँ दिया। 'कूरों के साथ ही नायिका सजबी-स्ता को तरह विलक्ष्त और-की कंदर सिमट गई।

इस चूने में क्या क्यानद है! इसको ने ही लोग जान सकी हैं, निन्हें लगवती को घूने का कभी इसिकाक पढ़ चुका है। हमारे कई एक वक टिट्टवाने रंभीन बरमा बारी साहितिक महापुरुषों में महाकृषि निहारोवाल को भी इन्हों रंभीने वापक महोदय के रूप में देखकर चनका रंगीला स्टारू विश्वीका किया है। भीगी हुई साही में से गोरे गाव को देखकर किसकी तविर

नहीं गुरगुराने सगती। इस गुरगुरी के बातर के तिये ही हो सोग वितायती बारोज बजां से बावनी विवां को सजाते हैं तिससे बनको इन बावलाओं के बाग-प्रत्यंग के रार्गन होंगे रहें। वेचार ऐसा करने को साचार हैं, क्योंकि बानी तीम दृष्टि को तो बाजुनिक शिता को बार्चण कर पुठे हैं। बाता 'साईट सोग साजुनिक शिता को बार्चण कर पुठे हैं। बाता 'साईट साइटेड' हो गएं हैं। ऐनक बारण करके जैसे-ति

सजवंती स्वता १८५ ष्रपानी ष्रांसों की साज रस्तते हैं। खगर ष्रपानी त्रिया की परेती खारी की साज़ी पहनावें, वो मोरे गाव की करामात कैसे रेतें। वे वो बारीक वर्जों में से भी उस गाव की शोमा वड़ी इंग्डिंग से परमे के सदारें से निरक्ष पाते हैं।

पीपल का पात प्रेमदान सामत पिया, तिय नहिं हाँद हुवान। नव पीपल के पान ज्यों, बरेबर कारत साम।

प्रेमोन्मत्त नायक नायिका से प्रम-दान मागते हैं। नायिष ठहरी बिलकुल सबोड़ा। ऋतः स्वभावतः सकुषाती है। फिर भेता इस प्रस्ताव को फैसे मानती। मानना तो दूर की वार है, यह इसको मुनकर हो दूर रहती है; छाँह तक नहीं छुवानी। र्षोद भी फैसे छुवाती ? उसके भन में तो यह भय समा रहा है कि कहीं ये मेरी छाँद को ही न पकड़ सें। शायर वर-"निय-छवि छाया वाहिकी, गहे बीच ही बाव।" विहारी है दोंदे की स्मरण कर-कर यह सोचती होगी कि जिस प्रकार किन्हीं फिन्हों जीवों में झावा द्वारा बहुए करने की शांत होती है, चरी प्रकार वही शकि नायक में भी हो। इचर तो र^ग भय से व्याकुल सड़ी-खड़ी बवाब का बपाय सोब रही है। षधर अब तब मीडा पाकर नावक के वांत वपू की बोर बाँग चुराहर देख लेती है, नो समस्त शरीर में एक बांतरिक वित्रती-मी दौर जाती है। तमे वह नहीं सादस होता कि दर ि फोर में पड़ी है। परंतु कामदेव मीता देखहर का पर मार्ड

पीपल का पात देते हैं। मय एक जोर सींचता है, तो खलइय रीति से और

860

ष्यारा प्रवलता के साथ प्रेम दूसरी आरे खींचता है। इस खींचातान में घेचारी नायिका की दशा अत्यंत शोचनीय ही रही है। प्रेम भय पर विजय पा रहा है और उसे अपनी धोर स्रोच रहा है। समय-समय पर इन प्रवल विपत्तियों के स्नाकः-

मण के घकों को खाकर वह कॉप उठती है। इस कंप ही का कविजी ने बड़ी कुरालता के साथ कथन किया है। इस दरा में वह ऐसी काँपती है, मानो पीपलयुत्त का नवपात थर-पाठक ! चागर ज्ञापने कभी पीपल-बुत्त के नृतन पत्ते की हवा से कॉपते देखा है, तो इस दृश्य का यथार्थ अनुभव कर

थर काँप रहा है। कैसी स्त्रामाविक उक्ति है। षापकी चारमा फड़क उठेगी । फिर सुकुमारता चौर स्निग्धता में भी यह पीपल का नवपात नायिका के यौवनोचित सौकुमार्य

के समान ही होता है।

र्संग में सुंदर नायिका हो और श्रातःकाल की शीवल प्रक

चल रही हो, तो फिर किसको दूसरी बात का खवात भा संकता है। महत्थल को रातें वास्तव में बड़ी अच्छी होती हैं। सर्ग

कासा मुख प्रतीत होने लगवा है। आकारा विलक्त साम होन हैं । सृष्टि-रचना के पहले दिन जैसा वह दिखलाई दिया होगा, पैसा ही नया ज्ञात होता है। नीलम के मरोरो में से पी म फिता रहता है। उसकी निर्मल चाँदनी ऐसी शोमा रेनी है मानी किसी ने व्याकाश को वाँदी का मीना वीर बांदा दिया दी। रेगिस्वान में रेत के करण बहुत अल्द ठडे हो आते हैं। शीतल पत्रन धीमो-धीमी चठरेनेलियाँ करता हुचा पन्नता रहत दे। उसके थपेड़े इतने अच्छे सगते हैं कि विक्षीना दोहते ^{हो} ष्ठवियत नहीं चाहतो। बीकानेर की चौदनी रानों का जो मध स्ट पुढे हैं, वे इसकी साईद करेंगे । इन साज-मामानों रा ही

तक्के की शांतल पवन, तिन्हें न अन्य निवार।

मरुखल के निर्मल नम की चाद चद्रिका खिली हुई ही

सुमुली सँग महमूमि की, खिली वरिका चारे।

बारु चंद्रिका

पाद पंद्रिका १८९ भीरत रोना पर बद्दा आसी लुटक है। किर पंद्रमुखा और साय हो, तबसो कहना ही स्था है। बद्दा, समफ लोडिय कि सोने में सुर्गय हो गई। किर खान्य विचार की दाल कैने गत सकता है। बारदें में बेंदुठ की बहार है।

भारी सम

सदक बादनी नेत की, सरअल करत विदेश । राधा स्यामिंड स्याम लर्डि, द्वीर व पत्रत गर ।

मधुमास को घटक चाँउनी शत है। बाहाशास्त्री की

और उग्यत जल में तारकाओं के साथ चंद्र की विहार करी देररकर राधामाध्य के सन से भी जल-देति काने की शामन

हुई जान पहती है। वे नीने चौर साल कमलों से आप्ता दित सरोवर में जल-कीडा बरने गए हैं। परंतु पाठक ! यह कैमा रहस्य है ? वे तो वह दुमा है

स्रोज रहे हैं । नहीं-नहीं । स्रोजने-स्रोजने दैशन वह दो ^{गर}ैं, परंतु पना नहीं बसना । बान बादे जो इसका कारण सबरें।

हमारी समक्त में नो वही चाना है कि राधा तो काह हम^{ती}

में और कृष्ण नीजोल्पत्तों में ऐसे विज गए हैं कि एक रूप^{रे के} दिसाई नक नहीं देते। यांन् काश्विर आते करी ! करीने

कमी दूँदरी-दूँदरी कृषण जाल और राजा नीले कमती हैं करी.

देव बावरय प्रण सग जाना। बाल बहेंगे हि कृपन शत वहनी

पर भीतें की तरह मालूम हाने में शावर गांग की म रिमर्ड

देने । बरनु के मी राजा को देख सेते ! बन्द् ! कार्डा र^{ात प्र}

विलकुत मेवकुरू ही समक्ष लिया है क्या ? जनावेमन ! क्या षह इतना हो नहीं जानतीं कि रात्रि में कमलों पर धमर नहीं होते। स्नार कहेंगे, यदि ऐसाही हैं, तो दोनों प्रकट हो ही जाँरेंगे। परंतु प्रकट हो फैसे जायँगे, जब राधाजी तो चंद्रज्योति में मिल जाती हैं चोर घनरवाम सरोवर के स्वाम चीर गहरें जल में ! केंचल एक चपाय है, जिससे कृष्ण तो राधाजी को

नहीं देख सकते, परंतु हाँ, व्यलवचा वे चनको देख सकती हैं। षि सरोवर में ही मिजना है, वो कृष्ण बोले, क्योंकि राभिकाजी का कल-कंठ तो कोयल से मिलता है; और यदि शहर निजना है, सो राघाजी व्यपने नेत्रों को काम में लाएँ और जल भाग ये नंगे न दाना तुम श्वेमइताय में : चाँदनी छू जायनी भैला बदन हो जायगा ।

से दूर कृष्ण को प्रत्यक देखें। विरद-वेदना का निवारण करना हरिकत है, तो वेवारे विहारी ही के किये, क्योंकि राभाजी को चहरय करनेवाली ज्योत्स्ना तो, क्या जल चौर क्या स्यल, सर्वत्र ब्याप्त है। कैसा ऋपूर्व एकीकरण है-

स्नेह-शंका-साम्मलन

एक दिना चित्र ने कहीं, कान केति (नारीन) नतमुख हो निर्देशी त्रिया, नवनन में भव प्रौत। एक दिन रसिक नायक ने विचरीत रनि करने की दक्ती नायिका में प्रकट की। नायिका सुतकर मुख मीपा करके

सुमक्रियने सामी । उसके नेत्रों से भव चौर श्रीति शंगों प्रश्न हो रहे थे । र्यत हो या चौर कुछ हों, विश्वीन कार्य करने प्रशेष प्राणी को भव प्रतीन होता है । अभव है, कार गुड़कर्गों

चारिका सय दो कि वे देश न सें। इधर नायब के शी

शारिक प्रेम है, कपर रित को प्रीति होता स्थाभाविक **है ऐ**। तिम पर भी नायक कर बसाइर क्यानी क्यिताया प्रदा करना। कतः नायिका ने नेत्रां में प्रीति गलकाकर हम क्य का पता रिया कि बहु सो विश्वेत को क्यामा पालन करने थे

का पर्या दिया कि बहु सा पोर्श्व को खाड़ा पालन करन थ क्यान है, किनु अब के कारण साधार है। मीका सुब करें नाविका ने साधा प्रकट की। इस प्रकार के प्रश्नित पर साधा का होना स्वामाधिक है। है। मुम्बियाकर नाविका ने प्रका कियाकिकर संविदार है, किनु साधार कारण विकास है। खोते स्टेंह-शंका-सम्मिलन

भौलों में मलकने लगा।

कदंव-कुंज

केलि कामिनी कंत करि, सोह कुँब के द्वार ; मनहु बाब एकत किए, रवि राशिही तर्द मार ।

भी पसे इंज बज में पाप जाते हैं; परंतु आनंदरंद मीहरा चंद्र के खमाने में इन यहना-सट के इजों की इस नियानी ही इटा थी। इसका कारण गोपाल की मगुर सुरांतक की

पुरिष्य और पुरुष्यल स्विकाओं से आव्हादिव सर्व और ठंडा करंब-सुंज किसके सन को ग्राय नहीं करता । सर्व

स्यायस्य वार्तों की वर्षों ही प्रतीत होती है। इस स्वयुक्तीपरा से निर्माय पदार्थ भी कहाहा करते थे। हमारे कि व क ऐसे ही कुंग से विहार करते हे वर्ग समके द्वार पर राहे हुए, कुंगविहारी और वनकी रिवण रामा का वर्णन कर रहे हैं। सपन कुंग नील गणनना मा पड़मा है। ज्योनित्वरूप कृष्ण कावनी प्रभा के प्रमार में प्रमायर ही प्रतीन होने हैं। सुग्य गविद्यानी की युद्द प्रमान स्य सपुर सूर्ति, अपना सीटा प्रचार फैलानी हो स्वरूप भी साम्य होनी है। बहुन दिनों से कोरिस्स करने और वार्म की वीदार से माना में प्रसार स्वरूप के दिस्ताय करी हो

कदंब-कुंज 194 देव, सूर्य को चनकी प्रिया इंदुमती के साथ मिलाने में, .सफल इए हैं। धन्य कामदेव, तुमने कभी न मिलने की धारा। रकनेवाले प्रेमियों को भी मिला दिखाया !

शिथिल सरोजिनी

पनी बेंडिंड करि बात निय, स्थि बिहुरत इसि होर्डि; शिपित कर्मतिनी होई निर्मा, धनमानी निर्मित होर्डि। प्रेमिसितन क्योर रत्यंत सा क्या ही विनोरदुर्ण वर्णः है। मायिका मुग्चा है। खतः संसोध ही सा क्या वहते स्थापं प्यादा है। वसको रति-केंत्रि की क्रस्यंत इच्छा हो है, परंतु वैशिष

बरा नापकती के समय फरट नहीं कहती । राति में दंग्नी का समापम हुक्या।नायिका तो बाहती ही थी, उतकी तो यह क्या पहले ही से थी। जब बड़ी हच्या दिना किसी मार्थना के हुएँ होने को ब्याई, तो वह मारे हुएँ के मूली म समाई, बौर वरी समा में केंक्रि भी धनी की। जब बिह्नहने का समय बाया.

षण का बर्फन कविजी किस बातुर्ध से करते हैं। इस समय ऐसा प्रवीत होता था, मानो सारे दिन कपने प्रियतम प्रमारा से प्रेम-नेजि कर पद्मिनी चनसे बिह्युक्कर क्षय रात्रि में रिपित पत्री है।

यह तो स्वमाव-सिद्ध ही है कि अब किसी की वर्त इच्छा विना विशेष प्रयास किए ही पूरी हो जाती है तय इच्छापूर्त के भरचान इसे वह आनंद मिलना है

शिथिल सरोजिनी 280 बिसमें मान होने पर किसी चीच की चिंता, चेतनता भौर कार्य करने की इच्छा नहीं रहती। उसमें विचित्र प्रकार की रिाथिलता जा जाती है, और चस समय का चसका भालस्य भी ऋानंददायी होता है । यही हाल नायिका का था । . जिस प्रकार प्रियतम पतंग के साथ मिलन-रूपी अभिलापा-पूर्ति के बाद कमलिनी रिायिल हो गई. इसी प्रकार वह भी अपना धभिमत पूरा कर शिथिलता, खालस्य धीर निर्धेतनता से रोभा देने लगी । घन्य हैं वे सुदरियाँ, जिसको इस शिथिलता का भनुभव होता है। यह तो उन्हीं के भाग्य में लिखा है, जो प्रेम का रहस्य समन पुकी हों। एक कवि तो इसी शिथिलता पर लट्ट् हो जाते हैं भीर चकर खाते-खाते ही बोज षठते हैं ".....मुरत सृदिताहि बाल ललना; तनिस्ना

रोभन्ते" इत्यादि । घन्य है प्रेम ! शिथिलवा जैसे आलस्योत्पादक अवगुण को भी गुणों का सरताज बनाना तुम्हारा ही कार्य है।

नेह में नीति

विरह विचा साथि व्यायत है, बिज्यत तिय दुख पाम; का कह आले ! कहि फेरि सुख, निरचन कंताई आव : विद्युद्धने के पहले नायक और नायिका का मिलन ही रहाँ हैं!

नायिका की सखियाँ किसी एकांत स्थान में बैठी हैं। प्रेम-मितन जय हो जुका और बिछुड़ने का समय ध्याया, तो नायिका के हरण को ध्यत्यंत हु:सा हुच्या। बही नायिका, जो योड़े समय गर्ते ध्यप्ते प्रिय से मिलकर सब दु:सा भूस गई थी, ध्या विद्युगे समय सबिक्य की बिरह-स्थाय का स्मरण कर, इस भवावने

हरय को काँकों आगे रखकर विदारित-हृदय हो रही हैं। एसकी दशा बड़ी ही शोचनीय हैं। एक खयाल होता है कि कागर प्रमु विरह्न बनाउँ, वो उनका क्या किगहता? क्या उनको प्रेसियों के इस द्वास में इतना मरा

मिलता है, जो जनको इसना खरास कट देते हैं । विरह्नवेदना की तीम ज्वाला तो पूर्व के सब सुखों को जलाकर सरमसात कर देती है। इसी से वो किसी सराम-इहय कवि ने कहा है—"मुगर्दे गर न होती थो सुहन्वत चीज बच्छी थी।" परंतु क्या हो, नामिका की किसी खाबरयक कार्यवस बचने मैके को जाना है।

इधर प्रेम उसके जाने में बाधा डालवा है, तो उधर सजा उसको सींचती है। निदान वह जाने को तैयार होती है--दो-चार इदम चलती है, परंतु अब तो प्रिय-मुख देखे विना एक पल भी इसका जीना कठिन-सा जान पड़ता है । उधर रित्रयोचित बजाभी बसको चपने चापको सँमाालने की प्रेरणा करती है। वह अपनी इस हालत को सखियों से छिपाना चाहती है। परंतु दर्शन की व्यभिलाया भोतो नहीं रोकी जा सकती। व्यतः नायिका एक तरकीय सोच निकालती है। एकचाच क़द्म चलकर **ब**ह पीड़े मुख करके 'का कह सखि', 'क्या कहती हो सखी ?'— यह बात सिखयों के विना कोई प्रश्न पूछे ही उनसे पूछती है, भौर इसी ब्याज से वह व्यपने प्रिय का वर्शन भी कर लेती है। फ़िर्हिए कैसी चाल चली—'आम-के-आम चौर गुठली के भी दाम ।' चथर भिय-वर्रानरूप मुख्य ध्येय भी सिख हो जाता है, भौर इघर क्षजा भी रह जाती है। ऋौर सखियाँ भी यह जान-^{क्र} खुरा होती हैं कि पति-श्रेम में संलग्न होने पर भी **वह**

इनकी स्पृति को दिल से नहीं भुकाती। व्यच्छी नीति है।

i,

प्रेम की प्रयस्ता विरि चाए धनस्थान वर, नहिं चाए धनस्थान :

चान दिश्व उंडो तक, मो बहे शागत पान। वर्षा-काल है। चाकारा मेपाच्छल है। इसी समर्प पिर पेदना से क्यवित प्रथमानुका चपने प्रियतम की बाट जोर्गी पूर्व पैठी हैं। पनचोर घटा को पिर खाया देल, मन में पिर-मिलन की इच्छा बस्कट रूप धारण कर लेती है। वे गोंगी हैं

कि ये स्थासपन को चाकारारूपी नायिका से मिलते के जिने चले चाप, परंतु मेरे इत्यस्त भीत्रज्ञविद्यारी क्यों तक म्यै पचारे। क्या कारण है ? इन कारे कज्ञयारे वयोपरी तक ने च्याज क्याने प्रेम का पूरा परिचय दिया है कि ब्याकारा-तैनी

शृत्य-हर्या मायिषा के बात को कार हैं। तब बया में हर्ष में हीं भेम का ह्यानेश नहीं है, जो पनस्याम इस अवसर वा महीं कार है में तो अपने भेम पर गई रमनी बी, और निर्दर्श साननी थी कि कृष्ण इसके बता में हैं। मेग मां यह खताब में बात कि सब बार्ट्सी नव इसके हाग बनको बुजा गईंग। वर्ष साम मेग बह गईं बार हो गया। बास मादय हो गया कि कृष्ण को बता करने की मेर सेम में नाक्स मादय हो गया कि

प्रेम की प्रवलता २०१ भला चाज बादलों चौर बाकाश-जैसी निर्जीव जोड़ी का मिलाप

हो जाता, श्रौर मैं यों ही दुवा प्रतीचा करती रहती। इसी प्रकार की उधेड़-चुन में राधिकाजी पड़ी हैं। वे बार-

चार, रह-रहकर अपने भाग्य को कोसती हैं, धिकारती हैं। अपने भापको बुराभका कहती हैं, और कृष्ण को छली जानकर वनके कपट पर रोप प्रकट करती हैं। समय बहुत ठढा है। षर्यों की शीक्षार से शीवल हुई समीर शरीर को स्पर्श कर सीत्कार पैवा करती है। परंतु क्या हो १ यह सब साज राथाओं पर विरुद्ध विकार पैदा करते हैं। चनको यह समय मीष्म-भाजीन सध्याहवत् वर्ममालूम होता है। शीतल समीर के मकोरे सूका काम करते हैं। रह-रहकर, अपनी वर्तमान

दरा। का स्मरण कर चनके दिल में प्रिय-मिलनोत्सुकताजन्य हुक घडती है, और नैरारयचोतक निरवास मुख से निकलती है। धव तो एक प्रचंड तूकान शुरू हो जाता है, जिसके थेग में वे विचाररूपी संसार के इस ब्योर से वस ब्योर तक उड़ती रहती हैं। वर्षों तो चनको ऐसी लगतो है, मानो व्याकारा से

भाग की विनगारियाँ बरस रही हैं। ठीक है, मर्ग्हरिजी ने क्षा है—"अवस्था वस्तानि प्रथयति संकोचयति च" सत्र कार्ये

भवस्या के अधीन हैं।

कोयल की कूक कुर्जान में है जात हो, दीन्द कोइतिया कुठ ; प्रिया जान को खान करि. उठा दिये में हुछ।

मार्थिका को योड़े ही दिन परचात् कपने नैहर जाना है । यह चात नायकजी को चिदित है । वे जनशर इसका स्मरण कर वड़ा दुःल पाने हैं । इसी सोच में वनका प्रतिदिन वर्ष के समान गुजरता है। ये बहुत चारते हैं कि वह दिन कभी न चार, परंतु प्रकृति किसका चतुरासन मानती है। दूर रहने के बजाय वह दिन बहुत नजरीह काल जाता है। जब-जब ने प्रिया के मानी निरह का दुःरामयित क्याने ह्रस्ट पर बतार लेते हैं, हब-तब बसको देश-देशकर कन पर वज्रपात-सा हो जाता है। पर करें क्या है जािर

बह दिन क़रीब चा ही जाता है।

प्रिया-बिरह से संतप्त-ह्रदय नायक किसी प्रचार चरनी
भाषी विरह-रुपया को शांत करने के विचार से वचवन-विहारों
को निरुत्तते हैं। वनका रायाल है कि शायद पेसा करने से वनके
हृदय को योदी शांति मिलेगी। परंतु क्या च्यापको यह माद्रम नहीं है कि मार्यहोन सतुष्य जहाँ चयना महा सोचकर जाते

कोयल की कृक ₹0\$ हैं, वहाँ भी दुर्देव चनका पीछा करता है। भर्तृहरि भहाराज की हही हुई खल्वाट की कया का स्मरण होगा, जो सूर्यातप से वत-मस्तक हो, वाल-बृच के चले तनिक विश्राम लेने के लिये टहरा था, चौर उसी समय उसके कच्ची हाँड़ी से मलक पर वालफल गिरा था, जिससे बेचारा भग्न-सिर हो मृत्यु को प्राप्त हुमाया। तब भला दुर्वेव-पीड़ित नायकजी का कहाँ पिंड **इ**टता ? चालिर हुच्या वही, जो होनाया। वैरिन कोयल ने देवद्व बन तमाम कार्य किया । कोयल की क्क सुन कोकिल-लरा अपनी प्रियतमाका स्मरण कर, जो दिल में हुक दती, तो हृदय मारे ब्यया के हुक-दुक होने लगा। फिर तो च्छी विरह-वेदना की याद में अपस्त हो मूक की तरह इघर-च्यर घूमने लगे। भूख-प्यास सब भूक गई। जिघर देखा, च्यर ही प्रियाकी मधुर मृतिं आर्थों के आगे चकर कगाने सती। रूस-रूस पर उसी कोकिस की कृक शुनने की उत्कट षभिलापा से नर्खंद फॅक्टी, पर फिर नैरास्य चा पेरता। इसी महार भटकते-सटकते सबं खपबन झान डाला, परंतु वित्त की वित्रकुल शांति न मिली। चलटे स्थवा श्वीर वह गई। भाप

किसी भौर ही मतलब से थे. पर हुआ कुछ और ही । निदान पर होटे। पाटक ! क्षव कामे के भवंकर दृश्य का काप स्वयं क्यु-

मान कर सीजिए ! नायिका साज ही जानेनाती हैं । उसे जाने पर बेचारे नायकजी का क्या हात होगा, वह साप स्ट मान की दृष्टि से देसिए । हमारी लेखनी तो इसके सिटरें

रति-ग्रानी

२०४

काँपती है। मला कोयल की कुक को सुनकर, प्रिया का प्यान कर जिनका यह हाल हुका, तो किर प्रिया के बले जाने पर क्या होगा, सो तो ईशकर ही जाने। सब है, देव-निहर पुर्वों

क्या होगा, सो वो ईरबर ही जाने। सन है, देव-निहत पुर्शे का कष्ट मेटना विधि के भी हाथ नहीं है।

विरही विष्

यामिनि मामिनि सँव रसत, दीन्ह विराहेनी साप ; जाते राशि बलुपित भयो, विरही है के बाप । पूर्णिमाका प्रताप चारों चोर छाया हुचा है। पूर्णेंद्र

भपनी पूर्ण-कला का प्रकारा फैजा रहा है । एक विशाल महालिका के उउन्नल चौकों पर चारु चंद्रिका की चमक निराली ही मालूम होती है। इसी भवन की एक ऊँची घटारी पर एक नवेली नारी चूने से पुते हुए चमकीले चौक पर, विना किसी पलेंग या पट के, नीचे ही विरह की पीका से पीहित होकर पड़ी है। सुघांग्र का शीनल ररिम-पारा उसके हैरा-पाराको सूकर गर्मही चठता है। वसके रोम-रोम से

वलती हुई विरह की ज्वाला निकल रही है। शरद्-ग्रमु में भी इसकी गर्म क्यादें लू की मरोटों का स्मरण कराती हैं। परंतु पंतरेत को इसकी कुछ परवाह नहीं। वे वेपारी विरहिनी की इस दिकट वेदना को देशकर भी कनका कुछ क्याय या चरवार नहीं करते, हिंतु निःशंक होकर अपनी निय मानिनी यामिनी के साथ रगए कर रहे हैं। चनका थह निर्देयता-पूर्ण कटोर व्यवहार मला वह विरहिनी कैसे छहन



विचुत्-विहीन पादल

तिव कर्मा कर नहीं, सावन आरो नैव . क्रात साव दिन बीठि, दशन है दिन देंग ।
विरक्षिती नाविका के दोनी तैन सावन-आरों की गमना कारे हैं। और सावन-आरों में भारी साव जाने के वरवान् विकास से बनक नहीं रहती और वानी महत्ता हो रहता है, वेग ही नाविका के सुरक-करों सेच पर विकासीकरों हैंगी का नाम करू नहीं है। वह दिन-गान क्यांस् वहांती है। शावन-कर्मी हैं। सेका इस गार्व हैं। क्यांगी गुकुमार नाविका कार सेम्सी कर साव गाँव हैं। क्यांगी गुकुमार नाविका कार सेमस कर सह विकास के तान में विकास तथा है,

कीर नेतों के द्वार से बाहर की कोर वह कान है।

TH हरव की इस क्या कहें। इस पर इसे वही दया कारी
है—सामी पही-आर भी देन कारी है। कभी विराहनेहना से
दिस्सा वर कारी अगान है, बभी प्रेम-प्रवास की क्यार
दिस्सा वर कारी अगान है, बभी प्रेम-प्रवास की क्यार
देन क्यार के दिस्सावर प्रेमानुक्त से क्यार होने दे,
कभी हर, वरमा काहि व्याप्तावर आयों से क्यार होने पर
भी हरन, वरमा काहि व्याप्तावर आयों से क्यार होने पर
भी हरन वरमा है। बना कही, बहु हरन विभाग काहे हैं
रिपा काही हर क्यार ही बना कही, बहु हरन विभाग काहे हैं

रहेगा ।

२०८

गए, बहुत-सी नदियों तक का नाम न रहा; परंतु इस मरने

रवि-सनी

में तो पति-प्रेम का प्रवाह अभी समझ ही रहा है। यह ऋरना तो मरने पर ही मरना चंद करेगा. बरना यों ही ^{फाता}

विरह-चेदना

मिसन होइ है स्वप्न में, बिछुरत निकसे बैन । पै दुक्तियाँ क्रांक्षियों कवहुँ, वा विन पसहु समै न । नायक विदेश को जा रहा है। विद्युद्देवे हुए यहा दुस्ती

शेषा है। इस प्रकार उसकी दयनीय दशा की देशकर नायिका यह कहकर उसे धैर्य दिलातो है कि प्यराने को

भोर बात नहीं है. क्योंकि स्वप्न में कावरय मिलन होगा। नायक इस समय तो यह मुनकर किसी प्रकार कापने मन षो सममाकर रख लेता है। चितु पाठको ! करा कलेजा यामकर सुनिएगा । बाद में **वे**चारे नायक को व्यवस्था बड़ी शोधनीय हो गई दै। मिलना

चे दर किनार रहा, सरीय को नींद तक नहीं आसा रही है। प्यायीका मुखयंद्र देखे विना व्येखियाँ यहले दी वकोर की दरह अबुक्तारही थीं, तिस पर नींद काम आपना और नई इनीका है। इतियाँ केंसियाँ यल-भर के लिये भी नहीं म्पात्री हैं। संभव है कि किसी ग्राय मुदूर्व हैं। वल-भर के जिये में सन बार्वे, तो त्रिया के दर्शन हो बार्वे। ध्वारी के दिना

भैद इसम हो रही है। नीद चाने जब न स्वत्र चारे; वहाँ

सो व्यारी के साय-साय बेचारे को नींद के साय भी विशेष हो गया दै। न व्यारी मिले, न नींद चारे चौर न सा चौ की बारा। की जाय। सच बात है, मुसीवत में कीन विगन

रिं-रानी

साथ देता है-कीन होता है चुरे वक्त की हालन का रारीक।

२१०

मरते दम देला है कि शांस भी फिर अती है। मेपारे ने स्वप्न के मिलन पर भी संतीप कर तिया। पर्

इसके माग्य में तो यह भी नहीं लिया है। दिल है बानि में

दर्रोन करता, किंतु वह नाविका के पास रह गया । रागेप ग⁵ दिन विस्तरे पर पद्म करवटें बदला करना है। वही ग्र^{मीहरू}

में है। सच तो यह है कि-

मुश दिनी ने दिनी दा बनी इदीव म है।

यह वर्ष बह है कि बुरमय की भी नवीब म है।।

राजव का गुप्तचर गुप्तचरी है करत शशि, पा अनंग निर्देस : प्यारी को पहरो सदा, देत बदल के भेस । चौर कभी छोटा दिखलाई देता है, और कभी पड़ा, सी कोई यह न समके कि यह घटता-बढ़ता है। किस्सा यह है कि नायिका परविरोपकर कामदेवजी महाराज खासक हैं। जैसा कि वरपतियों का स्वभाव होता है, आपको सदा इस बात का चेरेंद्र रहता है कि प्रेमिका शुप्तरूप से कहीं किसी दूसरे यार से न मिल ले। व्यवः व्यापने चंद्रमा के नाम हुक्म निकाल दिया 🕏 कि वह बिलामासाहर रोज औप बदलकर बनकी मासूका साह्या की निगरानी रक्ले कि वह किसी ब्लीर बार से बातचीत न करे। कामदेव के जाससों नेतो अर्मन-जासूसों को भी मात हर दिया। बह तो हमें मालूम था कि चंद्र कामदेव के मददगारों में से है। मगर यह तो हमें चन माल्म हुआ कि चंद्र कामदेव को लुकिया पुलिस में मुलाजिस है, कौर जासूसी किया फरता है। पेसा ज्ञात होता है कि कामदेव की माराज्ञ स्वस्रती में धनकी स्त्री रित से भी बड़ी-चड़ी है। तभी न यहाँ तक नौयत पहुँची

है कि चंद्र-ऐसों को जासुसी के लिये तैनात किया गया है।

सुर-सरिना

धीन सांत ठंडी बले, बरते नैनीन नीर। खलंफ्साय इन गिरे भिरे, विरे फंड मू घेर। बर्याच्यु का पुरान्युरा सामान शुटा है। विरह के बारणों ने

नायिका के पैर्यरूपी चाकारा को चाण्डाहित कर तिया है। नायिका ठेढे निःश्वास सर रही है। वही मानी पुरवाही पेवर्ग

के ठंदे मोंके हैं। यह को मुमनाधार क्याँ होने कगी, रिमर्विय-रिमनित्म मुँदे पड़ने लगी, करकर कांगुकों को मही लग गर्दै। यह पानी की वनी भीर नेज बीदार प्राखियों की गुलान रेपा, चारटा चन्दें दुःत्व दी देने समी। इसदस करती हुई अश्वार कुचमपो पर्वती पर पड्ने सगी। दिर गीद-स्पी मृति ११ गिरकर समुद्र को कोर अवादिन होने सभी । शाय ही अगर्द चंद्र में पैर्व मी बुस गया चीर इटदर पूर्णा वर प्राणा। त्रैमे पराष्ट्र पर गिरकर पानी चर्चन साथ पायर शामी को दमार्थन करा से जाता है, दैने ही चलुसर मारिश है इत्य पर जिल्हर बश्री से इसई धेर्य की बड़ा से बजी। १^{०१४} इत्पादि नो असे होते हैं, वश्तु बसका पैते भी करते से हैं करणा दुष्मा था, दिन कसके व्यक्तियों के प्रथन प्रकार के अल

बहते क्या देर थी। यह नदी की के शरीररूपी भूमि की रपजाऊ बनाकर उसका हास करने लगी। हम नायिकाकी इस अञ्चुघारा को सुरसरि की उपमादे सकते हैं; क्योंकि यह भी वंगा की तरह त्रिपथगा है। विरह-

सर-सरिवा

रूपीभगीरम के सप के श्रमाव से, नैनरूपी विष्णु के धरणों को होड़कर, कुचरूपी शिवजी के मस्तक पर गिरकर, अक-रूपी पहाड़ पर गिरो, और वहाँ से भूमि पर पतित होकर सागर की चोर प्रवाहित होने लगी। सच है--"विवेकभ्रष्टानांतुभवति

विनिपाती शतसुख: 1°

२१३

बहुरूपिया विध

बहुरूपियो बनत है, घटत-बदत नहि चंद । देख वियोगिनि कहें दुसी, देत रहत झानंद ।

लोगों का यह खवाल कि चंद्र घटता-बढ़ता है, दिलउत राजत है। वास्तव में बात यह है कि चंद्र परोपकार-वरा वियोगि-नियों के दु:ख से दु:खित होकर चनका मनोविनोर करने के तिये षहरूपिया बनता है। बहुत मुमकिन है कि यही बात हो, क्योंकि चंद्र के परोपकारी जीव होने में तो कोई राक नहीं है। भारती रातें हमको इसी की बदौसत नसीय होती हैं। अब वियोगि नियों के भाग्य खुल गए समक सो। चंद्र-सा निष्काम सेवड भला इनको मिल गया. छाव क्या चाहिए। इसके निव नपः नए रूप देखें चौर चानंद से रहें।

मगर एक बड़ा जुल्म हो गया । बेबारे बहरूपियों की रोधी दिन गई। उनको चाहिए कि अब कोई और पेशा मिल-यार करें। भन्ना जब चंद्र-से बतुर जन इस दाम दो दरने ताने, तो अब बान्य लोग इस कार्य को मुद्रायते में सप्रतता-पूर्व ह

चर सदेंगे, यह चारा। हैमे की जाय।

क्षीरपश्चिमीयी का काम्यान स्टब्स के काम हुन्य कार के कि कार , संक्षित्र की बहुत्वर तरह के का बर

मारी मानको के दिवा पंत्राम है आहे। इसका द्री मानको है दुस्स कि में यह मानकार्य के अगानकों के अगाद मानिकारियों के क्षा मेंगे के दुस्सा के का का का मोन मुख्य है के मानका है कि इस कहा के मानकार में के मानकार में का बहुत के मानकों के मुख्ये होंगा नकार है जो मानकों को मानकों का मानकों मानकों के मुख्ये होंगा नकार है जो मानकों को मानकों का मानकों मानकों मानकों के मानकों मानकों

1

वेच वर्गाख

कार कानी देश हुए हाई होगा का

इत्योर इव वर्त्न, हेन्द्र श्री संग्री शास्त्र की कानो बगारची अर्थिताओं शार है। गर-गर्भ

बारतो में विकास अपन्य अलो है। वेले समय वह बामार्ड कार्यि है, विशव्हा सुकारत कर को है। से बहुमत के समान कार्य

रश है, क्यान-एनवान बार-बार क्षार की चीर देख रही है। ऐस शाल शलत है कि वस बार्ज न्यार्ज न्यार्ग की वर्णावा है। वसके पेतर वर बर्भी चिता का चित्र किल जाता है, तो बर्मी नैरास्य के निरान संबर काले हैं। बाध मुख-अवत वर चाता का चयन पहने नाय

है, तो बभी वर बाजर से बातीदित हो फात है। शारितरेर मचारा है, यह कांवर्त बनोच हरायवान है। बहा ही मारपूर्व कीर मुंदर चित्र है। भारत भीर विका का वहा ही मनमोदक मिश्रण

है। परंतु इन मार्ची को बाच्छी तरह वे ही समक्त सकते हैं। शो पहने बई दर्भे ऐसे चित्र देन बुड़े हैं; जो दिन ही या का मदा सुद चुके हैं। इंतवार में भी वक बन्दा कार्नर रै-

किन-किम तरह को दिन में नुबरती है इनरते ।

देवस्त से भी ज्यादासम् इतकृप से ।

प्रेय-१श्र

्षेत्र क्रियम बेटा क्रिया, चलक लुप्ति हे कर्ता. - हे भैंगी किस्ति के प्रिटेच के राज्या हुएता.

नित्र शुक्त है, बाब शक्त है। पवित्रा वे इस अवस्था रिष्ठ को कारियों के उत्तराने बाद, कार्तिनेत्र बर, वर्तिनारेनंतर कर मान बीजिय । भाषा व्यापानाचा है, चर गु दशका शुद्रामा करे देशको के सह यानीय होता है , बाला व्यवस्थायकण दशान अवस नेती है ३ वर्षि की कारेश शाद करून शासक शा शक्त है । अर्राक्षण मत्त्रे यस किन्द्रों से विकार के बन्ता सकता क्रम त्यार हैना हैन कोचना है है। क्या संशाकार किन्दू । इक्ट रिटन्स से सब के बाद राष्ट्र काल इस बांधारम् वेद बाए इत हैं, बारशा समया बीराएर कार्य है। करा प्रश्न होत्र बार सरहातु की बस्तवार बारवा कराब कर ather server 🗗, are also servere 🖁 e vizir pes a serve serve arre e हैंगी में हर केएक करनी। अस्त करित कर कार्यकल कर नवल कर नहीं हैंगा रूप अंच्या को रूप का का का रूप अंचार है। जा रहे रूप के 🕯 किहें कर्मक के बबाले की, बाहाद करान्य हर कात का संस्था भी केराम्। कुम्ब कर्नु । बान्तरस्य अक्रमण अंशका के बार्ना कर्म The time factors and the factor of the same of agree of the first

मन में जैंचा ही नहीं था। श्वंत में बही 'हाई श्वंत रेस कें लिख दिय जो पति-मेम की मेरखा से उसके मुस्तित्क के श्वंप मान में थे। 'प्रिये' लिखकर सोचने लगी कि एम में क्या लिहूँ। छोचने-सोचने मानसिक चच्च के श्वामे प्रियनम की हुबहू उस्तीर, हाब-माब, कटान, प्रेम-मुसकान और माजनीत करते

हुए रूप में खिच जाती है। नायिका 'विश्वर्गितारम' हो तरह निरवल हो, इस' छवि को निरक्षने सगती है और

रति-राजी

२१८

नायक के रूप में जपने रूप का प्रतिविक्ष देशकर भाग ही जपनी छवि पर विद्यान हो जाती है। यही कारण है कि सार्तिक-भाव-विद्यान क्षरा सोखिंग में 'प्रिक्षे' संबोधन कारी है। इस धुन में लगी हुई पति, की सुचि में तीन बनकी देश, सबको यही खावाल होता है कि वह बीबानी हो गई है। बास्तव में उनको इस दशा में और बागकरन

में कोई विरोप कार नहीं है । कार्यावस्ति में हीन नायिका पत्र को समेटकर, बड़ी छुशों के साथ नाया के पास निजया देती है । इसको यह स्वकता ही नां कि समकी पत्री कोरी है। बह तो राजी हो गरी है कि मेरे क्ष्म अच्छे मात्र मरकर पत्री लिशी है। परंतु पाठक, बचा सबसुब इसने कोरी पात्री ही देरी मर्रो-नर्री, दमारा तो स्ववस्त है कि बात तक शाया ही किंगी

3 8

२१९

नेमन्यवीण पंडियों की पूरी वेंच तक कामयाव नहीं होगी। प्रखुव फियें राव्ह के बागे उनकी खारमयी भावपूर्ण पत्री पत्नी मरा करेगी।

16

प्रम-पन्न

श्रीरने ऐसी मावपूर्ण वाती लिखी हो । हमें तो यह भी निरचय है कि जितना भाव 'प्रिये' शब्द में भरा था, उसको दरसाने— नहीं-नहीं, उसका खामास तक दिलाने—में जुनी हुई बढ़े-बढ़े

मार की मार पुणन के गाँउ धनुष-मा, औरन जिक्कि पर तार ।

चानुसार सारत सहै, तका साम शुन दान !

बन्यान्य शत्कां में तो रतिनाय हो वही मुस्कित से करें पनुष-रार बनाने की सामग्री मिलनी होगी, परंत्र हाएउ बसत बनके लिये भनेकानेक सु'दर सुगंधित सुनर्नी

का उपहार लाने हैं। इसोलिये वे कारके कंतरंग नित्र हैं। फेक्स कोमल कुमुमों को क्रतार हो न साकर वे भागे

साय नव पत्नव, नव संजरी, निर्मंत नीर, नीले, लाल धौर घवल कमल, नव कौमुदी, नए पत्ती, नए महमावे अनर, नवजीवन और नवानंद के नवरज भी साते हैं। इस मधुः मास में मर्मस्त, मैनमहीप अपने माननीय मित्र की

मदद से मधुपों की प्रत्यंचा, मालवी इत्यादि मीठी महक्षाते

पुर्पा की कमान, सधुमकरंदमय मुद्दित संजरी के गाउँ लेकर मन में मुद्दित होकर मधुयामिनी में मरण विरदिनियों तथा मानिनी, मध्या, मुग्धारूपी सृगिर्यो मारने के लिये तान-तानकर बाखों की मृदु मार मारता महादेवजी की सेहरबानी से खापको खौर भी मरा ^{हि}

है। जातु होने के कारण ज्ञाण किसो के दक्षिणोचर तक नहीं होते, परंतु एतुष-माण पहले से कहीं क्यादा जन्दा पकड़ सकते हैं। वेचारे बेसमाफ एगों को जपने साज व सामान की सान दिलाकर मोहित कर जेते हैं; परंतु वे मृग सार की मार से जपने माणों को न छोड़कर सान, लाजा और कुल कान ही को होड़ हेते हैं।

देखों, यक चीच न छोड़ने के कारण सीन-सीन चोचें छोड़नी पड़ती हैं। वड़ा खारचर्यजनक व्यवहार है। शिकारी के रायेर दक नारों, पतुर कौर वाण भी कोमल कुसुमों के हैं, मर्स्यचा चनाई है, चंचन चंचरीकों को जुनकर और शिकार के माण धुटने के बजाय मान, गुन और कान ही खुटते हैं।

मार्तेड का मोह सबनी को स्त्रि वे कम्, देखी वसनीवडीन :

बाड़ी ते हैं तपत नित, अधिक-अधिक मतिहाँग।

कहते हैं कि किसी समय पर सूर्य ने नायिका/वरोग की सनन देख लिया । उसके सौंदर्य को देखकर ज्याप उस पर किए ही गय, जीर समें पागस बनकर जायिक-जायिक उपने कि

कहीं गर्मी के कारण नायिका अपने बस्त फिर बतार है, वे गरीव को बसके नम्न गात की सतक देखने को एक बार फिर जिल जाय । यह नायिका तो साल्य होती है सु देखा की

साचार प्रतिमा है, अन्यमा स्टब्स, तिसकी नवर के सानने सैकड़ों गुल रहते हैं, कसे देखकर ऐसा कभी नहीं कीय आया। सींदर्य में भी एक कशीब शक्ति है। इसे देखने की किसम

मन नहीं सक्षमाता । सूर्य के सदरा एक कारवारों भी इसके फोर में पड़कर कापने करांच्य से क्युत होने समग्री हैं। सूर्य यह नहीं समग्रने कि इस अधिक तपने से उन्हें प्यारी के गात-रर्रोन नी संभव हैं कि हो जावा, विनु अधिक गर्मी के कारण जीयों को ज्यार्थ कितना कट काना पहेगा। मगर

इसकी कौन परवा करता है ? सुरज अपना दिस सी पुढे। वे

मार्तेड का मोह तो वेचारे दीन, मतिहीन हो गए। समक ही होती तो वेचारे

२२३

ऐसाकाम ही क्यों करते। किंत जाब को नायिका के द्वाप क्षमा है। स्त्रियों के स्वमाव में हठ बहुत होती है। कहीं वह धकदृष्टर मैठ गई कि घाडे प्राण निकल जायँ, किंतु बस्न तो हर्गिज न इतारूँगी, तो समक लो प्रलयकाल चा उपस्थित हुन्मा। क्योंकि स्रज देव भला किससे कम हैं। वे क्यायक-क्यायक तपते ही षते जायँगे। परमातमा सुरज भौर नायिका में से किसी एक

हो समित है। पाटक ! च्याप समके कि वें सुरजर्जी महाराज नाविका का गांद ही देखने की इतना उल्लुक क्यों हैं। नायिका का सुरद देसकर ही वे सं<u>तुष्ट</u> क्यों नहीं हो जाते। वास्तव में पात यह

है कि नाविका का मुख को चन्हें चंद्रमा के सहरा दीश पहता ै। भनः वे पहचान नहीं पाते हैं। अब नायिका को विलयुन भग्न देराते हैं, तब पहचानते हैं कि यह नहीं नायिका दै।

दामिना-दमक

षश पेंट शासीन श्वय, बान्ड केंद्र बुक्ट । राषा माध्य मुश्तिका, कुनै चा की कर ।

वर्गेंडाव का यह कार्यन रोचक दश्य दर्शनीय है। चाकारा पनचीर पटाटोड में चिरा हुआ है। रहनहड वनच विभुन बाहतों में इस प्रकार चमक जारो है, सानी कोई बंचन

ावपुत्र बाह्सा साहन प्रधार व्यवह जारा है, साना कार वचन पुषर्गा कपने प्रेमी का सन सुधाने के लिये पतन्तत में प्रकट होकर दिए जानी है। बचने काजयहाना मेपी को रसपूर्ण हैन बाधित परीहे कीर सपूर पुचार-पुचारकर बध्यपैना कर से

हैं। इसी मुग्दायों समय से सचन कुंड के पहांत स्वान में एक पंचा के हुए के मीचे राजा-मायब मुरसी तिप सूत रहे हैं। पाटक, वह कीन पायाय-हुद्दव है, जो मधुर मुस्लीमधि स्वामविद्दारी की राजा के साथ इस मूले की मीडी के स्वान कर मेमरसाई नहीं हो जावना ? क्या राजाकृष्य के इस समय

कर प्रेमरसार्ट नहीं हो जावना ? क्या राजाकृष्य के इस समय के जानंद का जाप कानुसान भी समा सकते हैं? क्या राजिकाजी के समान जान जीर कोई धन्य है ?

च परंतु आगे चलकर निरोत्तवा के बाद यह परन छोगा कि इस अवसर पर इन्होंने चएने छाय यह मुरली भारतहर पर्यो ले रक्की है । हमने तो सुना है कि नायक-नायिका के संयोग के शुभावसर पर तो गलमाल-जैसी सुदर और विय वस्तु भी त्याग दी जाती है, क्योंकि यह उनके मिलने में बाधा उत्पन्न करती है, चौर खुछ नहीं तो रंग में मंग तो अवश्य कर देती 🖣 । "हारो नारोपितो कंठे मया विश्लेपभीरुए।" यह सी

टासिनी-द्मक

२२५

सब जानते ही हैं। तो फिर उसी प्रकार बाधास्त्ररूप यह मुद-तिकाक्यों साथ ली है। क्या उनके प्रेम को उस समग इतना ष्यसर प्राप्त था कि परस्पर के धानंद को छोड़ एक और षीव की स्रोर ध्यान बेंटाते, स्रौर उसकी रक्षा की जिता में रहते। चौर फिर भूलने के समय तो एक हाथ में भुरती रखना

भीर केवल एक ही हाय से और काम लेना को यहा कष्ट-

दायक होगा। न-जाने कव भूतने से कुट पड़ें। परंतु यह सब होने पर भी मुरली का साथ रहना किसी चौर गृद कारण का चोतक है। क्या कापका यह खयाल है कि जिस मुरली ने कितनी ही बार बिछुड़े हुए विरद्द-ध्यथित इस इंपती को भपनी मधुर ध्वनि द्वारा मिलाया है, उसका श्वय वनके मुख के सुष्रवसर पर परिस्थाग कर दिया जाय ? क्या बही मुरली विसक्ती सुराद तान ने अवांगनाओं को मुग्य कर कृष्ण के प्रेम में सरावोर किया था, उनके इस संपत्तिकाल में छोड़ दी थाय श्रम्या जिस <u>मु</u>रली ने बहुत-से रास रचाए और कृष्ण का

२२६ र्यत-रानी

राधिकाजी के सहित प्रेम-रस-पान कराया, वही निरसंगिनी व्यय एक मटोही की तरह विस्मृत कर दी जाय ! नहीं-नहीं,

सुख चतुभव करते।

ऐसा समफना बड़ी भूल है । कृष्ण-यधिका ऐसे कृतज नहीं हैं।

चनसे ऐसा हो नहीं सकता । तमी तो उन्होंने इस निर्जीव बसु

इच्छा होती है कि हम भी कहाँ उनके मूले की बैठक को निर्जीव लकड़ी बनकर उनके उस समय के सुखलर्रों का

को भी जेम-सहित अपने आनंदोत्सव में सम्मिलित हिया है। सचमुच, वनमाली गोपाल बड़े ही कुपालु हैं। हमें तो यह

चड़िके नार घटार, निरांस रही घन की छटा :

गावत राग मलार, पायल 🗊 मानकार सन । सायन-भारों की काली घटायें नम में विरी हुई हैं, जो बई

' सुंदर मधीत हो रहीं हैं। एक सुंदरी अपटारी पर बैठी हु

धनकी छटा निरस रही है। समपुर स्वरों से मल्लार राग

गारही है। पैरों की पायल बजाकर उसकी संकार से साव का काम ले रही है। बास्तव में चड़ा सुंदर दृश्य है। वर्षा-ऋ की रयाम घटाएँ सबमुच निराक्षी ही झटा दिखला रही है भीर उस समय मल्लार राग सोने में सुनंघ का फाम दे रह है। भीर उस पर खुबी यह है कि नायिका के कल-कंठ है इसका गाया जाना और इसी के पैरों की पायलकी संकार की गाल का दिया जाना ! बाह-बाह, क्या करें बढ़ा उमदा रंग जमा है, और यह सामान कहाँ जुटा है ? घटारी पर। तर्भ यो दुराना मचा चा रहा है। घन की छटा, केंची घटा, दर

खटा पर खप्सरा

धसल लुत्क है चटपटा।

थादलों की यदायदी कर उसरी कारी पटा, इन उसरे सम नैन ; बरावश बरका समै, सावन में दुस दैन !

वरावरा वरवन तन, शावन स दुरु रन। बदाबदी का आर्थिक संसार में खूब धींसा बदता है जहीं देखो तहीं बढ़ा-क्रपरी है।यहाँ तक कि बेबारे होटें

जहाँ देखो तहाँ चड़ा-ऊपरी है। यहाँ तक कि बेबारे होटें होटे क्यापारियों और जन-साधारण को पीसने में इस रावधी प्रधा ने काजकल की चिजली को चक्तियों से भी क्याड़ा बार

क्यि है। फलस्वरूप विचट देखें, हाहाजार प्रच रहा है। मामला इतना पढ़ गया है कि ध्यार किसी सीहागर प सिका बाबार में जम गया है, उसके याज की लोग करर करने समें हैं, धीर यह प्रपूर परिसाण में साल पैराकर बेपने साम

है, वो उसको यह बहुवी कीरों से देशी न जायगी। वे उससे भीर क्ष्यहा, पदकोसा, महकीसा, सस्ता चीर उससे भी दवारा परि-माण में, मास वैदा करेंगे कीर वेचेंगे ! यहाँ वक कि कीरिण ऐसी करेंगे किकिसी पहलू से उसकी शास न? कर देंगे भीर

क्षपनी धाक जमा सेंते। परिचाय यह होता है कि इस प्रशार को पदा-जनरी से चौर बिना खास ग्रांग के प्रपुर परिमाण में माल बनाने से पूरक-शक्ति क्यादा हो जाती है, बीर ग्रांग

बादलों की चदावदी २२९ घट जाती है। फल यह भी होता है कि बाजार में हलचल, द्वेष-भाव और एक दूसरे के प्रति वैमनस्य फैलता है। फिर इस प्रकार की कार्यवाही तो 'मार्केंट टाइम' बाजार के दिनों में भीषण रूप घारण कर लेती है। हुवह यही हाल है हमारी नायिका के विषय में । सावन

का महीना है। नायिका पति के विरह से ब्यत्यंत ज्याकुत्त है। इसी अवसर को ७५युक्त समय जान, बेदर्द बादलों का समृह मायिका का जी जलाने केलिये चिर व्याता है, ब्यौर लगता है गाज-वाज चौर चमंक-कमक के साथ वरसने । इधर इस समय में प्रिय की सुधि कर दग्धहदया नायिका के भी नेत्र काशु-मोचन करने लगते हैं। ब्यों-क्यों बादल रंग जमाकर ज्यादा-च्यात्रा मेह बरसाते हैं, ह्यों-स्वों नेत्र भी प्रतिबंदी चनकर बाइलों के साथ बरसने में होड़ा-होड़ी करते हैं। फल यह होता है कि इन हुद्दंगों के कगड़े में वेचारे रारीब मारे आते हैं। लड़ते हैं दो मदमस्त मतंग, पर पिस जाते हैं बेचारे कोमस पादप। इनका 'कंपिटीरान' इतना भीपण रूप धारण कर लेता है कि चधर षो बेचारे दीन-दीन जन-समृद की, तो इधर बेचारी विरद्दिनी नायिका की शामत आ जाती है। परंतु ये दोनों किसकी सुनें, ये तो श्रापनी-श्रापनी धुन में सवार हैं। इन बादलों की मूर्थंबाको सो देखो, ये गैंबार यह नहीं समकते कि मला

A. 150 देश करें नक वर दर दिला सर्चन ३ वर्तन्तर हारस ही परेंग्रो

* : .

कारी व नहीं नारिका के तेती में बेहापूर्वी का कराइ मार मर्ग है, कार बारजों में कार्रावन क्षामाल में हो अब है, में थाय को माहे पर करकी थापनान्या हिंद सेवर रह अना

कीता। याना कोनन है कि इनका कोई वह मुमारे कि में

पैंगा चार्यां का दू ख रेने वर बाज बार जारें। नहीं मी स्प रिक्पुरानेवाम है बचारे अवस्थाने सागर के संविधीय

सन्दर्भ की साम्राव है ।

सखी का स्नेड

निसि कारी चनघोर नम, वातिनाथक सब साम ; विद्युत सिक्ष पै तीन कई, वार्य दिखावन काम ।

रात्रिक समय है। ज्याकार में यनपोर पराच्यों का घटा-होर है। ज्यंपकार इतना पना है कि हाय-को-हाय दोरतना सिरिकत है। मार्ग भी ज्यपिरियत है। इस मर्गकर समय में ज्याने त्यारे के मेम में चनी हुई एक नायिका पर से बाहर निकती। एक तो की श्वमाब से ही भीड जीर कोमल पिच-वाती होती है, तिस पर मकृति का यह मर्गकर रूप ! यह ती करी-बड़े साहसी, भीर जीर बीर पुरुगों तक के हृदय को हिता देनेवाता है।

परंतु पाठकगण ! यह न समस्थिर कि नाविका इस दरण को देसकर दर गई है, और इतारा हो पोये सीटने का विकार कर रही है। यह तो कपने प्यारे से मिसने को अस्थेत वस्तुक हो रही है। वसका हार्सिक प्रेम इचना प्रवस है कि त्रिसके आगे यह सन् अयोत्पाइक साथ बुद्ध बीख नारी है। सार्ग अपरिधित है और पोर मर्जन करते हुए बाइस भी नजाने कर मृगसाधार बरसने सर्गे: रास्ता भी एक सचन अंगस में Pick post

*1: से हैं र विपात हेची, बात बेशरी सर्वित्र के रिपानिका निष्य बाज रेवाचा बाज जुल है। बारत बीर बोर्ड प्रमा ही

विपत्ति में धापनी सन्धी की सहायता की। भौरण, धर्मे, मिश्र श्रद कारी; बायाने काल वर्रावर चारी ह

तो करें शनिवारों भी राष्ट्र दिखाने का बाच हा आगी, यां

बार नो कवरी थी केन्स दिस । अतिका बादेनी है। ही में 'बारे का राष्ट्र क्षेत्र रेशन को कीयन वर्तमार्थ में, सतार रीति भे, पान्य बाह्य बाह्य कार अल्प रहा है। बर् यह गी. बन्धार बगका बार्ग बहुत्र बजा । वर्ग बस बाबी बॅरियरी रीत में साथ कीने जिने ? कामधे कुछ कालूप कुमरीय है। महीं के किसी सी अस ने कम दुव्यास दर इया न ही, बन्पुन् इरपन्न ने श्री-बर नगकी राष्ट्र से बाइकों पैरा की। वरतु-"जाको राग्ने साहदी बार न माँड है कोप।"की भी दुःम-पूर्ण दशा को देखकर किमका कडोर इत्तव नहीं वर्गी त्याँ माखिर विष्णु के इत्तव में ब्या-शाव का शवार हुआ। प्रति चंचलना, यूनि बीर कामा इत्यादि मुखाँ से बमे बानी विष सस्यो जाना, भौर सदयोजिन व्यवसार मी क्रिया । समय-स^{हर्} पर पमककर नाविका की राह पर प्रकाश काला, जिममे पं ही समय में बह संदेतस्यक्त पर ध्यपने नियतमसे जा निती धन्य है विश्वन् ! तूने एक सबी ससी का कार्य किया कि?

कले की कमक

शाँवन में मूलो परी, विश्व श्रेम तिय मुलाय , साथ बीच प्रकटे विथा, 'शरी' बहुत लपटाय ।

वर्षा-चतु भी क्या ही धानंदरारी है। इसमें तो वृत्त-विटर्पो के साय-ही-साथ मनुष्यों के यके-मदि मन भी मोद से भरने सगते 🖁 । जनमें नृतन इच्छारूपी कोमल पत्ती निकलने सगते ईं। प्रेमरूपी पुष्प प्रस्तुदित होने समते ईं, जिनसे

· ऐसी हरपहारी समयुर सुगंध निकलती है कि सुँधनेवाते का मन प्रेम में मस्त हो जाता है। सारी बनस्यकी सुंदर नायिका की नाई हरी साड़ी पहले कारयंत रम्य प्रतीत होती है, और षसके हारीर से बह मनीहारी गंध निकसती है, जो प्राणियाँ

के जी में नवजीवन का संचार करतो है। जगह-जगह निर्मल जल से भरें जलाराय चीर धनमें कुने इप कमल चीर सुसुर भारत रोषक मालम पहते हैं।

इसी चवसर पर प्रेमी-प्रेमिशकों में अनेकप्रकार की कैति-भीकार्षे दुष्पा करती हैं। कहीं जल-कीका, तो करी वनविदार,

परी रास-रचना, को कही और-और रंग-राग। एवं यह है कि कोई-स-कोई भ्रेम-सोशा होती हो रहती है।

448

वर्षाचात्र में सावन का सदीना है। नारिका ने सरन व

में एक पूछ के नीचे भूता बाज दिया है और सरियों हे सं वारी-बारी मूल रही है। इनको नायकती का तो छपात है ही

नहीं । बेमारे वे मी मेमी हैं । मूला मूलने में उनकी भी बातर

न्या र है। परंतु दे इस न्यानंद से बंदित रहते गर हैं। ब्रेनिसें को चापना प्रेस प्रकट करने से कीन रोड सहना है। बातिर में मो शीशास्त्रज पर चा पट्टेंचे, चौर वहाँ एक इन की मीट में दिन रहे, और चुपपान बैठे सन्तियों की होन-मरीनिहाँ बातें सुन-मुलकर मन-दो-मन मुद्दित होने सरे । बाद वो सर्वे देंग रहे हैं, पर स्वयं किसी को दिलाई नहीं देते। देखी-देखते हनके मन में इस रंग-राग में सन्मितित होने की शत्पु^{करा} पहने लगी । वे भौजा देखकर प्रकट होने का विचार ᢇ सारी। इसी समय नायिका ने मूले पर पदार्पण किया भूतने लगी। सक्षियों ने बात-हो-बात में दो एक मूले षोर से लगाए कि स्वभाव-भीर, कोमल-दूरवा नाविका के। षड्ने लगे। बह् भय से बोल उठी 'मरी'। परंतु ईंस् सिवयों को वो इस 'मरी' में और मजा व्याख या, बं यस येचारी के होश तह रहे थे। उसका वह कहल स्वर की सुने १ ऐसे मौकों पर तो ईश्वर ही सहायक होते हैं। अब गौका नेमकर जन्मनी को कार ने कार्य और साथिह

र्गनिनाती

भले की कमक 230

को धनाने के बहाने बीच ही में उसको पकड़कर खंक से लग अपनी इच्छा पूर्ण की। इनको देखकर नायिका सहम गई

यह रार्म से सिमिट गईं, पर करे क्या ? उसी ने तो बार भार 'मरी-मरी' कहकर बचाने का निर्देश किया था। नायकर्ज

नै कोई बुरा काम नहीं किया, जो उसकी चचा लिया हाँ, इतनी उनको अन्तमंदी थी कि नायिका का भी भय निवा रण किया और अपने सन को अभिलापा को भी पूर्ण किया

*

प्रेम-प्रस्वेद काई है शे सरदक्षत, ससी पाकरस सेव ;

थिय के दियर लगत हैं।, अकटत श्रेम पमेव । प्राय: शरद्-ऋतु में नायिकाएँ पाक-रस का सेवन किया करती

हैं। यह इसीलिये कि पाक-रस सात्विक और पुष्ट परायों के सम्मिश्रस से धनाए जाने के कारस बत्तरायक और गुस्कारी होता है, और शरद्-ऋतु की कड़ी शीवको मिटाकर शरीर में गर्मी का सचार करता है। इमारी नाविका की भी उनकी प्रिय सखी ने शरद्-ऋतु में पाकरस सेवन करने की सताइ दी । भला सखी होकर ऐसी सलाह न देती, तो झौर छीन ऐसी सम्मति देता । इस हिनाभिलापिणी ससी ने वो इसके सुस के तिये यह राथ दी थी। परंतु क्या जार खदात कर सक्ते हैं कि इसका उत्तर नायिका ने क्या दिया होगा ? क्या उसने ससी को अपने हित्तचिंतन के लिये धन्यवाद दिया और उसकी सलाह मानकर पारू बनाने का विचार किया है नहीं-नहीं, इसकी धो यह सलाह उलटी हानिकारक जेंथी। चसने यह सं...

कि श्रमर पार-सेवन किया जायगा, तो यह निरम्प है े इसकी पुष्टता के कारण राग्नेर से, रारद्-श्यु के होते हुर्र

प्रेस-प्रस्वेद भी प्रस्वेद बहने लगेगा । मतलब यह है कि उसने जान लिया कि सखी की सलाह का सारांश यही है कि पाक-सेवन से

₹₹७.

शरीर में उप्रशता था जायगी, और शीत मिट जायगी। परंतु इस याजार से लाए जानेवाले सौदे की तरह पार-रस के द्वारा लाई जानेबाली चप्रस्ता का तो उसकी स्वयास तक नहीं था, क्यों कि उच्छातातो उसके घर की ही चीच थी। जव चाहती, तव निय से खंड-भर मिलती, और इस नेम-मिलन से हृदय में जो उप्याता च्या जाती, वह सौ शीतकाल की सदी मिटाने को पर्याप्त थी। यही नहीं, यह उप्लाता तो इतनी प्रवल होती

 शीवकाल में भी सात्विक प्रक्षेत्र चसके बदन से प्रवाहित हो पत्तता। गर्मी प्राप्त करने का जब यह स्वाभाविक ही सरीका इसके पास सौजूद था, तो भला वह कृत्रिय-रीति से, पाक-सेवन १ समस्ताव का प्रेमपूर्वक संहत कथा चौर इसका ^कारण भी

से, षम्यता लाने की इच्छा ही क्यों करती। चतः वसने ससी इसे सुमा दिया। नायिका ने छ्व दृश्दशिता का काम किया, नहीं सो चगर विना सोचे-समके सधी की सलाह स्वी^कार धर लेवी, तो फलस्वरूप जो त्रिय के बेमालिंगन से प्रकटते हुए मेम-प्रस्वेद के साय-ही-साथ जो पाक-रस-प्रमृत प्रस्वेद प्रादुर्मृत दोता, सो दोनों प्रस्वेद-धाराचों के मिले 🚾 इस प्रवाद में न-ञाने हितने प्रेमी प्रवादित हो आते ।

षादल में विजली

कारी सारी पहिनके, रसत स्वाम सन फान ; बिजुरो जिम्म चन में चमकि, इसकि ग्रमकि गर मान । शीतकाल कौर वसंव की बयासंघी का समय है। न मैं

क्यादागर्मी जीर न सर्ते ही है। फागुन का महीना और होती के दिन। की-पुरुष भदमस्त होकर फाग खेलने में लगे हुए हैं। पार्रो जीर गुलाल के लाल-लाल बादल वह-उपकर लात पानी की ऋड लगाय हुए हैं। याहरी जंगों के साय-साय

नवेली रामा ने भी अपने सींदर्य को पमधाने हैं लिये अपना स्थास के रंग में रंग मिलाने के लिये स्थाम साड़ी पहनी है। वे साड़ा के छाले रंग से छप्या है स्त

लोगों के भीतरो मन भी रॅंग

स्याम साड़ी पहनी है। वे साड़ा के काले रंग से कच्छा के मन को साल रंगना चाहती हैं। इसी वेश में वे रिगत करके गिरियायी के साथ काग रोलने निकती हैं। वरंतु रोल कारं-होते ही रंगीले शिक्षकराज ने अल-मंग्री विचकारी बहार-क्सको व्यव्ही तरह से रंग में संयंगेर कर रिया। भीणी स्याम साड़ी से पानी मतने लगा और बंग पर साड़ी के

चिपक जाने से मुझील चंग-प्रत्यंग दिखाई देने लगे । श्^{ही}

समय, वे अंभी नवोड़ा होने के कारण लिजत होकर भाग गई।

गई। इस चंच

इस पंपल भगान का हो कवि ने वर्धन किया है। जलाई शेक्ट मरते हुए काले पटरूपी सेप से विजली की तरह पंपलता के साथ कपने क्या की पमक-दमक दिखाकर, लिनत होकर कीर पायल, किकिनी, नुपुर इत्यादि काभूपर्यों की मसकारी हुई, ये साथ गई।

क्या आप सममते हैं, वे अकेशी ही भाग गई। नहीं-नहीं, गरि आप ऐसा सममते हैं, तो महत्व सलती पर हैं। पेचापी भवता ऐसी पन ऑबियारी में अकेशी होती, तो डर न जाती। वे अपने साथ मनमोहन के मन को और खजा सली को रेती गई।

सता गई।

मेनारका मार

कार नेदरीयना, जनतः वीते मीर। विश्वास नुदर नातु नव, तीते भीद वर्कर र

ींगे पद्मेत को बंद व्यास बतना है, बंद की देगते देगों बद कभी नहीं कपात्र, जमी बचार सदल मुंदर बणुर्ची

का निरोचना करने हुए, मीर्र्डोनामना में मेरा जीवन क्यमार हो। भीर्र्योग्रमना में क्या सार है, यह वे ही सीता जान सब्दे हैं, जो इस चनामना को कर जुके हैं। सीर्र्य ही इस सांग्र

सृष्टि का शृंगार है। इस के विना यह संसार केवत वह भार है, जिसमें गुजर होना दुरवार है। यों सो सुंदर बलु सबसे ही कच्यी लगती है, किंदु जो इसके कदरपान हैं, इनको बतने देशने से हुख निचला ही बानर काता है। गुज सबसे मांग

देशने से कुछ निग्रला ही बानर बाता है। गुल सबसे भाव है, किंतु युलयुल को उसे देशकर कुछ ब्योर ही मदा बाला है। चंद्रमा की खुणी बकोर से शृद्धिए। मेर्जे की रोसा बाउड

चंद्रमा को खूरी चकोर से पूदिए। सेगों की शोना चार बदसा सकता है। फिर जो सींश्योगायक हैं, बनका वो कशा ही क्या है। बिघर हिंग बालते हैं, कहें सींहबंगी सींग सबर बाता है। श्याम पन सें कहें कृष्णचंद्र शिसतारें रेतेहैं। मपुर सान मुनाई पहती है। नाविका के मुखदे में सनकी निष्कतंक चेड्र के द्रांन होते हैं। सुग, संघन और मीन को देसकर वे किसी नाथिका के सुंदर नेत्रों के व्यात में मान ही

वाते हैं। प्रश्रत-नटी नित उनकी आँखों के सामने नाचती रहती है। चिदियों के चहचहाने में वे प्रकृति-देशी के कल-कंठ से मुमपुर भंगीत का रसारवादन करते हैं।

सारांश, यह शारा अंसार करहें सींदर्यमय प्रतीत होता है। प्रस्पेक बस्तु में जन्हें परमहा परमातमा के पवित्र दर्शन होते हैं। भंत में वे सींदर्य के उस लोक में पहुँच जाते हैं, जहाँ केवल

सबे सींदर्योपासकी की ही शति है, श्रीर जहाँ की सुंदर माँकी के दर्शन होते ही कारमा एस महाकृषि में खब हो जाती है, विसने इस संसारसपी बहाकाव्य की श्वना की है।

सोंदर्भ की शक्त

है प्रभाव सींदर्ग को सबपै एक समान 1 अन्तर, जनकंकी भागि है, जल को बिद शिंग प्रना

कीन ऐसा है, जो सींदर्य को देखकर प्रसन्न नहीं हो^{ता} हिस पर इम बाजभाव नहीं पड़ता विशव कासर सद। पर

पक-सा दोना दै। सुंदर वस्तु किसे थिय नदी अगरी विमाह चपनी सु'दरता के ही कारण जल को प्रांगी के समान स्वाध सगता है। सभी तो अल हमेशा वसे चपने शोश पर रिप्राप

रमता है। मींदर्व के प्रभाव के सामने स्वभाव का प्रभाव बाह् हो जाता है। मल का यह स्वभाव दे कि कोई भी वर्षों न हो, यम, हाथ पहने ही जनको सुबो देता है । किंतू धमत्र वी

क्षमनीयना को देशकर वह कापना काम करना भूप जात है । सींदर्य के कारण जनकी बक्रति में परिवर्तन हो आग दे, और तारीक यह दे कि कमल हो नहीं, परिव बार्गी जो क्यात की जाति के हैं, चनको भी जन्न कमन ही के संगत पिय सममता है—उन्हें कभी क्षांता नहीं, बीट पर हे सन चन्य प्रातिवालीं की भी रखा करना है। भी हैम-गर के

पविष में, पनमें यह बान हिती हुई नहीं है कि किन गरा।

जिसको इस प्यार करते हैं, उससे कुछ भी संबंध रखनेवाले

283

हमें उसी की तरह ध्यारे लगते हैं। रोक्सिपयर ने बहा है कि सोने की व्यपेता सुंदरता को चोर

सींदर्य की शक्ति

जल्दी लगते हैं। यह बात शेक्सपियर ने विलक्कल पते की कही है। किसी ने कहा है—'सुवरक को दुँढत फिरत, कवि, व्यभि-पारी, चोर ।' इस मानते हैं कि देंदते फिरते हैं, किंतु तभी तक

कि जय तक सीदर्य के दर्शन नहीं होते। सीदर्य को देखते ही भोर चोधी करना मूल जाता है, कदियाँ की जलम उनके कर

में ही रह जाती है। सींदर्य को देखकर कवि और उनकी कलम दोनों भीचक्के-से रह जाते हैं। अब रहे क्यमिचारी,

सो उन देवारों को हो सींदर्यको देखर सुध ही नहीं रहती।

ज्योतिस्वस्प की ज्योति राषा हिने निवास हित, बीन्ह ओतिमद पण । ओति पिंड निवस्सो हिने ताहि हिनव्ह कान।

वेदांतियों ने ईरवर को 'ज्योतिमय', 'ज्योतिकर', 'विश हत्यादि कहकर कसके गुरू-गान क्यि है। वनके मतातुसा इसका रागिर ज्योतिमय है, केवल ज्योति का बना हुमा है इन्हीं ज्योतिस्वरूप मगवान की प्रियतमा राधिकारी हैं। वे इनकी बहुत ही व्याग्री हैं। व्याग्री करनु को निवास के जिये हमेरा सवी देकुट स्थान दिया जाता है। जब कोई इगण

त्यारा हमसे मिलने चाता है, तो हम स्नेहबरा बतायें नित्य चपने साथ ही रखते हैं। चपने दिल का कुत हात बतायें चहते हैं। हदय से बदकर शारिर का चीर कोई स्थान बल्हर गरी।

वहीं प्रेम का स्पत्त है, वहीं से प्रेम-कोत का प्रवाह प्रवह होता है। मतुष्य के सबसे उत्कृष्ट बिचार हृदय से ही वर्ड हैं बात: उपित ही था कि मगवान काफी प्राणों से भी प्यां प्रेयरी राधिका को उसी स्थान में रहते। परंतु वह स्थान दे पहले से ही ब्यान्य के ब्योजकार में था। वस जगह ब्योजि ही बगमगाहट थी। बातः धन्हें यह कार्यवाही करनी पदी कि जितना स्थान राणाजी को सुलपूर्वक निवास के लिये जाहिए था, करना ही क्योक्-पिंड वहाँ में निकाल लिया क्यीर काकारा की ग्रह्म जात करी नहां का वरपुक पात्र समक्त, वह ज्योति-तात क्यी की दिया, निसको क्याज भी वह सूर्यक्त में कपने इत्रय में पारण करता है।

२४५

ज्योतिस्वरूप की ज्योति

नेह का न्यायालय

सर्वर के साराव अस्तावत्य से साब . पुरद्व बारी साथ, मण्योत्मणनी ज्यात करे ।

ब्यान ही की ब्यक्तकन है जीर बात ही पर मुक्तमा शब हिमा गया दे चीर चार हो अब हैं। चतः न्याय हरिएत।

चार रंगारुयमंद हाडिय हैं। देखना, दैनला सोवसनन्हर सुनाना। यामणा नायुक है। आपको अपने ही खिडाह क्रमसा मुनाना है। यह बड़ी हिम्मन बा बाम है।

बेशक, ज्यायापीश सालान् ज्याव की मूर्ति होना वाहिए। तभी न्याय की ब्याशा की जा सकती है। सायल का इसाठ है लिये बार-बार बिस्साना बाजिब है। बाजिस्त बाहतीं

जिस किस की कार्यवादी होती है, जैसा इंसाफ होता है हिसी से जिया नहीं है। आजकल इंसार पाना दुखार

हिंतु मानव स्वभाव है कि बारा। बनी ही रहती है। सायल क्यों भाशा से हाथ घोटे। जो कुछ हो^{गा}, जायगा । व्यगर इंसाक के लिये इस कर्र करियार

भी जो न्याय का गला घोटा जाय, हो फिर कि जैसें हे। दैसे चस सबसे बड़ी ह

नेह का न्यायालय में पहुँचे कि जहाँ का न्यायाधीश सदा न्याय ही किया करता हैं; जिसके सामने भिलारी श्रीर बादशाह दोनों एक हैं। मगर शायद इम ग्रलती करते हैं। कविजी ने तो नेइ के

₹83

न्यायालय में मुक्तदमा दायर किया है, अहाँ पर जा हारता

है, वहीं जीतता है। नेह का स्वायालय ही जा ठहरा।

विनिका विज्ञापन

नम पाती विवि कर लिसी, छन-छन करत वसान।

काहू के रहत न कथ्, सब दिन एक समान।

कोई पतुर नायक किसी मानिनी नायिका से कह रहा है कि तू इतना मान न कर । देख, यह रूप-यौदन हमेशा

नहीं रहता है। अतः मान का परित्याग कर प्रेमपूर्वक सुमने मिल । तू देखती नहीं है कि दुनिया में कोई भी बीब

सदा कायम नहीं रहतो है। चाकाश की चौर देख। यह विधि के हाथ का लिखा हुआ। पत्र है, और चल-चल पर यह पत्र इस बात को बदलाता है कि सब दिन एक समान कमी किसी

के नहीं रहते। बास्तव में बड़ी सुंदर पाती है। विधि की पाती जो टहरी,

सु'दर क्यों न हो । भला इस पाठी को पड़कर कौन मानिनी मान छोड़कर अपने प्रायपित के गले न जा संगेगी।

विधि ने 'एडवर्टांइच' करने का अच्छा तरीका निकास है। यह तो एडवर्टा इजमेंट के आटे में अगुआ अमरीका से भी आगे बढ़ गया। आकाश से बढ़कर इसके लिये अन्य कीन स्थान उपयुक्त हो सकक्षा है ? यहाँ से यह विधि का विज्ञापन

विधि का विद्यापन २४९ बरावर विश्व की खाँखों के सम्मुख बना रहता है। इस विज्ञा-पन की सत्यता में शक कर ही कीन सकता है ? कीन नहीं धानता कि इस परिवर्तनशील संसार में परिवर्तन का पुच्छ प्रत्येक पदार्थ के पीछे सामा हका है । प्रकृति का नियम ही पैसा है। फिर-इसे कीन टाल सकता है ? सूर्य कभी उरय होता है, तो कभी अस्त होता है। पूर्व में उदय होता है, तो परिवम में चल होता है। कभी दिन है, तो कभी रात। कभी चेंधेरी रात है, तो कभी वादनी। कभी बंदरेव के दर्शन होते हैं. तो कमी केवल तारे ही टिमटिमाने हुए नजर बाते हैं। कमी निर्मल मभ नचर चाता है, तो कभी धन की घटाएँ चपनी छटाएँ दिसलाती हैं। कभी इंद्र-धनुष का बानंद है, तो कभी विजली की बहार है। कभी वर्षों है, तो कभी वेगवान बांयु का वर्षहर।

दिस्ताती हैं। कमी इंड्र-पनुष का बानेड हैं, तो कमी विज्ञती की बहार है। कमी बणें हैं, तो कमी वेगवान वांतु का वर्षड ! सारोग, हम किसी भी बच्चु की स्थायी कर में नहीं पाये हैं। बना: हमको किसी भी बच्चु की स्थायी कर में नहीं पाये हैं। बना: हमको किसी भी बच्चे को बजुकूल व्यवसा मिलते ही शीप्र कर हातना चाहिए, बीर मुख्य में पूलना नहीं चाहिए क्या हु:ख में पवराना नहीं चाहिए। नावकों को चाहिए कि नाविकाओं के मान करते ही करें विधि की पारी पहा दिया करें। पहने ही उनका साम मान

भारत हो जायगा ।

प्रेम-प्रताप

बहा हैय राजन वहत, धम महितही शशाह । बरन परत में। धम तक, सब बह उहे मुहात ।

प्रेम में परिवास नहीं प्रतीत होता, बल्कि परिवास गी करना भी पड़े, तो चौर चाच्हा सगता है। विलच्छ ठीक है। इसकी तार्डर वे सोग करेंगे, जो प्रेम की मक्ति करते हैं। जन्म

मूमि के प्रेम के कारण अनुष्य कैसी-कैसी असीकों का तर्ष सामना करने को तैवार होता है। माता अपने वाल-कों के प्रेम में कैसे-कैसे कर सहन करती है। प्रेमों आपने प्रेमिका की आक्षा का पालन कितना प्रेमपूर्वक करता है, किर बादे को कसमें कितनी ही तकशीकों क्यों न करानी वहाँ। वो निज वर्ष हुसरे का काम कैसी प्रसम्बा से करते हैं। प्रेम के प्रशार से सर्या काम कैसी प्रसम्बा से करते हैं। प्रेम के प्रशार से सर्या प्रतीत होती है।

कितु-पह प्रेम को पंच कराल महा, तलवार की धार पै धावनों है।' यह प्रेम ही की शक्ति है कि पर्तम दीपक पर

्रवें सता व्यप्ते प्यारे प्राणों को व्योदावर कर देता है। की मुह्दवत में व्यारिकों को सहाव मुसीवर्जे

. मुकाबसा करते देखा गया है।

प्रेम परमेरपर है। कई तुके देखा गया है कि इस्तमवाजी इस्त इकीक्री में तबदील हो जाता है। किसी ने कहा है— दुतों के इस्त के हम भरक किया करते हैं। यक बदक सी है खुदा से ती समाना दुस्ता। एक शायर के खुदा तो खुद कापने सुँह से प्रस्माते हैं कि— गर सुम्मते मिला बाहे तो कर तिकरा दुनों को ; दुत मेरी ही स्ट्रफ हैं और सुरुक्तान में ही हैं।

मेम-ना भेरता वेश तक मी कत है, वेग मा व वो मा का

पानिता है पेत है, बर मानह बह प्रश्नात भेग को धांक में दी झान बनाम होता है, बनी 1 मंगे

पुत्रक को अपनी हैं, क्यीर देल को श्रीक में भी मृद्धि है, भारी वेमा नुरुष्टे का दी भारत ज्ञाना है। यस दी परनेश्वर है, 🖽 क्षण र को सार्थ मानित । बारूव से शब्द आती ने दी हैं दिन्दी र

वस के मण्ड की समन्द विना है। 'राई अवर उन का, परे सा संदर द्वाप र' विसन उम ध बहर पार पहारी, बरा पूर्ण प्रीवन है, बरा विश्वपत्र विहाल

है, बरा राजार बाजा है । 'बारजवन अर्वेन्'रेषु वः प्रशीत स 4544 I

कराने भरत कर देन देन-एक प्रश्निक का पार पहांचे हैं। मूर्व 42 faut ant prid & mi, a at miles era & fernus भर बटर राज भीर सामान्त्रत के निक्र निस्तास कर्ष

With the Chilles of the wife all 41 % के केरी भी उक्का करता, प्रेम्स बीचर्ड मेर्ड गर्स पत er as enauged wistern at forth (1).

सव इस बात को प्रमाणित करती हैं कि ये सब 'वसुधैव कुटुम्ब-कम्' के सिद्धांत का चानुसरण करते हैं। इनके द्वदय में सबके प्रति प्रेम है। बस, इसी प्रेम को ज्ञान कहते हैं। प्रेम की मिक से चार्यक सच्चे ज्ञान की प्राप्ति होते ही, बंचारी मुक्ति हमारे चरलों में लोटने लगती है। मला जब प्रेम के प्रताप से सच्चें शान की प्राप्ति हो गई, किर क्या है। मुक्ति तो दासी के सदश इमारी चाहानुसार सेवा करने को तैयार रहती है। पाठको ! प्रेम एक महान शक्ति है। इसके सहारे से बासाय में मनुष्य तर से नारायण वन सकता है। धेम की उपासना करते-करते भनुष्य स्वयं परमेश्वर बन जाता है, क्योंकि प्रम ही

प्रेम-परमेरबर

243

वो परमेश्वर है। क्या यह बात आपसे लियी हुई है कि प्रेम के बरीभत होकर भगवान भक्तों को तरंत दर्शन देते हैं ? अब इसका रहरव आप समम लीजिए । पहले कहा जा जुका है कि मेम ही परमेश्वर है। बस, ज्यों ही भगवान के प्रति सकों का मेम पूर्णता को प्राप्त हो जाता है, त्यों ही वडी चनका प्रेम परमेश्वर के रूप में चनको खौलों के सम्मुख उपस्थित हो जाता है। "कृष्णात् परं किमपि तत्त्वमहं न जाने ।" इति श्रमम्

61 सुधा की 'साहित्य-संख्या' (4) (9 प्रकाशित हो गई! 14 (1) उसमें (4) पहर पृष्ठ, हर निरंशे चित्र, स कार्ड्य और सैक्डी दुन्ती (1) (mit) fen tage 60) मुक्य केंद्रल १॥। in (1) der gen, nemin ute men feitete min na fift. in में बार में बर्धा नहीं प्रचातिन दुवा ; रामी प्रशिष्ट, प्रतिदेश बीर in वित्रभामानी केनावी चीर करियां के मुने पूर्व केन प्रशासित किर ny है : माइको का यह पूर्य विशेषांक सूत्रम सिमेता । इनके WHERE STITES 49 श्रीपद्मगिंहजी शर्मा 111 (शतानि हिरी साहित्र गारेवर) 6 मा बन में क्वर लाख भर के प्रवृक्त वन मार्ग मृत्या के बीर का विमानांच निकचने गांच है । मृत्यना वित ही आश्ती मधा का राजगंग्करण wast at us mires gå gint fa gas nifem dett en uga der rindenem alt fentat \$1.46 q der art mit age ar grai f, auf qu fa fiare m eife wie ane er er et eift nie ? ; guer eifes ? A roj to to without need at the roj hace mad of it and few wer wife ; a que or on fine arres d A विकास है। इसका कुल कार्तिक १०) है। fer at de fanne to ater ac gi grat fee abit व्यवग्थायकः "मुचा", लमनः

